Genesis - उत्पत्ति

अध्याय 1.

1. आकाश और पृथ्वी की रचना के द्वारा परमेश्वर ने सृजन कार्य आरंभ किया।

2. जब परमेश्वर ने पृथ्वी का सृजन कार्य आरंभ किया तब वह निराकार और पूर्णतः सुनसान पड़ी थी। गहन जल के ऊपर अंधकार छाया हुआ था और जल के ऊपर परमेश्वर का आत्मा मंडराता रहता था।

3. परमेश्वर ने कहा, "मैं आज्ञा देता हूँ कि प्रकाश प्रकट हो” और प्रकाश उत्पन्न हो गया।

4. परमेश्वर प्रकाश को देखकर आनन्दित हुआ। तदोपरान्त परमेश्वर ने निश्चित समयों में निश्चित स्थानों में प्रकाश को सीमित किया जबकि अन्य स्थानों में अब भी अन्धकार था।

5. परमेश्वर ने प्रकाश को “दिन” कहा। इस प्रकार संध्या एवं प्रातःकाल का समय हुआ, यह प्रथम दिन था।

6. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “मैं आज्ञा देता हूँ कि जल को दो भाग करने के लिए एक विशाल मंडप के सदृश्य अन्तर उत्पन्न हो जाए।"

7. और ऐसा ही हो गया। परमेश्वर ने इस रिक्त स्थान को एक विशाल मंडप के सदृश्य बना दिया जिससे ऊपर का जल नीचे पृथ्वी के जल से विभक्त हो गया।

8. परमेश्वर ने इस विशाल मंडप के सदृश्य रिक्त स्थान को “आकाश” कहा। अतः संध्या हुई और प्रातःकाल हुआ, यह दूसरा दिन था।

9. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “मैं आज्ञा देता हूँ कि जो जल आकाश के नीचे पृथ्वी पर है वह एक स्थान में एकत्र हो जाए और शुष्क भूमि जल से उभर कर प्रकट हो जाए।” और यही हो गया।

10. परमेश्वर ने इस शुष्क भूमि को “धरती” कहा और वह जल जो एक स्थान में एकत्र हो गया था, उसे “सागर” कहा। परमेश्वर को जल एवं धरती से आनन्द प्राप्त हुआ।

11. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “मैं आज्ञा देता हूँ कि धरती नाना प्रकार के पेड़-पौधे उत्पन्न करे जो अपनी-अपनी प्रजाति का जननोत्पादन करें- पौधे बीज उत्पन्न करे और पेड़ फल लाएं जिनमें उनके बीज हों।” और ऐसा ही हो गया।

12. इस प्रकार धरती पर पौधे उगने लगे और पौधों की प्रत्येक प्रजाति अपने बीज उत्पन्न करने लगी और प्रत्येक पेड़ अपना बीज वाला फल उत्पन्न करने लगा। परमेश्वर पेड़ और पौधों को देखकर आनन्दित हुआ।

13. अतः संध्या हुई और प्रातःकाल हुआ, यह तीसरा दिन था।

14. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “मैं आज्ञा देता हूँ कि आकाश में अनेक प्रकाश स्रोत चमकने लगें जो दिन और रात में अन्तर दर्शाएं और अपने रूप परिवर्तन के द्वारा वे विभिन्न उत्सवों तथा विभिन्न वर्षों के समयों के मानवीय कृत्यों का निर्धारण करें।

15. मैं यह भी चाहता हूँ कि आकाश के इन प्रकाश स्रोतों का प्रकाश पृथ्वी तक पहुंचे। और ऐसा ही हो गया।

16. परमेश्वर ने इन प्रकाश स्रोतों में से दो बहुत बड़ा बनाया। सबसे बड़े सूर्य को उसने दिन पर प्रभुता करने के लिए बनाया और उससे छोटे, चाँद को उसने रात पर प्रभुता करने के लिए बनाया। परमेश्वर ने सितारों को भी बनाया।

17. परमेश्वर ने इन सब आकाशीय पिण्डों को यथास्थान आकाश में स्थिर कर दिया कि पृथ्वी पर प्रकाश दें।

18. कि दिन और रात पर प्रभुता करें और दिन के प्रकाश को रात के अंधकार से पृथक करें। परमेश्वर प्रकाश के स्रोतों से आनन्दित हुआ।

19. इस प्रकार संध्या हुई और प्रातःकाल हुआ, यह चैथा दिन था।

20. तदोपरान्त परमेश्वर ने आज्ञा दी, “जल में मेरी सृजित सब वस्तुएं भर जाएं और आकाश में पृथ्वी पर उड़ने वाले पक्षी भर जाएं।”

21. इस प्रकार परमेश्वर ने विराट जलचर तथा अन्य जीव सृजे जो जल में तैरते और झुंड बनाते हैं, उसने प्रत्येक प्रजाति को जननोत्पादन के लिए सृजा। उसने पक्षियों की भी अनेक प्रजातियों को सृजा जिनके पंख थे और वे भी अपनी-अपनी प्रजाति का जननोत्पादन करती थीं। परमेश्वर उनसे आनन्दित हुआ।

22. अतः परमेश्वर ने उन्हें आशिष दी और कहा, “अपनी-अपनी प्रजाति को उत्पन्न करो और असंख्य हो जाओ। मैं चाहता हूँ कि जलचर सब जलाशयों में हों और पक्षी भी असंख्य हों।”

23. अतः संध्या हुई और प्रातःकाल हुआ, यह पांचवां दिन था।

24. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “मैं पृथ्वी को आज्ञा देता हूँ कि विभिन्न जीव-जन्तुओं को उत्पन्न करे कि वे अपनी-अपनी प्रजाति का जननोत्पादन करें कि पृथ्वी पर रहें। उनमें घरेलू पशुओं की प्रजातियां हों और भूमि पर रेंगने वाले जन्तु हों तथा विशालकाय वन पशु भी हों।” और ऐसा ही हो गया।

25. परमेश्वर ने सब प्रकार के वन पशुओं तथा घरेलू पशुओं को सृजा तथा भूमि पर रेंगने वाले सब जन्तुओं का सृजन किया। वे सब अपनी-अपनी प्रजाति का जननोत्पादन कर सकते थे। परमेश्वर उनसे आनन्दित हुआ।

26. तदोपरान्त परमेश्वर ने कहा, “आओ, अब हम अपने सदृश्य मनुष्य को सृजें। मैं चाहता हूँ कि वे समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, सब घरेलु पशुओं तथा धरती पर विचरण करने वाले सब जन्तुओं पर प्रभुता रखें।”

27. अतः परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया जो अनेक प्रकार से उसके सदृश्य थे। उसने उन्हें अपनी समानता में सृजा। उसने उन्हें नर और नारी बनाया।

28. परमेश्वर ने उन्हें यह कहकर आशिष दी, “असंख्य सन्तानोत्पत्ति करो जो संपूर्ण पृथ्वी पर वास करे और उस पर प्रभुता करे। मैं चाहता हूँ कि तुम समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और धरती पर विचरण करने वाले सब जीव-जन्तुओं पर प्रभुता रखो।”

29. परमेश्वर ने उनसे कहा, “देखो! मैंने तुम्हें वे सब पेड़-पौधे दे दिए हैं जो संपूर्ण पृथ्वी पर बीज उपजाने वाले पौधे और फल उत्पन्न करने वाले पेड़ दे दिए हैं, ये सब तुम्हारे खाने के लिए हैं।

30. मैंने सब हरे पौधे वन पशुओं, पक्षियों और पृथ्वी पर विचरण करने वाले सब जीव-जन्तुओं को खाने के लिए दे दिए हैं, अर्थात सब जीवनदायक श्वास रखने वालों के लिए।” और ऐसा ही हो गया।

31. परमेश्वर अपनी सृजित हर वस्तु से आनन्दित हुआ। सच में, वह सब अति मनमोहक था। अतः संध्या हुई और प्रातःकाल हुआ, यह छठवां दिन था।

अध्याय 2.

1. इस प्रकार परमेश्वर ने आकाश-मण्डल और पृथ्वी की तथा जो कुछ उनमें है, सबकी सृष्टि की।

2. सातवें दिन के आरंभ होने तक परमेश्वर ने संपूर्ण सृजन कार्य का समापन किया। अतः सातवें दिन उसने कुछ नहीं किया।

3. परमेश्वर ने घोषणा की कि प्रत्येक सातवां दिन उसके अनुग्रह का दिन होगा। परमेश्वर ने उस दिन को विशेष दिन ठहरा कर पृथक किया, क्योंकि सातवें दिन परमेश्वर ने कोई काम नहीं किया, इसका संपूर्ण सृजन कार्य समाप्त हो चुका था।

4. परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी के सृजन कार्य का वृत्तान्त यह है। परमेश्वर जिसका नाम यहोवा है, उसने आकाश-मण्डल और पृथ्वी को सृजा।

5. आरंभ में तो वनस्पति नहीं उग रही थी क्योंकि परमेश्वर ने पृथ्वी पर वर्षा नहीं कराई थी। इसके अतिरिक्त भूमि पर फसल उगाने के लिए हल चलाने वाला भी कोई भी नहीं था।

6. इसकी अपेक्षा, पृथ्वी पर कोहरा गिरता था जिससे संपूर्ण धरातल पर नमी बनी रहती थी।

7. तब परमेश्वर यहोवा ने कुछ मिट्टी लेकर पुरुष की रचना की। उसने पुरुष के नथनों में अपना श्वास फूंका जिससे जीवन प्राप्त होता है, परिणाम-स्वरूप पुरुष पूर्ण जीवित प्राणी हो गया।

8. परमेश्वर यहोवा ने अदन नामक वाटिका में एक उद्यान बनाया जो कनान देश के पूर्व में था, परमेश्वर ने पुरुष को वहाँ रखा।

9. परमेश्वर यहोवा ने भूमि से हर एक प्रकार के सुन्दर वृक्ष वरन् खाने योग्य फल उत्पन्न करने वाले वृक्ष विककिसत किए। परमेश्वर ने उस उद्यान के मध्य एक ऐसा वृक्ष भी विकसित किया जिसका फल खाने वाले को अविनाशी जीवन प्राप्त होगा। परमेश्वर ने वहाँ एक और वृक्ष भी विकसित किया जिसका फल खाने वाले को इस योग्य बनाएगा कि वह जान पाए कि कौन सा काम अच्छा है और कौन सा काम बुरा है।

10. अदन की वाटिका से एक नदी भी बहती थी जो उद्यान के लिए जल उपलब्ध करवाती थी। अदन की वाटिका से बाहर निकलने के बाद वह नदी चार शाखाओं में विभाजित हो जाती थी।

11. उसकी पहली शाखा का नाम पीशोन था जो हवीला प्रदेश में से होकर बहती थी, वह स्थान जहाँ सोना पाया जाता था।

12. वहाँ का सोना शुद्ध होता था। वहाँ मनमोहक सुगन्ध का गुग्गल नामक गोंद भी निकलता था तथा मूल्यवान सुलैमानी पत्थर भी पाए जाते थे।

13. दूसरी शाखा का नाम गीहोन था। यह जलधारा कूश प्रदेश से होकर बहती थी।

14. तीसरी शाखा का नाम हिद्देकेल था। वह अश्शूर के प्रदेश के पूर्व से होकर बहती थी। चैथी शाखा का नाम फरात है।

15. परमेश्वर यहोवा ने पुरुष को अदन की वाटिका में रखा कि उसमें बागवानी करके उसकी देखभाल करे।

16-17. परन्तु यहोवा ने उससे कहा, “मैं तुझे उस वृक्ष के फल खाने की अनुमति नहीं दूंगा जिससे तुझे कर्मों की अच्छाई या बुराई का ज्ञान प्राप्त हो। यदि तू उस वृक्ष का एक भी फल खाए तो उसी पल तू निश्चय ही मर जाएगा परन्तु मैं तुझे उद्यान के अन्य सब वृक्षों के फल खाने की अनुमति देता हूँ।”

18. परमेश्वर यहोवा ने कहा, “इस पुरुष का अकेला रहना उचित नहीं है। इस कारण मैं उसके लिए एक सुभीते का साथी बनाऊँगा।”

19. परमेश्वर यहोवा ने भूमि की मिट्टी लेकर सब प्रजातियों के पशु-पक्षियों की रचना करके पुरुष को दिए कि सुने कि वह उनके नाम रखता है और पुरुष ने परमेश्वर द्वारा सृजे गए हर एक पशु-पक्षी को नाम दिया।

20. अतः पुरुष ने सब पशुओं, पक्षियों और वन पशुओं को नाम दिए परन्तु उनमें से कोई भी उसके योग्य साथी नहीं था।

21. अतः परमेश्वर यहोवा ने पुरुष को गहन निन्द्रा में डाला। जब पुरुष सो रहा था तब यहोवा ने उसकी एक पसली निकाली और उसके शरीर का वह भाग बन्द करके चंगा कर दिया।

22. तब यहोवा ने पुरुष के शरीर से निकाली हुई उस पसली से एक स्त्री को बनाया और उसे पुरुष के पास लाया।

23. उसे देख पुरुष पुकार उठा, “अन्ततः यह वास्तव में मेरे जैसी ही है। उसकी हड्डियां मेरी हड्डियों में से आई हैं और उसका मांस मेरे मांस से आया है। इसलिए मैं उसे स्त्री कहूंगा, क्योंकि वह मुझमें से, एक पुरुष में से निकाली गई है।”

24. प्रथम स्त्री पुरुष के शरीर से निकाली गई थी इसलिए जब पुरुष और स्त्री विवाह करते हैं तब उन्हें अपने माता-पिता से पृथक होना पड़ेगा। पुरुष अपनी पत्नी से अंतरंग सम्बन्ध बनाएगा जिससे कि वे दोनों ऐसे होंगे कि मानों एक ही व्यक्तित्व हैं।

25. यद्यपि पुरुष और स्त्री निर्वस्त्र थे। वे अपनी नग्न अवस्था से लजाते नहीं थे।

अध्याय 3.

1. अब सर्प परमेश्वर द्वारा सृजित अन्य सब वन पशुओं से अधिक धूर्त था। उसने स्त्री से कहा, “क्या परमेश्वर ने तुम्हें वास्तव में कहा है, “उद्यान के किसी भी वृक्ष का फल नहीं खाना?”

2. स्त्री ने उसे उत्तर दिया, “परमेश्वर ने जो कहा वह यह है, “उद्यान के मध्य जो वृक्ष है उसका फल नहीं खाना वरन् उसको छूना भी नहीं। यदि तुमने ऐसा किया तो मर जाओगे।

3. परन्तु तुम अन्य किसी भी वृक्ष का फल खा सकते हो।” सर्प ने स्त्री से कहा, “नहीं, तुम निश्चय ही नहीं मरोगे।

4.

5. परमेश्वर ने ऐसा केवल इसलिए कहा कि वह जानता है कि जब तुम उस वृक्ष का फल खाओगे तब तुम्हें नई-नई बातों का ज्ञान प्राप्त होगा। वह ऐसा होगा कि जैसे तुम्हारी आँखें खुल गईं और तुम जान लोगे कि भला करना क्या है और बुरा करना क्या है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर जानता है।”

6. स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए तो अच्छा है और देखने में भी अति मन भावन है। उसने उस फल की लालसा की क्योंकि उसने सोचा कि वह उसे बुद्धिमान बना देगा। अतः उसने कुछ फल तोड़ कर खाए और अपने पति को भी दिए, उसने भी वे खाए।

7. तुरन्त ही ऐसा हुआ कि जैसे उनकी आंखें खुल गईं और उन्हें अपनी नग्न अवस्था का बोध हुआ जिसके कारण उन्हें लज्जा आई। अतः उन्होंने अंजीर के पत्ते तोड़ कर उन्हें जोड़ा कि अपने लिए वस्त्र बनाए।

8. उस दिन दोपहर के उत्तर काल में जब ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी तब उन्होंने उद्यान में परमेश्वर यहोवा के पद चाप को सुना। अतः पुरूष और उसकी पत्नी उद्यान की झाड़ियों में छिप गए जिससे कि परमेश्वर यहोवा उन्हें देख न पाए।

9. परन्तु यहोवा परमेश्वर ने पुरूष को यह कह कर पुकारा, “तू मुझसे छिपने का प्रयास क्यों कर रहा है?”

10. पुरूष ने उत्तर दिया, “मैंने वाटिका में तेरे पद चाप सुने तो मैं नंगा होने के कारण डर कर तुझसे छिप गया।”

11. परमेश्वर ने उससे कहा, “तुझे कैसे पता चला कि तू नंगा है? निश्चय ही इसका कारण है कि तूने उस वृक्ष का फल खा लिया है जिसके विषय मैंने आज्ञा दी थी, ‘इसका फल मत खाना।’ क्या तूने यही किया है?”

12. पुरूष ने उत्तर दिया, “तूने यह स्त्री मेरे साथ रहने के लिए दी है। इसने मुझे उस वृक्ष का फल दिया और मैंने खा लिया।”

13. तब परमेश्वर यहोवा ने स्त्री से कहा, “तूने ऐसा काम क्यों किया?” स्त्री ने उत्तर दिया, “मैंने इस सर्प के धोखे में आ क रवह फल खाया था।”

14. तब परमेश्वर यहोवा ने सर्प से कहा, “क्योंकि तूने यह काम किया है, सब घरेलू पशुओं और वन पशुओं में मैं केवल तुझे श्राप देता हूं। परिणाम-स्वरूप तू और सब सर्प अब भूमि पर पेट के बल रेंग कर चलेंगे जिससे कि तुम आजीवन जो कुछ खाओगे, उस पर मिट्टी लगी होगी।

15. मैं तुझे और स्त्री को परस्पर बैरी बनाऊंगा और तेरे वंश और स्त्री के वंश को परस्पर बैरी बनाऊंगा। तू उसकी एड़ी को डसेगा और वह तेरा सिर कुचल देगा।

16. तदोपरान्त यहोवा ने स्त्री से कहा, “जब तू संतान को जन्म देगा तब मैं तेरे लिए असहनीय पीड़ा उत्पन्न करूंगा। तू अपने पति के साथ ही रहना चाहेगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”

17. इसके बाद यहोवा ने पुरूष से कहा, “तूने अपनी पत्नी की बात सुन कर उस वृक्ष का फल खाया जिसके विषय मैंने कहा था, ‘इसे मत खाना।’ अतः मैं तेरे इस कर्म के कारण पृथ्वी पर उपज को कष्टप्रद बना दूंगा। तू भूमि की उपज प्राप्त करने के लिए आजीवन परिश्रम करता रहेगा।

18. कंटीली झाड़ियां और कांटे के वृक्ष तथा खरपतवार तेरे उगाए हुए भोजन को बाधित करेंगे। और भोजन के लिए तू धरती पर जो कुछ उगाता है, वही खाएगा।

19. तू आजीवन भोजन वस्तुएं उगाने के लिए पसीना बहाएगा। तदोपरान्त तू मर जाएगा और तेरा पार्थिव शरीर भूमि में गाड़ा जाएगा। मैंने तुझे मिट्टी से सृजा है इस कारण तेरा शरीर फिर से मिट्टी हो जाएगा।

20. पुरूष जिसका नाम आदम था, उसने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा जिसका अर्थ है, “जीवन” क्योंकि वह सब मनुष्यों की पूर्वजा हुई।

21. तब परमेश्वर यहोवा ने पशुओं का वध करके उनकी चमड़ी से आदम और उसकी पत्नी के लिए वस्त्र तैयार किए।

22. तब परमेश्वर यहोवा ने कहा, “देखो, ये दोनों अब हमारे जैसे हो गए हैं क्योंकि उन्हें निष्ठ और अनिष्ठ का ज्ञान प्राप्त हो गया है, इसलिए अब यदि वे हाथ बढ़ा का उस वृक्ष का फल तोड़ कर खा लें जिसे खाकर मनुष्य अमर हो जाता है तो घोर अनर्थ हो जाएगा।”

23. अतः परमेश्वर यहोवा ने पुरूष और उसकी पत्नी को अदन के उद्यान में से निकाल दिया। परमेश्वर यहोवा ने आदम को भूमि से सृजा था, इसलिए उसने पुरूष को भूमि पर परिश्रम करने के लिए विवश किया।

24. जब परमेश्वर उन्हें बाहर निकाल चुका तब उसने उद्यान के पूर्वी और करूबों और घूमती हुई अग्निरंजित तलवार स्थापित कर दिए कि अमरत्व प्रदान करने वाले वृक्ष तक कोई न पहुंच पाए।

अध्याय 4

1. आदम अपनी पत्नी के साथ सोया और वह गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उसने कैन रखा। कैन का अर्थ है, “उत्पन्न करना” क्योंकि उसने कहा, “यहोवा की सहायता से मैंने एक पुत्र उत्पन्न किया है।”

2. कुछ समय बाद हव्वा ने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम हाबिल रखा। ये दोनों बालक व्यस्क हुए और हाबिल भेड़-बकरियां पालने वाला हुआ और कैन किसान हुआ।

3. फिर एक दिन ऐसा हुआ कि कैन ने अपनी उगाई हुई फसल काटी और उसमें से यहोवा के लिए भेंट चढ़ाई।

4. हाबिल ने भी अपनी भेड़-बकरियों में से पहलौठे मेम्ने लेकर वध किए और यहोवा के लिए उनके सर्वोत्तम भाग की चर्बी चढ़ाई। यहोवा हाबिल की भेंट से प्रसन्न हुआ।

5. परन्तु कैन की भेंट से यहोवा प्रसन्न नहीं हुआ। इस कारण कैन क्रोध से भर गया और उसकी भाव भंगिमा से मनोमालिन्य प्रकट हो रहा था।

6. यहोवा ने कैन से कहा, “तुझे क्रोधित नहीं होना है। तुझे इस प्रकार त्यौरी नहीं चढ़ाना चाहिए।

7. यदि तू वह करे जो उचित है तो क्या मैं तुझे ग्रहण नहीं करूंगा। परन्तु यदि तू वह न करे जो उचित है तो जो अनिष्ठ तू करना चाहता है, तुझे वही अनिष्ठ निगल जाएगा। जैसे एक सिंह जो तुझ पर झपटने के लिए तेरे द्वार के बाहर खड़ा हो। पाप करने की तेरी लालसा तुझ पर प्रबल होना चाहती है परन्तु तुझे उस पर प्रबल होना है।”

8. एक दिन कैन ने अपने छोटे भाई हाबिल से कहा, “मेरे साथ खेत में चल।” अतः वे दोनों एक साथ गए। और जब वे निर्जन स्थान में थे तब कैन ने अकस्मात् ही अपने भाई हाबिल पर वार करके उसकी हत्या कर दी।

9. यद्यपि परमेश्वर जानता था कि कैन ने क्या किया, उसने कैन से पूछा, “क्या तू जानता है कि तेरा छोटा भाई हाबिल कहां है?” कैन ने कहा, “नहीं, मैं नहीं जानता। क्या मेरा काम उसकी चैकसी करना है?”

10. यहोवा ने कहा, “तू ने जो काम किया है वह अति भयानक है। भूमि में समा गया तेरे भाई का रक्त तुझे पाप का दोषी ठहराता है।

11. तूने अपने छोटे भाई की हत्या कर दी है, और अब क्योंकि धरती ने तेरे भाई का रक्त पी लिया है, तेरा उस पर स्वागत नहीं है, उस भूमि पर तेरे द्वारा फसल उगाना सफल नहीं होगा।

12. जब तू फसल उगाने के लिए भूमि खोदेगा तब भूमि तेरे लिए लेशमात्र ही उत्पन्न करेगी। तू लगातार धरती पर भटकता रहेगा और तुझे स्थाई निवास नहीं मिलेगा।”

13. कैन ने परमेश्वर से कहा, “तू मुझे मेरी सहनशक्ति से अधिक दण्ड दे रहा है।

14. तू मुझे उस भूमि से निकालने पर है जिसे मैं जोत रहा हूं और अब मैं तेरी उपस्थिति में आने योग्य भी नहीं रहूंगा। इसके अतिरिक्त मैं एक स्थाई निवास पाए बिना पृथ्वी पर सदैव ही भटकता रहूंगा और जो भी मुझे देखेगा, मेरी हत्या करना चाहेगा।”

15. परन्तु यहोवा ने उससे कहा, “नहीं, ऐसा नहीं होगा। मैं तेरे ऊपर एक चिन्ह अंकित कर दूंगा जो तुझे देखने वाले हर एक जन को चेतावनी देगा कि यदि उसने तेरी हत्या की तो मैं उसे कठोर दण्ड दूंगा।” तब यहोवा ने कैन पर एक चिन्ह अंकित कर दिया।

16. अतः कैन यहोवा के पास से निकल कर नोद नामक स्थान में जाकर रहने लगा। नोद का अर्थ है “भटकने वाला”, यह स्थान अदन के पूर्व में था।

17. कुछ समय पश्चात् कैन अपनी पत्नी के संग सोया और वह गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उस पुत्र का नाम उसने हनोक रखा। तब कैन ने एक नगर का निर्माण किया और अपने पुत्र के नाम पर उस नगर का नाम ‘हनोक’ रखा।

18. हनोक व्यस्क हुआ और विवाह कर एक पुत्र का पिता हुआ। उसने अपने पुत्र का नाम ईराद रखा। ईराद ने व्यस्क होने पर विवाह किया और यहूयाएल का पिता हुआ। यहूयाएल व्यस्क होकर लेमेक का पिता हुआ।

19. व्यस्क हो जाने पर लेमेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया। एक का नाम आदा था और दूसरी का नाम सिल्ला था। आदा ने याबाल को जन्म दिया। आगे चल कर याबाल पहला व्यक्ति हुआ जो तम्बुओं में रहता था क्योंकि वह अपने पशु धन का रखवाला था।

20.

21. उसके छोटे भाई का नाम यूबाल था। वह पहला व्यक्ति था जिसने वीणा और बांसुरी का आविष्कार किया था।

22. लेमेक की दूसरी पत्नी सिल्ला ने भी एक पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम उसने तूबल-कैन रखा। उसने आगे चल कर पीतल और लोहे का सामान बनाना सीखा। तूबल-कैन की छोटी बहन का नाम नामा था।

23. एक दिन लेमेक ने अपनी दोनों पत्नियों से कहा, “आदा और सिल्ला, मेरी बात ध्यान से सुनो। एक युवक ने मुझे पर वार करके मुझे चोट पहुंचाई तो मैंने उसकी हत्या कर दी।

24. यहोवा ने बहुत पहले कहा था कि कैन की हत्या करने वाले कैन से भी अधिक सात गुणा कठोर दण्ड देकर बदला लेगा। अतः जो कोई मेरी हत्या करने का प्रयास करेगा तो उसे सात का सत्तर गुणा दण्ड दिया जाए।”

25. आदम अपनी पत्नी के साथ सोता रहा और वह फिर गर्भवती हुई और एक और पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उसने शेत रखा। उसने कहा, “मैंने इस पुत्र का नाम शेत रखा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे हाबिल के स्थान में एक और पुत्र दे दिया है क्योंकि हाबिल की तो कैन ने हत्या कर दी थी।”

26. व्यस्क हो जाने पर शेत एक पुत्र का पिता हुआ जिसका नाम उसने एनोश रखा। उस समय लोगों ने यहोवा की उपासना करनी आरंभ कर दी थी।

अध्याय 5

1. यह आदम के वंशजों की सूची है। जब परमेश्वर ने मनुष्यों को सृजा था तब उन्हें उसने अनेक रूपों में अपने सदृश्य रचा था।

2. परमेश्वर ने एक पुरूष और एक स्त्री को सृजा था। उसने उन्हें आशिष दी और जिस दिन उसने उन्हें सृजा था, उस दिन उसने उन्हें ‘मनुष्य’ कहा।

3. आदम जब एक सौ सैंतीस वर्ष का हो गया तब वह अपने ही स्वरूप एक पुत्र का पिता हुआ। उस पुत्र का नाम उसने शेत रखा।

4. शेत के जन्म के बाद आदम एक सौ आठ वर्ष और जीवित रहा और उसके अनेक पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुए।

5. आदम कुल नौ सौ तीस वर्ष जीवित रहा। फिर उसकी मृत्यु हो गई।

6. जब शेत 105 वर्ष का था तब एनोश का जन्म हुआ।

7. एनोश के जन्म के बाद शेत 807 वर्ष और जीवित रहा। उसके और भी पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुए।

8. शेत कुल 912 वर्ष जीवित रहा फिर उसकी मृत्यु हो गई।

9. जब एनोश नब्बे वर्ष का था तब केनान का जन्म हुआ।

10. केनान के जन्म के बाद एनोश 815 वर्ष और जीवित रहा और उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

11. एनोश कुल 905 वर्ष जीवित रहा और फिर उसकी मृत्यु हो गई।

12. जब केनान सत्तर वर्ष का था तब महललेल का जन्म हुआ।

13. महललेल के जन्म के बाद केनान 840 वर्ष और जीवित रहा तथा उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

14. केनान कुल 910 वर्ष जीवित रहा। फिर उसकी मृत्यु हो गई।

15. जब महललेल पेंसठ वर्ष का था तब येरेद का जन्म हुआ।

16. येरेद के जन्म के बाद महललेल 830 वर्ष और जीवित रहा। तथा उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

17. महललेल कुल 895 वर्ष जीवित रहा। फिर उसकी मृत्यु हो गई।

18. जब यारेद 162 वर्ष का था तब हनोक का जन्म हुआ।

19. हनोक के जन्म के बाद यारेद आठ सौ वर्ष और जीवित रहा तथा उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

20. यारेद कुल 962 वर्ष जीवित रहा। फिर उसकी मृत्यु हो गई।

21. जब हनोक पैंसठ वर्ष का था तब मतूशेलह का जन्म हुआ।

22. हनोक मतूशेलह के जन्म के बाद तीन सो वर्ष तक परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में रहा और उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

23. हनोक 365 वर्ष जीवित रहा। वह परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में था और एक दिन वह विलोप हो गया क्योंकि परमेश्वर उसे अपने साथ रहने के लिए ले गया।

24. जब मतूशेलह 187 वर्ष का था तब लेमेक का जन्म हुआ।

25. लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह 782 वर्ष और जीवित रहा।

26. मतूशेलह के अनेक पुत्र पुत्रियां भी उत्पन्न हुए।

27. मतूशेलह कुल 969 वर्ष जीवित रहा फिर उसकी मृत्यु हो गई।

28. जब लेमेक 182 वर्ष का था तब उसका एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उसने नूह रखा क्योंकि उसने कहा, “यह हमें परमेश्वर से श्रापित भूमि पर भोजन उगाने के कठिन परिश्रम से विश्राम दिलाएगा।”

29.

30. नूह के जन्म के बाद लेमेक 595 वर्ष और जीवित रहा तथा उसके अनेक पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

31. लेमेक कुल 777 वर्ष जीवित रहा फिर उसकी मृत्यु हो गई।

32. जब नूह पांच सौ वर्ष का था तब उसके पुत्र शेम, हाम और येपेत का जन्म हुआ।

अध्याय 6

1. जब मनुष्य पृथ्वी पर संख्या में बहुत अधिक होने लगे और उनकी अनेक पुत्रियां उत्पन्न हुईं,

2. कुछ अलौकिक प्राणियों ने देखा कि मनुष्यों की स्त्रियां अति सुन्दर हैं तो उन्होंने उन्हें पत्नी बना लिया।

3. तब यहोवा ने कहा, “मेरा श्वास मनुष्यों को जीवित रखने के लिए सदाकाल उनमें नहीं रहेगा क्योंकि मनुष्य का शरीर दुर्बल है। अब उनकी आयु एक सौ बीस वर्ष से अधिक नहीं होगी।”

4. जब ये अलौकिक प्राणी मानवीय स्त्रियों के साथ सोए तो उनसे जो संतान उत्पन्न हुई वह दानव थी जिनका उस समय वरन् बाद में भी पृथ्वी पर निवास था। ये दानव शूरवीर योद्धा थे जो प्राचीन काल से प्रसिद्ध रहे थे।

5. यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य अत्यधिक दुष्ट हो गया है और उनके आंतरिक मनुष्य के विचार लगातार अनिष्ठ ही होता है।

6. यहोवा बहुत दुखी हुआ क्योंकि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को सृजा और वह अति खेदित हुआ।

7. अतः यहोवा ने कहा, “मैं अपने सृजिन मनुष्य को पूर्णतः नष्ट कर दूंगा। मैं पृथ्वी पर विचरण करने वाले पशुओं और जीव-जन्तुओं तथा आकाश के पक्षियों को भी नष्ट कर दूंगा। पृथ्वी पर कुछ नहीं रहेगा क्योंकि मैं उनकी रचना करके पछताता हूं।”

8. परन्तु यहोवा नूह से प्रसन्न था।

9. और यह हुआः नूह एक ऐसा मनुष्य था जिसका आचरण सदैव धर्मपरायण था। उस समय के लोग किसी भी बात में नूह की आलोचना नहीं कर सकते थे। नूह परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में रहता था।

10. नूह के तीन पुत्र थेः शेम, हाम और येपेत।

11. परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी पर हर एक जन दुष्ट हो गया था और पृथ्वी पर हर जगह मनुष्य निर्दयी था और उपद्रवी हो गया था।

12. परमेश्वर ने सब को देखा कि मनुष्य कैसा दुराचारी है क्योंकि पृथ्वी पर सब मनुष्य दुराचारी हो गए हैं।

13. अतः परमेश्वर ने नूह से कहा, “मैंने सब मनुष्यों को नष्ट करने की ठान ली है क्योंकि संपूर्ण पृथ्वी पर मनुष्य एक देसरे के साथ दुव्र्यवहार कर रहा है। अतः मैं उन्हें और उनके साथ सब कुछ नष्ट करने जा रहा हूं।

14. तू सरू की लकड़ी की एक बड़ी नाव बना। उसके भीतर अलग-अलग कक्ष बनाना। उसके भीतर और बाहर राल लगाकर उस ेजल अवरोधक बनाना।

15. उसका निर्माण इस प्रकार करनाः उसकी लम्बाई 138 मीटर, चैड़ाई 23 मीटर और ऊंचाई 14 मीटर हो।

16. उस नाव की छत भी बनाना। उसमें छत और दीवारों के बीच हवा और प्रकाश आने के लिए लगभग आधा मीटर स्थान छोड़ना। वह तीन तल की हो और उसके एक ओर द्वार हो।

17. सावधानीपूर्वक सुन! मैं जल प्रलय लाने वाला हूं जिससे आकाश के नीचे हर एक जीवित प्राणी नष्ट हो जाएगा, पृथ्वी पर सब कुछ मर जाएगा।

18. परन्तु मैं तेरे साथ वाचा बांधता हूं। तू, तेरी पत्नी, तेरे पुत्र और उनकी पत्नियां उस नाव में प्रवेश करेंगे।

19. तू सब जीवित प्राणियों का एक-एक जोड़ज्ञ- नर और मादा उस नाव में ले आना जिससे कि वे जीवित रहें।

20. प्रत्येक जीति के जीव जन्तुओं का एक एक जोड़ा तेरे पास आएगा कि जीवित रहे। हर एक पक्षी का एक जोड़ा, हर एक पशु का एक जोड़ा और पृथ्वी पर विचरण करने वाले जीव-जन्तुओं का एक एक जोड़ा।

21. तू अपने लिए और इन जीवों के लिए हर एक प्रकार की भोजन वस्तु भी ले लेना। और नाव में एकत्र करना।”

22. अतः नूह ने वह सब किया जो यहोवा ने उससे कहा था।

अध्याय 7

1. तब यहोवा ने नूह से कहा, “मैंने देखा है कि उन सब मनुष्यों में जो इस समय जीवित हैं, एकमात्र तू ही सदैव व्यवहार में सदाचारी है। अतः मैं चाहता हूं कि तू और तेरा परिवार उस नाव में प्रवेश करें।

2. अपने साथ प्रत्येक प्रजाति के पशुओं के सात-सात जोड़े ले लेना जिन्हें मैंने बलि के लिए स्वीकार किया है। सात नर और सात मादा लेना। जिससे कि उनकी जाति पृथ्वी पर सुरक्षित रहे।

3.

4. ऐसा की करना क्योंकि आज से सात दिन बाद मैं पृथ्वी पर वर्षा कराऊंगा। लगातार चालीस दिन और चालीस रात पृथ्वी पर वर्षा होगी। इस प्रकार मैं पृथ्वी पर से अपनी सब सृजित वस्तुओं को नष्ट कर दूंगा।

5. नूह ने वही सब किया जो यहोवा ने उससे कहा था।

6. पृथ्वी पर जल प्रलय आने के समय नूह छः सौ वर्ष का था।

7. वर्षा आरंभ होने से पूर्व नूह और उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र और उनकी पत्नियां सब जल प्रलय से बचने के लिए नाव में प्रवेश कर गए।

8. परमेश्वर द्वारा स्वीकार्य बलि के पशुओं के जोड़े और बलि के लिए अस्वीकार्य पशुओं के जोड़े, पक्षियों के जोड़े और पृथ्वी पर विचरण करने वाले सब जन्तुओं के जोड़े,

9. नर और मादा सब नूह के पास आए और नाव में गए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने नूह से कहा था

10. जब सात दिन पूरे हो गए, तब वर्षा आरंभ हो गई और पृथ्वी पर जल प्रलय उठने लगा।

11. जब नूह छः सौ वर्ष का था, दूसरे माह के सातवें दिन पृथ्वी की सतह के नीचे का जल भी फूट निकला और ऐसी घोर वर्षा हुई कि जैसे आकाश में बांध टूट गया हो।

12. पृथ्वी पर लगातार चालीस दिन और चालीस रात वर्षा होती रही।

13. जिस दिन वर्षा आरंभ हुई उस दिन नूह अपनी पत्नी और अपने तीनों पुत्रों शेम, हाम और येपेत तथा उनकी पत्नियों के साथ उस नाव में चला गया।

14. वे और प्रत्येक प्रजाति के वन पशुओं में से कुछ और घरेलू पशुओं में से कुछ तथा पृथ्वी पर विचरण करने वाले सब जन्तुओं, पक्षियों की प्रत्येक प्रजाति तथा पंखों वाले प्राणी आदि सब नाव में गए।

15. सांस लेने वाले जन्तुओं के जोड़े नूह के पास आए और नाव में प्रवेश किया।

16. नूह के पास जो प्राणी आए उनका एक एक जोड़ा नर और मादा परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार था। जब वे सब नाव में प्रवेश कर गए तो यहोवा ने उसका द्वार बन्द कर दिया।

17. चालीस दिन तक पानी का स्तर उठता रहा और जल प्रलय बढ़ता गया तथा नाव को धरती पर से उठा दिया।

18. पानी पृथ्वी पर ऊंचा उठता गया और वह नाव पानी पर तैरने लगी।

19. पानी पृथ्वी पर ऊंचा उठता रहा जब तक कि पहाड़ और आकाश के नीचे सब कुछ उसमें न डूब गए।

20. यहां तक कि सबसे ऊंचे पर्वत भी छः मीटर पानी के नीचे डूब गए।

21. परिणामस्वरूप, पृथ्वी के सब प्राणी मर गए अर्थात सब पक्षी, घरेलू पशु, वन पशु तथा अन्य सब जीव जन्तु और सब मनुष्य।

22. श्वास लेने वाले सब प्राणी अर्थात भूमि के सब प्राणी मर गए।

23. इस प्रकार पृथ्वी पर से सब जीवित प्राणी नष्ट हो गए- मनुष्य, बड़े पशु, रेंगने वाले जन्तु तथा पक्षी। जो जीवित बचे उनमें उसके साथ थे।

24. पानी वृहत् जल प्रलय में 150 दिनों तक पृथ्वी पर रहा।

अध्याय 8

1. परन्तु परमेश्वर नूह को या सब वन पशुओं तथा घरेलू पशुओं को उसके साथ नाव में थे, भूला नहीं था। अतः परमेश्वर ने पृथ्वी पर हवा चलाई और हवा ने पानी को घटाना आरंभ किया।

2. परमेश्वर ने धरती में से निकलने वाले पानी को भी निकलने से रोका और आकाश के झरोखों को बन्द किया कि वर्षा रूके।

3. शनैः शनैः धरातल पर से पानी घटने लगा। जल प्रलय के आरंभ से एक सौ पचास दिन पश्चात अधिकांश पानी उतर गया था।

4. सातवें माह के सत्रहवें दिन वह नाव अरारात क्षेत्र के एक पहाड़ पर टिक गया।

5. उस वर्ष के दसवें माह के पहले दिन तक पानी घटता रहा और अन्य पर्वतों की चोटियां दिखाई देने लगीं।

6. चालीस दिन पश्चात नूह ने नाव की दीवार में बनाई गई खिड़की खोली और एक कौआ उड़ाया।

7. कौआ नाव के पास से इधर उधर उड़ता रहा जब तक कि धरातल पर से पानी सूख न गया।

8. तदोपरान्त नूह ने एक कबूतर को उड़ाया कि ज्ञात करे कि धरातल से सारा जल उतर गया या नहीं।

9. परन्तु उस कबूतर को बैठने के लिए स्थान नहीं मिला, अतः वह लौट कर नूह के पास नाव में आ गया क्योंकि धरातल अभी भी जलमग्न था। अतः नूह ने हाथ बढ़ा कर उस कबूतर को नाव में ले लिया।

10. नूह ने सात दिन और प्रतीक्षा की, तदोपरान्त उसने नाव में से कबूतर को फिर उड़ाया।

11. इस बा रवह कबूतर संध्या को लौट कर आया और आश्चर्य की बात है कि उसकी चोंच में जैतून का एक बड़ा ताजा तोड़ा हुआ पत्ता था। इससे नूह को ज्ञात हो गया कि पानी धरातल से उतर चुका है।

12. नूह ने सात दिन और प्रतीक्षा की। उसने कबूतर को फिर से उड़ाया, इस बा रवह लौट कर उसके पास नहीं आया।

13. इस समय नूह की आयु 106 वर्ष की थी। उस वर्ष के पहले माह के पहले दिन, पानी धरातल से पूर्णतः हट चुका था। नूह ने नाव की छत को हटा दिया और धरातल को सूखा देख कर आश्चर्य किया।

14. अगले माह के सत्ताईसवें दिन भूमि पूर्णतः सूख चुकी थी।

15. परमेश्वर ने नूह से कहा,

16. “अपनी पत्नी, अपनी पुत्रों तथा उनकी पत्नियों को साथ नाव से बाहर आ जा।

17. अपने साथ सब पक्षियों, घरेलू पशुओं तथा पृथ्वी पर विचरण करने वाले सब जीव जन्तुओं को अपने साथ बाहर ले आ कि वे पृथ्वी पर फैल जाएं और असंख्य हो जाएं।”

18. अतः नूह अपनी पत्नी, अपने पुत्रों तथा उनकी पत्नियों के साथ नाव से बाहर आ गया।

19. तदोपरान्त सब प्राणी जिनमें पृथ्वी पर विचरण करने वाले सब जीव जन्तु, सब पक्षी तथा सब स्थल चर नाव से बाहर आ गए। वे सब अपनी-अपनी प्रजाति के अनुसार नाव से निकले।

20. तब नूह ने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई। उसने बलि के लिए ग्रहण योग्य पशुओं और पक्षियों का वध किया और उन्हें समूख वेदी पर जला दिया।

21. यहोवा ने जब उस मनमोहक सुगंध को सूंघा तब वह उस भेंट से प्रसन्न हुआ। तब परमेश्वर ने कहा, “मैं मनुष्य के पापी कर्मों के कारण अब कभी सर्वनाश नहीं करूंगा। यद्यपि मनुष्य अपनी युवावस्था से ही मन में जो कुछ सोचता है वह बुरा ही है, मैं सब प्राणियों को नष्ट नहीं करूंगा जैसा इस बार किया हे।

22. जब तक पृथ्वी है तब तक बीज बोने की ऋतु और फसल काटने की ऋतु, शीतकाल और ग्रीष्म काल, ठंड का समय और गर्मी का समय दिन और रात सदा बने रहेंगे।”

अध्याय 9

1. तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीर्वाद दिया। उसने उनसे कहा, “मैं चाहता हूं कि तुम्हारी संतान असंख्या हों जो संपूर्ण पृथ्वी पर वास करें।

2. पृथ्वी के सब दीर्घांग पशु, सब पक्षी, धरातल पर विचरण करने वाले जीव और सब मछलियां तुमसे बहुत भयभीत होंगे। मैं उन्हें तुम्हारे अधिकाराधीन करता हूं।

3. आज से पूर्व मैं ने तुम्हें भोजन हेतु वन स्र्वात दी थी, परन्तु अब तुम सब जीवित एवं चलायमान प्राणियों को खा सकते हो।

4. परन्तु तुम मांस के साथ रक्त नहीं खाना क्योंकि उसका जीवन रक्त में होता है।

5. मैं मनुष्य की हत्या करने वाले हर एक प्राणी को दण्ड दूंगा- अर्थात वे यहोवा को लेखा देंगे। चाहे वह पशु हो या मनुष्य। मैं अनिवार्य करता हूं कि हत्यारे अपने अपराध का दण्ड भोगें। और अपने जीवन से भुगतान करें। यद्यपि कोई पशु मनुष्य की हत्या करे, उस पशु का भी जीवन नष्ट किया जाए। क्योंकि उसने मनुष्य की हत्या की है।

6. क्योंकि मैंने मनुष्यों को अपनी समानता में रख है। अतः मैं बल पूर्वक कहता हूं कि यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की हत्या करे तो दूसरा मनुष्य उसकी हत्या करे। जो रक्त बहाए उसका भी रक्त बहाया जाए।

7. जहां तक तुम्हारी बात है, मैं चाहता हूं कि तुम अनेक संतान उत्पन्न करो कि वे और उनकी सन्तति संपूर्ण पृथ्वी पर वास करें।”

8. परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से यह भी कहा,

9. “ध्यान से सुनो, ‘ मैं अब तुम्हारे और तुम्हारी सन्तति के साथ वाचा बांधता हूं,

10. और वन पशुओं के साथ भी- तुम्हारे साथ नाव से निकल कर आने वाले प्रत्येक प्राणी के साथ।

11. मैं तुम्हारे साथ जो वाचा बांधता हूं वह यह हैः मैं जल प्रलय द्वारा सब प्राणियों को अब कभी नष्ट नहीं करूंगा, या पृथ्वी पर अन्य किसी का भी नाश करने के लिए जल प्रलय नहीं लाऊंगा।”

12. तब परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं तुम्हारे साथ और सब प्राणियों के साथ जो वाचा बांधता हूं उसका पालन करूंगा, एक सदाकालीन वाचा जिसका चिन्ह यह हैः

13. मैं समय-समय पर आकाश में इन्द्रधनुष प्रकट करूंगा। तुम्हारे साथ और पृथ्वी की हर एक वस्तु के साथ मेरी वाचा का यह एक चिन्ह होगा।

14. जब मैं बादलों से वर्षा कराऊंगा, और आकाश में इन्द्रधनुष प्रकट होगा,

15. वह मुझे तुम्हारे साथ और सब प्राणियों के साथ बांधी हुई वाचा और मेरी प्रतिज्ञा स्मरण कराएगा कि सब प्राणियों के सर्वनाश का जल प्रलय कभी नहीं होगा।

16. आकाश में जब भी इन्द्र धनुष दिखाई देगा तो मैं उसे देख कर अपनी उस वाचा को स्मरण करूंगा जो मैंने पृथ्वी पर सब प्राणियों के साथ बांधी है। एक प्रतिज्ञा जिसे मैं सदा पूरी करूंगा।”

17. तब परमेश्वर ने नूह से कहा, “इन्द्र धनुष मेरी उस वाचा का चिन्ह होगा जो मैंने सब पृथ्वी पर सब प्राणियों के साथ बांधी है।”

18. नूह के पुत्र जो नाव से निकल कर आए वे थे, शेम, हाम, येपेत। हाम आगे चल कर कनान का पिता हुआ।

19. पृथ्वी के सब मनुष्य नूह के इन तीनों पुत्रों की सन्तति हैं।

20. नूह ने धरती पर खेती करना आरंभ कर दी। उसने दाख की बारी लगाई।

21. उसने दाख से मदिरा बनाई। एक दिन उसने अधिक मदिरा पी ली तो उसे नशा हो गया और वह अपने तम्बू में वस्त्रहीन पड़ा था।

22. कनान के पिता हाम ने अपने पिता को उसके तम्बू में वस्त्रहीन देखा तो जाकर अपने भाइयों से इसका उल्लेख किया। तब शेम और येपेत ने एक बड़ी चादर लेकर अपने कंधों पर रख कर तम्बू में पीछे की ओर चले और अपने पिता की निर्वस्त्र देह को ढांक दिया। उनके चेहरे पिता की विपरीत दिशा में थे। अतः वे अपने पिता को नग्नावस्था में नहीं देख पाए।

23.

24. जब नूह जागा और मानसिक संतुलन में था तब उसे ज्ञात हुआ कि उसके छोटे पुत्र हाम ने उसके साथ कैसा बुरा व्यवहार किया था।

25. उसने कहा, “मैं हाम की सन्तति कनान और उसके वंशजों को श्राप देता हूं कि वे अपने ताऊओं के दास होंगे।

26. मैं यहोवा की स्तुति करता हूं जिसकी शेम उपासना करता है। कनान के वंशज शेम के वंशजों के दास हों।

27. परन्तु परमेश्वर येपेत की सीमाओं को बढ़ाए। वह येपेत के वंशजों को शेम के वंशजों के साथ शान्ति का जीवन प्रदान करे। कनान के वंशज उनके दास हों।”

28. नूह जल प्रलय के बाद 350 वर्ष और जीवित रहा।

29. वह 950 वर्ष का होकर मर गया।

अध्याय 10

1. नूह के पुत्रों शेम, हाम और येपेत के वंशज ये हैं। जल प्रलय के बाद वे असंख्य संतानों के पिता हुए।

2. येपेत के वंशज थे गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और वीरास।

3. गोमेर की सन्तति थे, अशकनज, रीपत, और तोगर्मा।

4. और यावान के वंशज हुए एलीशा, तर्शीश और कित्ती और दोदानी।

5. यावान के पुत्र एवं उनके परिवार समुद्र के निकट एवं द्वीपों में बस गए। उनके वंशज भिन्न-भिन्न भाषाओं की जातियां, कुलों और सीमाओं में विभाजित हो गए।

6. हाम के वंशज थे, कूश, मिस्र, फूल और कनान।

7. कूश के वंशज थे सबा, हवीला, सबता, रामा और सबूतका, और रामा के पुत्र थे, शबा और ददान।

8. कूश के वंश में एक निम्रोद भी था। निम्रोद पृथ्वी पर पहला मनुष्य था जो पराक्रमी योद्धा था।

9. वह यहोवा की दृष्टि में एक महान शिकारी था। यही कारण है कि लोग किसी महान शिकारी से कहते हैं, “यहोवा देखता है कि तू निम्रोद के तुल्य एक महान शिकारी है।”

10. निम्रोद बेबीलोन (शिनार) का राजा हुआ। उसने जिन आरंभिक देशों पर राज किया वे थे, बेबीलोन, एरेख, अक्कद और कलने।

11. वहां से वह अन्य मनुष्यों के साथ अश्शूर को गया और वहां उन लोगों ने नीनवे, रहोबोतीर और कालह,

12. और नीनवे और कालह के मध्य रेसेन को बसाया। रेसेन एक बड़ा नगर था।

13. हाम के पुत्र मिस्र के वंशज थे, लूदी, अनामी, लहाबी, नप्तूही।

14. और पत्रूसी, कसलूही और कप्तोरी। कसलूह से पलिश्ती उत्पन्न हुए।

15. हाम के छोटा पुत्र कनान का ज्येष्ठ पुत्र सीदोन था, तब हित्त हुआ।

16. कनान यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी,

17. हिब्बी, अर्की, सीनी,

18. अर्वदी, समारी और हमातियों का भी पिता हुआ और आगे चल कर कनान के वंशज एक वृहत क्षेत्र में फैल गए।

19. उन का देश उत्तर में सीदोन से लेकर, दक्षिण में गरार के निकट गाजा तक और पूर्व में सदोम, अमोरा, अदमा, सयोबीम होता हुआ लाशा तक हो गया था।

20. ये सब हाम के वंशज थे। वे विभाजित होकर विभिन्न कुलों, भाषाओं और देशों में अलग हो गए।

21. शेम, येपेत के बड़ा भाई के भी पुत्र हुए। वह एबेर के वंशजों का मूल पुरूष हुआ।

22. शेम के पुत्र थे, एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और आराम।

23. आराम के पुत्र थे, ऊस, हूल, गेतेर और मश।

24. और अर्पक्षद से रोलह उत्पन्न हुआ और शेलह से एबेर उत्पन्न हुआ।

25. एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग रखा गया जिसका अर्थ है, “विभाजन” क्योंकि उसके जीवन काल में पृथ्वी के निवासी बंट कर सर्वत्र फैल गए थे। पेलेग के छोटे भाई का नाम योक्तान था।

26. जोक्तान से अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह

27. यदोरबाम, ऊजाल, दिक्ला,

28. ओबाल, अबीमाएल, शबा

29. ओपीर, हवीला, और योबाम उत्पन्न हुए। ये सब योक्तान के पुत्र थे।

30. जिस स्थान में ये कुल रहते थे वह पूर्व दिशा के पहाड़ी प्रदेश में मेशा से लेकर सपारा तक था।

31. ये लोग शेम के पुत्रों के वंशज थे और वे भिन्न-भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों और जातियों के अनुसार अलग-अलग होकर रहने लगे।

32. ये सब जातियां नूह के पुत्रों से उत्पन्न हुईं। इनमें से प्रत्येक जाति की अपनी वंशावली थी और प्रत्येक जाति एक जन समुदाय हो गई। जल प्रलय के बाद संपूर्ण पृथ्वी पर ये जातियां फैल गईं।

अध्याय 11

1. उस समय संपूर्ण पृथ्वी पर एक ही भाषा थी।

2. पूर्व की ओर अग्रसर होते हुए वे बेबीलोन के मैदान में पहुंचे और वहीं रहने लगे।

3. तब उन्होंने आपस में विचार किया, “हम क्यों ने मिट्टी की ईंटें बना कर उन्हें आग में पकाएं कि वे कठोर हो जाएं। कि हम उनसे निर्माण करें।” अतः उन्होंने पत्थरों के स्थान पर ईटें काम में लेना और तारकोल के स्थान पर चुनाई के लिए गारा काम में लेना आरंभ कर दिया।

4. फिर उन्होंने कहा, “आओ, हम अपने लिए एक नगर का निर्माण करें। हमें एक ऊंचा मीनार भी बनाना चाहिए जो आकाश तक ऊंचा हो। इस प्रकार लोग जानेंगे कि हम भी हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम पृथ्वी पर विसर्जित हो जायेंगे।”

5. एक दिन यहोवा उनके निर्माणाधीन नगर और मीनार को देखने नीचे आया।

6. वह देख यहोवा ने कहा, “ये लोग एक ही भाषा बोलने वाली जाति के हैं और यदि उन्होंने ऐसा काम करना आरंभ किया है तो वे जो भी करना चाहेंगे वह उनके लिए असंभव नहीं होगा।

7. अतः हम नीचे जाकर ऐसा करें कि सब भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने लगें जिससे कि वे समझ न पाएं कि कोई क्या कह रहा है।”

8. ऐसा करके परमेश्वर ने उन्हें संपूर्ण नगर पर फैला दिया, और उनका नगर निर्माण कार्य रूक गया।

9. इस कारण उस नगर का नाम बेबीलोन पड़ा क्योंकि परमेश्वर ने पृथ्वी के लोगों को एक ही भाषा बोलने न दी और मनुष्यों को उस स्थान से विसर्जित कर दिया।

10. अब शेम की वंशावली यह है। जल प्रलय के दो वर्ष पश्चात शेम सौ वर्ष का हो गया था। उस समय उसके पुत्र अर्पक्षद का जन्म हुआ।

11. अर्पक्षद के जन्म के पश्चात शेम पांच सौ वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

12. पैंतीस वर्ष की आयु में उसके पुत्र शेलह का जन्म हुआ।

13. शेलह के जन्म के पश्चात अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

14. तीस वर्ष की आयु में शेलह एबेर का पिता हुआ।

15. एबेर के जन्म के पश्चात शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

16. चैंतीस वर्ष की आयु में एबेर पेलेग का पिता हुआ और पेलेग के जन्म के पश्चात एबेर चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

17. तीस वर्ष की आयु में पेलेग रू का पिता हुआ।

18. और रू के जन्म के पश्चात पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

19. बत्तीस वर्ष की आयु में रू सरूग का पिता हुआ,

20. और सरूग के जन्म के पश्चात रू दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

21. तीस वर्ष की आयु में सरूग नाहोखा का पिता हुआ

22. और नाहोर के जन्म के पश्चात सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

23. उनतीस वर्ष की आयु में नाहोर तेरह का पिता हुआ;

24. और तेरह के जन्म के पश्चात नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुए।

25. सत्तर वर्ष की आयु में तेरह अब्राम, नाहोर और हारान का पिता हुआ।

26. तेरह के वंशज ये थेः तेरह के पुत्र थे अब्राम, नाहोर और हारान। हारान के पुत्र का नाम लूत था।

27. कसदियों के ऊर नगर में जब हारान की मृत्यु हुई थी तब उसका पिता जीवित था, वही उसका जन्म स्थान था।

28. अब्राम और नाहोर दोनों का विवाह हो गया था। अब्राम की पत्नी का नाम सारै और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था। मिल्का और उसकी बहन यिस्का दोनों हारान की पुत्रियां थीं।

29. सारै सन्तानोत्पत्ति में अक्षम थी।

30. तेरह ने निर्णय लिया कि ऊर नगर को त्याग कर कनान देश को जाए। अतः उसने अपने पुत्र अब्राम और हारान के पुत्र, अपने पोते लूत तथा अब्राम की पत्नी को साथ लिया और कनान के लिए निकल गया। परन्तु जब वह हारान नगर में पहुंचा तो वही रूक गया और रहने लगा।

31. 205 वर्ष की आयु में तेरह हारान देश में मर गया।

अध्याय 12

1. तब यहोवा ने अब्राम से कहा, “इस समय तू जहां रह रहा है उस देश से निकल कर, अपने पिता के कुटुम्ब और परिजनों को त्याग कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।

2. मैं तेरे वंशजों को एक बड़ी जाति बनाऊंगा। मैं तुझे आशिष दूंगा और तेरा नाम प्रसिद्ध कर दूंगा और मेरी भलाई के कारण तू अन्य मनुष्यों के लिए आशिष का कारण होगा।

3. जो तुझे आशीर्वाद देंगे उन्हें मैं आशिषित करूंगा और जो तेरे साथ बुराई करें उन्हें मैं श्रापित ठहराऊंगा। और संपूर्ण पृथ्वी के लोग तेरे द्वारा आशिषित होंगे।”

4. अतः अब्राम ने यहोवा की आज्ञा मान कर अपनी पत्नी सारै और अपने भतीजे लूत के साथ हारान से कूच किया। हारान से कूच करते समय अब्राम पचहत्तर वर्ष का था।

5. अब्राम ने अपनी पत्नी सारै और लूत के परिवार तथा संपूर्ण धन सम्पदा एवं दासों के साथ वहां से कनान देश के लिए प्रस्थान किया।

6. कनान में वे शकेम पहुंचे और मोरे के बड़े बांज वृक्ष के नीचे डेरा डाला। उस समय वहां कनानी लोग वास करते थे।

7. वहां यहोवा ने अब्राम को दर्शन दिया और कहा, “मैं यह संपूर्ण देश तेरे वंशजों को दे दूंगा।” तब अब्राम ने दर्शन देने वाले यहोवा की उपासना करने के लिए बलि चढ़ाने हेतु एक वेदी बनाई।

8. शकेम से प्रस्थान करके अब्राम और उसका परिवार बेतेल के पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में आए। उन्होंने जिस स्थान में डेरे डाले उसके पश्चिम में बेतेल था। और पूर्व में ऐ नगर था। वहां भी उसने एक वेदी बनाई और बलि चढ़ा कर यहोवा की उपासना की।

9. अब्राम आगे बढ़ता रहा और दक्षिण की ओर नेगेब मरूस्थल में गया।

10. उस समय उस देश में अकाल था इस कारण वे दक्षिण में और अधिक चल कर कुछ समय के लिए मिस्र देश में बस गए।

11. जब वे मिस्र के निकट पहुंच रहे थे तब अब्राम ने अपनी पत्नी सारै से कहा, “सुन, मैं जानता हूं कि तू एक परम सुन्दरी है।

12. जब तुझे मिस्र वासी देखेंगे तो कहेंगे, ‘यह स्त्री इसकी पत्नी है।’ और वे मुझे मार डालेंगे परन्तु तुझे नहीं मारेंगे।

13. अतः तू कहना कि तू मेरी बहन है और इस प्रकार मैं सुरक्षित रहूंगा। तेरे कारण वे मुझे जीवित रहने देंगे।”

14. और हुआ भी यही। जब वे मिस्र में पहुंचे तब वहां के निवासियों ने देखा कि सारै वास्तव में परम सुन्दरी है। राजा के कर्मचारियों ने उसे देख कर राजा के समक्ष उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की। अतः राजा उसे अपने महल में ले गया।

15. राजा ने सारै के बदले में अब्राम के साथ दया का व्यवहार किया। और अब्राम को भेड़ें, मवेशी, गधे, दास-दासियां तथा ऊंट दिए।

16. अब क्योंकि राजा अब्राम की पत्नी सारै को ले आया था, यहोवा ने राजा और उसके परिवार के सदस्यों को भयानक रोगों से ग्रस्त किया।

17. अतः राजा ने अब्राम को बुला कर कहा, “तूने मेरे साथ ऐसा अनर्थ क्यों किया है? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है?

18. तूने क्यों कहा कि वह तेरी बहन है? मैं तो उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए ले आया था। तुझे ऐसा नहीं करना था। अब अपनी पत्नी को लेकर यहां से चला जा!”

19. तब राजा ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी कि अब्राम उसकी पत्नी और उसके संपूर्ण संपदा को मिस्र से बाहर ले जाएं।

अध्याय 13

1. अतः अब्राम और सारै मिस्र से निकल कर पश्चिमी यहूदिया के जंगल में लौट आए। उनके साथ उनकी सम्पदा और लूत भी था।

2. अब अब्राम बहुत धनवान हो गया था। उसके पास बहुत पशु धन और सोना चांदी था।

3. वे दक्षिणी यहूदिया के जंगल से बेतेल तक विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते रहे- बेतेल और ऐ नगर के मध्य जहां उन्होंने पहले डेरे डाले थे।

4. यहां अब्राम ने पहले एक वेदी बनाई थी, वही पर उसने यहोवा की फिर से उपासना की।

5. लूत भी अब्राम के साथ-साथ चलता था। उसके पास भी भेड़ बकरियां, ऊंट और तम्बू थे।

6. उन दोनों के पास इतने अधिक पशु थे कि वे सब एक ही स्थान में नहीं रह पाते थे। उनके पशुओं के लिए भोजन पानी के लिए वह स्थान पर्याप्त नहीं था।

7. इसके अतिरिक्त, अब्राम के चरवाहे लूत के चरवाहों के साथ झगड़ने लगे थे। उस स्थान में कनानी और परिज्जी भी रहते थे।

8. अतः अब्राम ने लूत से कहा, “हम निकट परिजन हैं इसलिए हम में झगड़े होना था। हमारे चरवाहों में झगड़ा होना अच्छा नहीं है।

9. हमारे सामने बहुत भूमि है। अतः हमारे लिए अलग हो जाना ही अच्छा है। तुझे जो स्थान अच्छा लगता है वह ले ले। यदि तुझे वह स्थान अच्छा लगे तो मैं यहीं रूक जाऊंगा। और यदि तुझे यह स्थान अच्छा लगे तो मैं वहां चला जाऊंगा।

10. लूत ने यरदन नदी की तराई सोअर को देखा कि वहां बहुत जल है। उस समय यहोवा ने सल्लेम और अमोरा को नष्ट नहीं किया था। उस समय वह स्थान नील नदी के निकट के स्थान, यहोवा की वाटिका के सदृश्य था। अतः लूत यरदन नदी की तराई को चुन कर अपने चाचा अब्राम से अलग पूर्व की ओर चला गया।

11.

12. अब्राम तो कनान देश में ही रह गया था। और लूत ने यरदन नदी की तराई के नगरों के निकट सदोम के पास अपने डेरे खड़े किए थे।

13. सदोम के निवासियों की दुष्टता चरम सीमा पर थी और यहोवा की दृष्टि में वे भयानक पाप करते थे।

14. अब्राम और लूत के अलग हो जाने के बाद यहोवा ने अब्राम से कहा, “तू इस संपूर्ण प्रदेश को देख ले जहां तू खड़ा है, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम को।

15. तुझे जितना स्थान दिख रहा है वह सब मैं तुझे और तेरे वंशजों को सदा के लिए दे दूंगा।

16. और तेरे वंशजों को धूल के कणों के समान असंख्य कर दूंगा। यदि कोई धूल के कण गिन पाए तो वह तेरे वंशजों की गिनती कर पाएगा।

17. इस प्रदेश में हर दिशा में चल फिर। क्योंकि मैं यह सब तुझे दे दूंगा।”

18. अतः अब्राम ने अपना डेरा उठाया और हेब्रोन को गया और मेम्रे के बांज वृक्षों के मध्य वास किया। उसने वहां भी यहोवा के लिए एक वेदी बनाई कि बलि चढ़ाए।

अध्याय 14

1. वहां चार राजा परस्पर मित्र थे। ये चार राजा थे शिनार का राजा अम्रापेल, एल्लासार का राजा अर्योक, एलाम का राजा कदोर्लाओमेर और गोयीम का राजा तिदाल।

2. इन चारों राजाओं ने सदोम के राजा बेरा, अमोर के राजा बिर्शा, अदमा के राजा शिनाब और सबोयीम के राजा शमेबेर और बेला जो सोअर भी कहलाता है, इन सब के विरूद्ध युद्ध करने की योजना बनाई।

3. ये पांचों राजा अपनी सेनाओं के साथ सिद्दीम नामक तराई में जो मृत सागर के निकट है, उन चारों राजाओं से युद्ध करने के लिए एकत्र हुए।

4. राजा कदोर्लाओमेर ने इन पर बारह वर्ष राज किया था परन्तु तेरहवें वर्ष में इन्होंने कदोर्लाओमेर से विद्राह कर दिया और उसे कर देना बन्द कर दिया।

5. अतः चैदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर और उसके मित्र राजाओं ने चढ़ाई की और अशतरोत्कनम में रपाइयों, हाम में जूजियों, शाबेकिर्यातैम में एमियों को हराया।

6. उन्होंने सेईर के पर्वतों पर होरियों को पराजित किया और मरूस्थल में एल पारान तक पहुंच गए।

7. तदोपरान्त वे पलट कर एन मिशपात जो कादेश कहलाता है वहां आए। उन्होंने अमालेकियों के संपूर्ण प्रदेश को और हससोन तामार के अमालेकियों को भी पराजित किया।

8. तब सदोम, अमोरा, अदमा, सबोयीम और बेला जो सोअर भी कहलाता है, के राजाओं ने सिद्दिम नाम की तराई में उनका सामना किया।

9. एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल और एल्लासार के राजा अर्योक इन चारों ने एक होकर उन पांचों राजाओं से युद्ध किया।

10. सिद्दिम की तराई में कोलतार के अनेक गड़हे थे। अतः जब सदोम और अमोरा की सेनाएं इनके सामने से भागीं तो बहुत से योद्धा उन गड़हों में गिर गए। अन्य सैनिक बच कर पहाड़ों में भागे।

11. जब वे युद्ध क्षेत्र से भाग गए तब दुश्मन की सेना ने सदोम और अमोरा से सब बहुमूल्य वस्तुएं तथा खाद्य सामग्री लूट ली।

12. उन्होंने अब्राम के भतीजे लूत को और उसकी सम्पदा को भी लूट लिया और उन्हें बन्दी बना लिया क्योंकि लूत भी सदोम में रहता था।

13-14. उस समय अब्राम मेम्रे के बड़े वृक्षों के मध्य रहता था। मेम्रे एमोरी थे। अब्राम ने मेम्रे और उसके भाइयों, एश्कोल तथा आनेर के साथ वाचा बांधी थी कि यदि युद्ध हुआ तो वे एक दूसरे की सहायता के लिए खड़े होंगे। युद्ध से बच निकल कर आए एक पुरूष ने इब्री अब्राम को युद्ध का समाचार सुनाया कि दुश्मन उसके भतीजे लूत को बन्दी बना कर ले गए हैं। अतः अब्राम ने अपने 318 पुरूषों को जन्म से ही उसके साथ थे और युद्ध करना जानते थे, साथ लेकर दान नगर तक दुश्मनों का पीछा किया।

15. रात के समय अब्राम ने अपने पुरूषों को अनेक दलों में विभाजित किया और विभिन्न दिशाओं से दुश्मन की सेना पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पराजित करके दमिश्क के उत्तर में होबा तक उनका पीछा किया।

16. वह सारी धन संपदा और और लूत तथा उसकी स्त्रियों तथा संपूर्ण धन संपदा के साथ सब बन्दियों को छुड़ा कर ले आया।

17. जब अब्राम कदोर्लाओमेर और उसके साथ के राजाओं को पराजित करके घर लौट रहा था तब सदोम के राजा शाबे नाम की तराई में, जिसे वे राजा की तराई भी कहते थे, अब्राम से भेंट करने आया।

18. उसी समय शालेम का मलिकिसिदक जो परम प्रधान परमेश्वर का पुरोहित भी था, अब्राम के लिए रोटी और दाखमधु लेकर आया।

19. और उसने अब्राम को आशीर्वाद दिया, “परम प्रधान परमेश्वर जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है, उससे मैं तुझे आशिषित करने की विनती करता हूं।

20. मैं उस परम प्रधान परमेश्वर की स्तुति करता हूं क्योंकि उसने तुझे इस योग्य बनाया कि शत्रु पर विजयी हो।” तब अब्राम ने मलिकिसिदक को अपनी लूट का दसवां भाग अर्पित किया।

21. और सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, “तूने जो कुछ भी छुड़ाया है सब रख ले। मुझे केवल मेरे नगर के निवासी दे दे जिन्हें तू लौटा कर लाया है।”

22. परन्तु अब्राम ने सदोम के राजा को उत्तर दिया, “परम प्रधान परमेश्वर यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है, उसकी मैं शपथ खाता हूं,

23. कि जो कुछ तेरा है उसमें से मैं न तो एक सूत और न जूती का बंधन, कुछ भी नहीं लूंगा जिससे कि तू कभी न कहने पाए कि, “मैंने अब्राम को धनवान बनाया है।”

24. मेरे पुरूषों ने जो भोजन खाया है, बस वही मुझे दे दे। परन्तु आनेर, एश्कोल और मेम्रे मेरे साथ इस युद्ध में गए थे, इसलिए हम जो लूट लाए हैं, उसमें से उन्हें अपना-अपना भाग रखने दे।

अध्याय 15

1. कुछ समय बाद परमेश्वर ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, “हे अब्राम मत डर। मैं तेरी रक्षा करूंगा और तुझे बड़ा प्रतिफल दूंगा।”

2. परन्तु अब्राम ने कहा, “हे प्रभु यहोवा, मुझे वास्तव में जो चाहिए वह तू मुझे कैसे देगा क्योंकि मेरी कोई संतान नहीं है और जो मेरी संपूर्ण सम्पदा का उत्तराधिकारी होगा वह मेरा सेवक दमिश्कवासी एलीएजेर है।”

3. अब्राम ने यह भी कहा, “तूने मुझे कोई संतान नहीं दी है। अतः मेरे कुटुम्ब का ही एक सेवक मेरी संपूर्ण सम्पदा का उत्तराधिकारी होगा।”

4. यहोवा ने उसे उत्तर दिया, “नहीं, वह तेरा उत्तराधिकारी नहीं होगा। इसकी अपेक्षा, तू ही अपनी सम्पदा के उत्तराधिकारी का पिता बनेगा।”

5. तब यहोवा अब्राम को उसके तम्बू के बाहर ले गया और उससे कहा, “आकाश को देख! क्या तू सितारों को गिन सकता है? नहीं, तू नहीं गिन सकता क्योंकि वे असंख्य हैं। तेरे वंशज भी सितारों की नाईं असंख्य होंगे।”

6. अब्राम ने विश्वास किया कि यहोवा ने जो कुछ कहा है वह पूरा होगा। उसके इस विश्वास के कारण यहोवा ने उसे धर्मी माना।

7. यहोवा ने उससे यह भी कहा, “मैं यहोवा हूं। मैं ही तुझे कसदियों के ऊर नगर से निकाल कर लाया हूं। मैं तुझे यहां इसलिए लाया कि तुझे यह संपूर्ण प्रदेश दे दूं।”

8. परन्तु अब्राम ने कहा, “हे प्रभु यहोवा, मुझे कैसे निश्चय हो कि यह संपूर्ण देश मेरा होगा?”

9. परमेश्वर ने उससे कहा, “मेरे लिए एक तीन वर्ष का बछड़ा और एक तीन वर्ष की बकरी और एक पेंडुकी और एक कबूतर का बच्चा ले आ।”

10. अतः अब्राम वह सब ले आया और उन्हें आधा-आधा काट कर आमने-सामने रख दिया परन्तु पेंडुकी और कबूतर को उसने विभाजित नहीं किया।

11. मांसाहारी पक्षी मांस के उन टुकड़ों को खाने के लिए आए तो अब्राम ने उन्हें भगा दिया।

12. सूर्यास्त के समय अब्राम निद्रा मग्न हो गया और उसके चारों ओर अंधकार छा गया जो डरावना था।

13. तब यहोवा ने अब्राम से कहा, “मैं तुझे बताना चाहता हूं कि तेरे वंशज एक अज्ञात देश में परदेशी होकर रहेंगे। वे वहां के देशवासियों के दास हो जायेंगे। उस देश के निवासी चार सौ वर्षों तक उनके साथ बुरा व्यवहार करेंगे।

14. तब मैं उस देश के निवासियों को दण्ड दूंगा, जहां वे दास होंगे।

15. परन्तु जहां तक तेरी बात है, तू शान्ति के साथ दीर्घावस्था में प्राण त्यागेगा। और दफन किया जाएगा।

16. जब तेरे वंशज चार सौ वर्षों तक दास होकर रहेंगे तब वे लौट कर इस स्थान में आ जायेंगे। वे इस देश को अपने वश में करके एमोरियों को पराजित करेंगे। उससे पहले ऐसा नहीं होगा क्योंकि एमोरियों का पाप दण्ड के योग पराकाष्ठा पर नहीं पहुंचा है।”

17. सूर्यास्त के बाद जब अंधकार छा गया तब एक मशाल और मिट्टी का एक पात्र जिसमें कोयले जलते हुए धुआं दे रहे थे, प्रकट होकर वध किए गए पशुओं के मध्य से निकले।

18. उस दिन यहोवा ने अब्राम के साथ वाचा बांधी। यहोवा ने अब्राम से कहा, “मैं तेरे वंशजों को वह संपूर्ण देश दे दूंगा जो मिस्र की पूर्वी सीमा पर नदी से लेकर दक्षिण और उत्तर में परात नामक बड़ी नदी तक का होगा।

19. यह वह स्थान है जहां केनी, कनिज्जी, कदमोनी,

20. हित्ती, परिज्जी, रपाई,

21. एमोरी, कनानी, गिर्गाशी और यबूसी बसे हुए हैं।

अध्याय 16

1. अब तक अब्राम की पत्नी सारै को अब्राम से कोई संतान प्राप्त नहीं हुई थी, परन्तु उसकी एक मिस्री दासी थी जिसका नाम हाजिरा था।

2. सारै ने अब्राम से कहा, “मेरी बात सुन! यहोवा ने मुझे गर्भधारण से वंचित किया हुआ है। अतः तू मेरी दासी हाजिरा के साथ सो। संभव है कि वह संतान उत्पन्न करे जिन्हें मैं अपना सकूं।” अब्राम सारै से सहमत हो गया।

3. यह घटना अब्राम और सारै के दस वर्ष कनान वास के बाद की है। अतः अब्राम ने सारै की मिस्री दासी को अपनी दूसरी पत्नी स्वीकार किया।

4. और वह हाजिरा के साथ सोया। और वह गर्भवती हुई। जब उसे अपनी गर्भावस्था का बोध हुआ तब वह अपनी स्वामिनी को तुच्छ समझने लगी।

5. तब सारै ने अब्राम से कहा, “सारा दोष तेरा ही है। मैंने अपनी दासी तेरे हाथों में दी कि तू उसके साथ सोए। और अब वह गर्भवती हो गई है तो मुझे तुच्छ समझती है। क्योंकि मैं संतान रहित हूं। यहोवा तुझे मेरे साथ किए जा रहे इस दुव्र्यवहार का दोष दे।”

6. अतः अब्राम ने सारै से कहा, “मेरी बात सुन! वह तेरी दासी है, अतः जो तुझे सब से अच्छा लगे वैसा ही व्यवहार उसके साथ कर।” तब सारै ने उसके साथ कठोर व्यवहार करना आरंभ कर दिया। जिसके कारण हाजिरा वहां से भाग गई।

7. जब वह मरूस्थल में एक जल के सोते के पास थी यहोवा का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ। यह सोता सूर के मार्ग पर था।

8. उसने हाजिरा से कहा, “सारै की दासी हाजिरा, तू कहां से आई है और कहां जा रही है?” हाजिरा ने उत्तर दिया, “मैं अपनी स्वामिनी सारै के पास से भाग आई हूं।”

9. यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे कहा, “अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके आज्ञापालन में रह।”

10. यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे यह भी कहा, “मैं तेरे वंश को इतना अधिक बढ़ा दूंगा कि उनकी गिनती कोई नहीं कर पाएगा।”

11. यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे कहा, “तू गर्भवती है और एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम इश्माएल रखना जिसका अर्थ है, ‘परमेश्वर सुनता है’ क्योंकि यहोवा ने तेरे दुख का रोना सुना है।

12. परन्तु तेरा एक पुत्र जंगली गदहे के समान अनियंत्रित होगा। वह सब का विरोध करेगा और सब उसका विरोध करेंगे। वह अपने सब परिजनों से दूर अलग रहेगा।

13. हाजिरा ने अपने मन में कहा, “मैं यहोवा की दृष्टि में आ कर भी जीवित हूं।” अतः उसने यहोवा को “अत्ताएलरोई” कहा जिसका अर्थ है, “वह परमेश्वर जो मुझे देखता है।”

14. यही कारण है कि वहां के लोग उस कुएं को “बीर लहैरोई” कहते हैं। जिसका अर्थ है, “जीवता जो मुझे देखता है उसका कुआं।” वह अब भी कादेश और बेरेद के मध्य है।

15. अतः हाजिरा ने अब्राम के लिए एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम इश्माएल रखा।

16. जब हाजिरा ने अब्राम के पुत्र को जन्म दिया तब अब्राम छियासी वर्ष का था।

अध्याय 17

1. जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का था तब यहोवा ने उसे एक बार और दर्शन दिया और कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं। मैं चाहता हूं कि तू मेरी इच्छा के अनुसार जीवन जीए। मैं नहीं चाहता कि तू कोई भी अनुचित काम करे।

2. मैं हमारे मध्य मेरी वाचा को दृढ़ करूंगा। और तुझसे बहुत बड़ी संख्या में वंशज तैयार करूंगा।”

3. अब्राम भूमि पर मुंह के बल गिरा और दण्डवत् किया। तब परमेश्वर ने उससे कहा,

4. सुन! मैं तेरे साथ जो वाचा बांधता हूं वह यह हैः तू अनेक जातियों का पिता होगा।

5. तेरा नाम अब से आगे अब्राम न होकर अब्राहम होगा क्योंकि मैं तुझे अनेक जातियों का पिता बनाऊँगा।

6. मैं तेरे वंशजों की संख्या असीमित कर दूंगा और तेरे वंश में अनेक जातियां और राजा होंगे।

7. मैं यह वाचा मेरे और तेरे मध्य तथा तेरे बाद तेरे वंशजों के साथ सदा के लिए बांधता हूँ। इस वाचा के अन्तर्गत तू मुझे परमेश्वर मान कर मेरी उपासना करेगा और मेरा अनुसरण करेगा और तेरे वंशज भी ऐसा ही करेंगे।

8. मैं तुझे और तेरे वंशजों को कनान देश, संपूर्ण कनान दूंगा जहाँ इस समय तू वास करता है। यह उनके लिए सदा के लिए अपना देश होगा और मैं उनका रहूंगा।”

9. फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “अब मैं तेरे साथ जो वाचा बांधता हूँ उसके अधीन तू अपना कत्र्तव्य निभाना नहीं भूलना और तेरे वंशज भी, हर एक पीढ़ी में इसका पालन अवश्य करें।

10. यह इस वाचा की अनिवार्यता है जो मैं तेरे साथ और तेरे वंशजों के साथ बांधता हूँ। तेरे मध्य हर एक पुरुष का खतना किया जाए।

11. उनकी खलड़ी को काट देना जो एक चिन्ह होगा कि तुम मेरी वाचा को स्वीकार करते हो।

12. तुम्हारा हर एक बालक जब आठ दिन का हो तब उसका खतना किया जाए, यही हर एक पीढ़ी में किया जाए। यह विधान तेरे कुटुम्ब के हर एक बालक और खरीदे गए दासों के पुत्रों और तुम्हारे मध्य वास करने वाले परदेशियों जो तुम्हारे कुटुम्ब के नहीं हैं, सबके लिए है।

13. चाहे उनके पिता तुम्हारे परिवार के सदस्य हों या तुम्हारे खरीदे हुए दास हों, सबका खतना करना अनिवार्य है। तुम्हारी देहों पर यह चिन्ह होगा कि प्रकट हो कि तुमने मेरी सदाकालीन वाचा को स्वीकार किया है जो मैं तुझसे बांधता हूँ।

14. तुम्हें अपने समुदाय से उस हर एक पुरुष को बहिष्कृत करना होगा जिसने खतना नहीं करवाया है क्योंकि उसने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है।

15. परमेश्वर ने अब्राहम से यह भी कहा, “सारै के लिए है कि तू अब उसे सारै कहकर नहीं पुकारना। मैं उसका नाम भी बदल दूंगा। अब से उसका नाम सारा होगा।

16. मैं उसको आशिष दूंगा और वह निश्चय ही तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न करेगी। और मैं उसे आशिषों से परिपूरित करूंगा कि वह अनेक जातियों की माता होगी। उससे अनेक जातियां और राजा उत्पन्न होंगे।

17. तब अब्राहम ने मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को श्रद्धा अर्पित की परन्तु मन ही मन हंसा और सोचा, “क्या एक सौ वर्ष का पुरुष पुत्र का पिता हो सकता है? और सारा जो नब्बे वर्ष की हो चुकी है, पुत्र को जन्म दे सकती है?”

18. तब अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, “संभव है कि तू इश्माएल के लिए चाहता है कि वह तेरी आशिषों को प्राप्त करे और मेरा जो कुछ है, उसका उत्तराधिकारी हो।”

19. परमेश्वर ने उससे कहा, “नहीं, तेरी पत्नी सारा तेरे लिए एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम इसहाक रखना। मैं उसके साथ अपनी वाचा को दृढ़ करूंगा, यह उसके और उसके वंशजों के साथ एक अनन्त वाचा होगी।

20. जहाँ तक इश्माएल की बात है, मैंने सुन लिया है जो तूने उसके लिए मुझसे मांगा है। मैं उसे भी आशिष दूंगा कि उसके भी असंख्य वंशज हों। उसके वंश में भी बारह कुलों के प्रधान होंगे और मैं उसके वंशजों को भी एक महान जाति बनाऊंगा।

21. परन्तु इसहाक ही के साथ जिसको सारा अगले वर्ष के इसी समय जन्म देगी, मैं अपनी वाचा दृढ़ करूंगा।”

22. अब्राहम से यह सब कहने के बाद परमेश्वर उसकी दृष्टि से ओझल हो गया।

23. उसी दिन अब्राहम ने इश्माएल और अपने कुटुम्ब के सब पुरुषों तथा खरीदे हुए दासों के पुत्रों को लेकर सबका खतना किया। उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उनकी खलड़ियां काट दीं।

24. जब अब्राहम का खतना किया गया तब वह निन्यानवे वर्ष का था। और जब अब्राहम ने इश्माएल का खतना किया तब वह तेरह वर्ष का था।

25.

26. अब्राहम और उसके पुत्र इश्माएल का खतना एक ही दिन किया गया।

27. अब्राहम के परिवार के सब पुरुषों का खतना किया गया चाहे वे वहाँ जन्मे थे या अब्राहम द्वारा परदेशियों से मोल लिए गए थे।

अध्याय 18.

1. उसी वर्ष एक दिन जब अब्राहम मेम्ने के बांज वृक्षों के बीच दिन की गर्मी में अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया।

2. अब्राहम ने दृष्टि उठाकर देखा तो तीन पुरुषों को अपने निकट खड़ा देखकर चकित हुआ। उन्हें देखते ही वह उनसे भेंट करने के लिए दौड़ा और उन्हें सम्मान प्रदान करने के लिए मुंह के बल धरती पर गिरा।

3. उनमें से एक से उसने कहा, “हे प्रभु, यदि तू मुझसे प्रसन्न है तो कुछ समय यहाँ विश्राम कर।

4. मेरे सेवकों को अनुमति दे कि वे पानी लाकर तुम्हारे पांव धोएं और तुम इस वृक्ष के नीचे विश्राम करे।

5. क्योंकि तुम मेरे पास आए हो तो मुझे अनुमति दो कि तुम्हारे लिए भोजन परोसूं कि तुम प्रस्थान करने से पूर्व बल प्राप्त करो।” उन पुरुषों ने कहा, “ठीक है, जैसा तू उचित समझता है वैसा ही कर।”

6. तब अब्राहम शीघ्रता से तम्बू के भीतर गया और सारा से कहा, “अतिशीघ्र बीस किलो आटा गूंधकर रोटियां बना।”

7. तब अपने मवेशियों में से एक ऐसा बछड़ा चुना जिसका मांस कोमल और स्वादिष्ट हो और अपने सेवकों को दिया जिन्होंने अति शीघ्र उसका वध करके खाना पकाया। तब अब्राहम दूध और दही और अपने सेवक द्वारा पकाया हुआ मांस लेकर आया और उनके समक्ष रखा और जब वे भोजन करते थे तब अब्राहम उनके पास एक वृक्ष के नीचे खड़ा हो गया।

8.

9. भोजन करने के बाद उन्होंने पूछा, “तेरी पत्नी सारा कहाँ है?” उसने उत्तर दिया, “वह तम्बू के भीतर है।”

10. तब उनके अगुवे ने कहा, “मैं अगले वर्ष वसन्त ऋतु में तेरे पास फिर आऊँगा, और सुन उस समय तेरी पत्नी सारा की गोद में एक पुत्र होगा।” सारा उस पुरुष की बातें, तम्बू के द्वार पर खड़ी सुन रही थी। उस पुरुष की पीठ द्वार की ओर थी।

11. अब्राहम और सारा अब बूढ़े हो चुके थे, और सारा सन्तानोत्पत्ति के समय को पार कर चुकी थी।

12. अतः सारा मन में हंसी और सोचा, “मेरा शरीर तो समाप्त हो चुका है और मेरा पति भी बहुत बूढ़ा हो गया है। मुझे पुत्र प्राप्ति का सौभाग्य कैसे प्राप्त होगा?”

13. यहोवा ने अब्राहम से कहा, “सारा क्यों हंसी? वह क्यों सोचती है कि वह सन्तोत्पत्ति के लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी है?

14. क्या मेरे लिए कोई भी काम कठिन है? मैं अगले वर्ष इसी वसन्त ऋतु में फिर आऊंगा, यही समय मैंने निश्चित किया है और सारा के पास एक शिशु होगा।”

15. सारा डर गई थी, अतः उसने कहा, “मैं तो नहीं हंसी थी।” परन्तु यहोवा ने कहा, “इन्कार मत कर! तू निश्चय ही हंसी थी।”

16. जब वे तीनों पुरुष प्रस्थान हेतु खड़े हुए तब उन्होंने सदोम नगर की और तराई प्रदेश पर दृष्टि डाली। अब्राहम उन्हें विदा करने के लिए उनके साथ चल पड़ा।

17. तब यहोवा ने मन में सोचा, “अपनी योजना को अब्राहम पर प्रकट न करना मेरे लिए उचित नहीं है।

18. अब्राहम के वंशज एक महान एवं शक्तिशाली जाति होंगे और मैंने इसके लिए जो किया है उससे सब जातियों के लोग आशिषित होंगे।

19. मैंने उसे इसलिए चुना है कि वह अपने सन्तान को और उनके परिवारों को निर्देश दे कि वे मेरी आज्ञाओं को मानें और वह काम करें जो उचित एवं कपटरहित है जिससे कि मैं अब्राहम के लिए वह सब करूं जिसकी मैंने उससे प्रतिज्ञा की है।”

20. अतः यहोवा ने अब्राहम से कहा, “मैंने सदोम और अमोरा के बारे में कुछ भयानक बातें सुनी हैं जो लोग कहते हैं। उनके पाप बहुत बढ़ गए हैं।

21. अतः मैं उतर कर देखूंगा कि जो मैंने उनके बारे में जो भयानक बातें सुनी हैं वे सच हैं या नहीं।”

22. तब उनमें से दो पुरुष सदोम की ओर बढ़ने लगे। परन्तु अब्राहम यहोवा के समक्ष खड़ा रहा।

23. अब्राहम ने उसके निकट जाकर कहा, “क्या तू वास्तव में दुष्टों के साथ सदाचारियों को भी नष्ट करेगा? यदि उस नगर में

24. पचास सदाचारी हुए तो तू क्या करेगा? क्या तू सच में उनको नष्ट कर देगा और पचास सदाचारियों के कारण उस नगर को बचाकर नहीं रखेगा?

25. तू ऐसा तो निश्चय ही नहीं करेगा कि दुष्टों के साथ सदाचारियों को भी नष्ट कर दे और दुष्टों एवं सदाचारियों के साथ एक सा व्यवहार करे। तू ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि तू पृथ्वी पर सबका न्यायी है इसलिए सदोम के निवासियों के साथ वही करेगा जो उचित है।

26. यहोवा ने उसे उत्तर दिया, “यदि मुझे सदोम में पचास सदाचारी मनुष्य मिले जिन्होंने पाप नहीं किया तो उनके कारण मैं उस नगर को छोड़ दूंगा।”

27. तब अब्राहम ने फिर कहा, “हे मेरे प्रभु मैं इस प्रकार तुझसे विवाह करने का साहस तो नहीं करता हूँ क्योंकि मैं धूल और राख के तुल्य नगण्य हूँ।

28. परन्तु यदि वहाँ पैंतालीस निर्दोष सदाचारी हों तो तू क्या करेगा? क्या तू उस नगर का सर्वनाश कर देगा क्योंकि वहाँ पचास नहीं पैंतालीस ही सदाचारी हैं। यहोवा ने उससे कहा, “यदि मैं वहाँ पैंतालीस सदाचारियों को पाऊँ तो उस नगर को ध्वंस नहीं करूंगा।”

29. अब्राहम ने फिर कहा, “यदि वहाँ केवल चालीस सदाचारी हुए तो?” यहोवा ने कहा, “मैं उसका सर्वनाश नहीं करूंगा क्योंकि वहाँ चालीस सदाचारी हैं।”

30. अब्राहम ने कहा, “कृप्या मुझ पर क्रोध न करें। मुझे एक बार और कहने का अवसर दें। यदि वहाँ केवल तीस सदाचारी हुए तो?” उसने कहा, “यदि वहाँ तीस सदाचारी भी हुए तो मैं ऐसा नहीं करूंगा।”

31. अब्राहम ने फिर कहा, “हे मेरे प्रभु, मुझे साहस तो नहीं करना चाहिए परन्तु यदि वहाँ बीस सदाचारी पाए गए तो तू क्या करेगा?” उसने कहा, “उन बीस के कारण मैं उस नगर को नष्ट नहीं करूंगा।”

32. अन्त में अब्राहम ने कहा, “हे मेरे प्रभु क्रोध न कर मैं एक बार और निवेदन करता हूँ, यदि वहाँ केवल दस सदाचारी हुए तो?” यहोवा ने कहा, “उस दस के कारण मैं उस नगर को नष्ट नहीं करूंगा।”

33. तब अब्राहम चुप हो गया। यहोवा ने ज्यों ही अब्राहम से बातें करना समाप्त किया, वह चला गया और अब्राहम घर लौट आया।

अध्याय 19.

1. उसी दिन संध्या काल के समय उनमें से दो स्वर्गदूत एदोम नगर में पहुंचे। लूत नगर के फाटक पर बैठा था। उन्हें देखकर वह उनका स्वागत करने के लिए खड़ा हो गया और भूमि की ओर मुंह करके उनको दण्डवत् किया।

2. लूत ने उनसे कहा, हे सज्जनों, “कृप्या आज रात मेरे घर में ठहर जाएं। अपने पांव धोकर रहें और भोर होते ही आप लोग अपनी यात्रा पर निकल सकते हैं।” परन्तु उन्होंने कहा, “नहीं, हम यहीं नगर के चैंक में रात बिता लेंगें”

3. परन्तु लूत ने उन्हें विवश करते हुए कहा कि वे रात में उसी के घर सोएं। अतः वे उसके साथ उसके घर में गए, और लूत ने उनके लिए भोजन तैयार करवाया। उसने उनके लिए अखमीरी रोटी तैयार करवाई और उन्होंने खाई।

4. जब वे भोजन कर चुके और सोने जा ही रहे थे कि सदोम के पुरुष, बूढ़े से जवान तक सब ने लूत के घर को घेर लिया।

5. उन्होंने लूत को पुकार कर कहा, “आज शाम जो पुरुष तेरे घर आए हैं, वे कहाँ हैं? उन्हें बाहर निकाल कि हम उनके साथ भोग करें।”

6. लूत बाहर निकला और अपने पीछे द्वार बन्द कर दिया कि वे उसके घर में प्रवेश न कर पाएं।

7. लूत ने उनसे कहा, “मेरे मित्रों, ऐसी दुष्टता का काम मत करो!

8. मेरी बात सुनो, मेरी दो पुत्रियां हैं जो कभी किसी पुरुष के साथ नहीं सोई है। मैं उन्हें बाहर ले आता हूँ कि तुम जैसा चाहो उनके साथ करो, परन्तु इन पुरुषों के साथ कुछ मत करो क्योंकि वे मेरे अतिथि हैं; और उनकी रक्षा करना मेरा कत्र्तव्य है।”

9. परन्तु उन्होंने उसे धमकी दी, “हमारे रास्ते से हट जा! तू एक परदेशी है; हमें उचित मार्ग दिखाने की तुझे आवश्यकता नहीं! हम तेरे साथ उनसे भी अधिक बुरा करेंगे? वे लूत पार झपटे और द्वार को तोड़ने के लिए जबरदस्ती की।

10. परन्तु उन दोनों स्वर्गदूतों ने सावधानी-पूर्वक द्वार खोला और हाथ बढ़ाकर लूत को घर में खींच लिया और तुरन्त द्वार बन्द कर दिया।

11. उन्होंने द्वार के बाहर उपस्थित युवा व वृद्ध पर दृष्टिहीनता का अभिचार उत्पन्न कर दिया जिससे कि वे द्वार को न देख पाएं।

12. तब उन दोनों स्वर्गदूतों ने लूत से कहा, “तेरे साथ यहाँ और कौन है? यदि तेरे पुत्र, दाऊद, पुत्रियां या जो कोई भी है उन्हें नगर से बाहर ले चल;

13. क्योंकि हम इस नगर को नष्ट करने पर हैं। यहोवा ने इस नगर के विषय अनेक अनर्थकारी बातें सुनी हैं और हमें भेजा है कि इस नगर को नष्ट कर दें।”

14. अतः लूत अपनी पुत्रियों के मंगेतरों के पास गया और उनसे कहा, “शीघ्रता करके इस नगर से बाहर निकल जाओ क्योंकि यहोवा इसे नष्ट करने जा रहा है!” उसके होने वाले दामादों ने सोचा कि वह मूर्खता की बात कर रहा है।

15. अगले दिन भोर होते-होते उन स्वर्गदूतों ने लूत से कहा, “तुरन्त खड़ा हो जा और अपनी पत्नि और पुत्रियों के साथ इस नगर से बाहर निकल जा। यदि नही ंतो जब हम इस नगर को नष्ट करेंगे तब तू भी नष्ट हो जाएगा।”

16. लूत को संकोच करते देख उन स्वर्गदूतों ने उसके और उसकी पत्नी तथा उसकी पुत्रियों के हाथ पकड़े और उन्हें सुरक्षित नगर के बाहर ले आए। उन स्वर्गदूतों ने ऐसा इसलिए किया कि लूत के परिवार पर यहोवा की कृपा-दृष्टि थी।

17. जब वे उस नगर से बाहर आ गए तब उनमें से एक स्वर्गदूत ने कहा, “यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो भाग खड़े हो! पीछे मुड़कर भी नहीं देखना! तराई में कहीं भी नहीं रुकना। पहाड़ों में भाग जाओ! नहीं तो तुम मर जाओगे।”

18. परन्तु लूत ने उनसे कहा, “नहीं, श्रीमान जी, मुझसे ऐसा मत करवाओ।”

19. कृप्या मेरी बात सुनो। आप मुझसे प्रसन्न हैं और मुझ पर अति कृपालु हैं और मेरी जान बचाई है। परन्तु मैं भाग कर पहाड़ों में नहीं जा सकता। यदि मैं ऐसा करता हूँ तो इस विनाश में नहीं जा सकता। यदि मैं ऐसा करता हूँ तो इस विनाश में नष्ट हो जाऊँगा।

20. निकट ही में एक नगर है। मुझे भाग कर वहाँ जाने दें। और यदि आप उसे नष्ट नहीं करें तो वहाँ हमारे जीवन सुरक्षित रहेंगे।”

21. उन स्वर्गदूतों में से एक ने लूत से कहा, “ठीक है, मैं तेरा निवेदन स्वीकार करता हूँ। मैं उस नगर को, जिसकी तू चर्चा करता है, नष्ट नहीं करूंगा।

22. परन्तु शीघ्रता कर! वहाँ भाग जा, क्योंकि जब तू वहाँ व पहुँच जाता है, मैं विनाश नहीं ढा सकता।” उस नगर का नाम आगे चलकर सोअर पड़ा जिसका अर्थ है, “महत्वपूर्ण नहीं” क्योंकि लूत ने कहा था कि वह नगर छोटा सा है।

23. सूर्योदय होते-होते लूत और उसका परिवार उस नगर में पहुँच गए जिसका नाम सोअर था।

24. तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर आग और जलता हुआ गंधक बरसाया, जैसे कि आकाश से वर्षा हो रही हो।

25. इस प्रकार उसने उन नगरों को और उनके सब निवासियों को नष्ट कर दिया। उसने उस तराई में पेड़-पौधों समेत सब कुछ नष्ट कर दिया।

26. परन्तु लूत की पत्नी रुक कर पीछे पलटी कि देखें क्या हो रहा है, परिणाम-स्वरूप वह मर गई और उसका शरीर नमक का स्तम्भ हो गया।

27. प्रातःकाल के समय अब्राहम सोकर उठा और उस स्थान पर गया जहाँ वह यहोवा के समक्ष खड़ा था।

28. उसने सदोम और अमोरा पर दृष्टि की तो दृष्य देखकर चकित हो गया क्योंकि, उस तराई में धूंआ उठ रहा था, जैसे कि एक विशाल भट्टी से।

29. परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को नष्ट किया परन्तु अब्राहम की सुधि लेना न भूला और लूत के नगरों को नष्ट करते समय लूत को बचा लिया।

30. लूत सोअर में रहने से डरता था, अतः वह वहाँ से निकल कर अपनी दोनों पुत्रियों के साथ पहाड़ों में जाकर एक गुफा में रहने लगा।

31. एक दिन बड़ी पुत्री ने छोटी पुत्री से कहा, “हमारा पिता बूढ़ा हो गया है और इस स्थान में ऐसा कोई नहीं जो संसार की रीति पर हमारे पति हों।

32. अतः हम अपने पिता को मदिरापान करा कर बेसुध कर दें और उसके साथ सोएं कि वह जान न पाए। इस प्रकार हम अपने वंश के मूल पिता उत्पन्न करें।

33. अतः उस रात उन्होंने मदिरापान कराकर अपने पिता को बेसुध किया और बड़ी पुत्री अपने पिता के साथ सोई। वह बेसुध था इसलिए उसे बोध नहीं हुआ कि वह कब उसके पास सोई और कब चली गई।

34. अगले दिन उसकी बड़ी पुत्री ने उसकी छोटी पुत्री से कहा, “सुन, मैं कल रात पिता के साथ सोई थी। हम उसे आज भी मदिरापान कराकर बेसुध कर दें और आज तू जाकर उसके साथ सोना, इस प्रकार तू भी गर्भवती होकर पुत्र प्राप्त कर सकती है।”

35. अतः उस रात भी उन्होंने अपने पिता को मदिरापान करा कर बेसुध कर दिया और छोटी पुत्री पिता के साथ सोई। इस बार भी वह बेसुध स्थिति में जान नहीं पाया कि वह कब आई और कब चली गई।

36. इस प्रकार लूत की दोनों पुत्रियां उससे गर्भवती हुईं।

37. बड़ी पुत्री ने समय आने पर एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम उसने मोआब रखा। वह मोआबियों का मूल पिता हुआ।

38. छोटी पुत्री से भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह अम्मोनियों का मूल पिता हुआ।

अध्याय 20.

1. अब्राहम मेम्ने से विदा होकर दक्षिण-पश्चिम में नेगेव मरुस्थल में चला गया। वहाँ वह कादेश और शूर के मध्य रहने लगा। वह गरार में परदेशी होकर रह रहा था। वहाँ उसने लोगों से कहा कि सारा उनकी बहन है, पत्नी नहीं। तब गरार के राजा अबीमेलेक ने अपने कर्मियों को भेजा और सारा को अपने पास बुलवा लिया और उन्होंने सारा को उसकी पत्नी बनाया।

2.

3. परन्तु परमेश्वर ने अबीमेलेक को रात में स्वप्न में दर्शन देकर कहा, “सुन! तू मर जाएगा क्योंकि जिस स्त्री को तू ले आया है, वह किसी और पुरुष की पत्नी है।”

4. परन्तु अबीमेलेक उसके साथ सोया नहीं था। अतः उसने कहा, “हे प्रभु, मेरी प्रजा और मैं निर्दोष हूँ, तो क्या तू हमें घात करेगा?

5. अब्राहम ने स्वयं कहा है, ‘वह मेरी बहन है’, और उसने भी कहा है, ‘वह मेरा भाई है।' मेरी तो बुराई करने की मनशा नहीं थी और न ही मैंने बुरा किया है।”

6. परमेश्वर ने उससे कहा, “हां, मैं जानता हूँ कि तू बुरा काम करना नहीं चाहता था। यही कारण है कि मैंने तुझे मेरी दृष्टि में अनर्थ करने से रोक दिया है। उसे स्पर्श करने की अनुमति मैंने तुझे इसलिए नहीं दी।

7. अब तू उस पुरुष की पत्नी को उसे लौटा दे क्योंकि वह एक भविष्यद्वक्ता है। वह तेरे लिए प्रार्थना करेगा और तू जीवित रहेगा। परन्तु यदि तूने उसे अपनी पत्नी नहीं लौटाई तो तू मर जाएगा। और तेरे परिवार के सब सदस्य भी निश्चय ही मर जायेंगे।”

8. अगले दिन सुबह होते ही अबीमेलेक ने अपने सब अधिकारियों को बुलवाया और उन्हें पूर्ण विवरण सुनाया। सुन कर वे सब बहुत डर गए कि परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देगा।

9. तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलवाया और उससे कहा, “तुझे हमारे साथ ऐसा नहीं करना था। क्या मैंने तेरे साथ बुराई की है? क्या मैंने तुझे विवश किया कि तू मुझे और मेरी प्रजा को एक महापाप का दोषी बनाना चाहे? तूने मेरे साथ जो किया है, वह तुझे नहीं करना था।

10. तूने ऐसा क्यों किया?”

11. अब्राम ने उससे कहा, “मैं ने कहा कि वह मेरी बहन है क्योंकि मुझे भय था, ‘यहां के लोग परमेश्वर का भय नहीं मानते हैं। वे निश्चय ही अनर्थ विचारते और करते हैं। इसलिए वे मेरी पत्नी को पाने के लिए मुझे घात करेंगे।’

12. इसके अतिरिक्त सारै को वास्तव में मेरी बहन कहा जा सकता है। क्योंकि उसका पिता और मेरा पिता एक ही है परन्तु हमारी माताएं अलग-अलग हैं। वह एक अन्य माता की पुत्री है और मैंने उससे विवाह कर लिया।

13. जब परमेश्वर ने मुझसे कहा कि मैं अपने पिता के कुटुम्ब से दूर हो जाऊं तब मैंने उससे कहा, “तू अपनी स्वामीभक्ति इस प्रकार मुझ पर प्रकट करना कि हम जहां भी जाएं, मेरे विषय यही कहना कि मैं तेरा भाई हूं।”

14. यह सुन कर अबीमेलेक ने कुछ भेड़ें और मवेशी अब्राम को दिए। उसने अब्राम को कुछ दास-दासियां भी दीं और उसकी पत्नी सारा उसे लौटा दी।

15. अबीमेलेक ने अब्राम से कहा, “सुन! मेरा देश तेरे सामने है। तू जहां चाहे, वहां निवास कर।” और उसने सारा से कहा, “देख! मैं तेरे भाई को चांदी के एक हजार टुकड़े देता हूं। यह इसलिए कि इस बात की चर्चा फिर कभी कोई नहीं कर पाए और कहे कि तूने कोई अनुचित काम किया है।”

16. तब अब्राम ने प्रार्थना की और परमेश्वर ने अबीमेलेक की पत्नी और उसकी दासियों को चंगा किया और वे सन्तानोत्पत्ति के योग्य हो गई।

17. यह इसलिए कि यहोवा ने अबीमेलेक के कुटुम्ब में हर एक स्त्री को सन्तानोत्पत्ति से वंचित कर दिया था क्योंकि वह अब्राम की पत्नी सारा को ले आया था।

अध्याय 21

1. यहोवा ने सारा के साथ अत्यधिक दयालु व्यवहार किया ठीक वैसा ही जैसा उसने अपनी प्रतिज्ञा में कहा था। उसने सारा के साथ अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति की,

2. और वह गर्भवती हुई और अब्राम की वृद्धावस्था में उसके लिए उसने एक पुत्र को जन्म दिया क्योंकि परमेश्वर ने उसकी उस आयु में उससे प्रतिज्ञा की थी।

3. अब्राम ने सारा के इस पुत्र का नाम इसहाक रखा।

4. उसने आठ दिन हो जाने पर इसहाक का खतना भी किया जैसी परमेश्वर की आज्ञा थी।

5. इसहाक के जन्म के समय अब्राहम सौ वर्ष की आयु का था।

6. सारा ने कहा, “यद्यपि मैं संतान न होने के कारण दुखी थी, परमेश्वर ने अब मुझे आनंद से हंसने के योग्य बना दिया है। और सब लोग जो मेरे लिए परमेश्वर के इस काम को देख कर मेरे साथ प्रफल्लित होंगे।”

7. उसने यह भी कहा, “अब्राहम से कोई भी नहीं कह सकता था कि एक दिन मैं संतान को दूध पिलाऊंगी परन्तु मैंने अब्राहम को उसकी वृद्धावस्था में पुत्र दिया है।”

8. वह शिशु बढ़ता गया और जब उसका दूध छुड़ाने का समय आया तब अब्राहम ने उत्सव के लिए एक बड़ा भोज किया।

9. एक दिन ऐसा हुआ कि सारा ने इश्माएल को इसहाक का उपहास करते देखा।

10. अतः उसने अब्राहम से कहा, “उस मिस्री दासी को और उसके पुत्र को दूर कर! मैं कदापि नहीं चाहती कि उस दासी का पुत्र मेरे पुत्र के उत्तराधिकार का भागी हो।”

11. अब्राहम इस बात पर अप्रसन्न था क्योंकि वह अपने पुत्र इश्माएल से भी लगाव रखता था।

12. परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “अपने पुत्र इश्माएल के लिए खेदित न हो। न ही अपनी दासी हाजिरा के लिए। सारा तुझ से जो कुछ कहती है उसे कर क्योंकि जिस वंश की मैंने तुझ से प्रतिज्ञा की है उनका मूल पिता इसहाक ही होगा।

13. परन्तु मैं तेरी दासी हाजिरा के पुत्र को भी एक बड़ी जाति का मूल पिता बनाऊंगा क्योंकि अन्ततः वह तेरा ही पुत्र है।

14. अतः अब्राहम अगले दिन भोर को जागा और भोजन व्यवस्था करके एक मशक में पानी भी भरा और हाजिरा के कंधे पर रख कर उसे इश्माएल को संभला कर उन्हें विदा किया। वे निकल कर बीर शीबा के जंगल में चले गए।

15. जब हाजिरा और इश्माएल के पास पीने का पानी समाप्त हो गया तब उसने इश्माएल को एक बड़ी झाड़ी के नीचे बैठा दिया।

16. और कुछ दूर जाकर अर्थात जितनी दूर को तीर छोड़े, बैठ गई। वह सोचती थी, “मैं अपने पुत्र को मरते हुए नहीं देख सकती।” और वहां बैठ कर वह ऊंची आवाज में रोने लगी।

17. परमेश्वर ने इश्माएल का अंर्तनाद सुन कर विलम्ब नहीं किया और एक स्वर्गदूत को नियुक्त किया कि स्वर्ग से हाजिरा को पुकारे। उसने हाजिरा से कहा, “हाजिरा, क्या बात है? मत डर क्योंकि परमेश्वर ने मेरे पुत्र का रोना सुना है।

18. जा और अपने पुत्र को उठा और उसे साहस बंधा क्योंकि मैं उसके वंशजों को एक बड़ी जाति बनाऊंगा।”

19. और परमेश्वर ने उसे एक कूआं दिखाया। उसने उस कूएं से जल भर कर इश्माएल को पिलाया।

20. जंगल में बढ़ते हुए उस बालक की परमेश्वर ने सहायता की और वह एक दक्ष धनुर्धारी बना।

21. वह पारान नामक जंगल में रहने लगा। हाजिरा ने उसके लिए एक मिस्री युवति लाई और उसका विवाह किया।

22. उस समय राजा अबीमेलेक और उसके सेनापति पीकोल ने अब्राहम से कहा, “यह तो स्पष्ट है कि परमेश्वर तेरे हर एक काम में तेरे साथ रहता है।

23. अतः अब हमसे भी गंभीर शपथ खा क्योंकि परमेश्वर सुनता है, कि तू मुझसे और मेरी संतान से वरन् वंशजों से कभी छल नहीं करेगा। मेरे साथ और इस देश की प्रजा के साथ जहां तू रहता है, निष्ठा निभाएगा। मेरे साथ वैसी ही निष्ठा निभाएगा जैसी मैंने तेरे साथ निभाई है।”

24. अतः अब्राहम ने ऐसा करने की शपथ खाई।

25. अब्राहम ने अबीमेलेक से अपने एक कूएं की भी शिकायत की जिसे उसके सेवकों ने उससे बलपूर्वक छीन लिया था।

26. अबीमेलेक ने उससे कहा, “मैं कूएं के बारे में तो कुछ नहीं जानता। तूने इससे पहले तो इस विषय मुझे कुछ नहीं बताया कि किसने यह काम किया है।

27. अब्राहम ने कुछ भेड़ें और मवेशी लाकर अबीमेलेक को दिए और उन दोनों ने आपस में शान्ति की विधिवत् शपथ खाई।

28. अब्राहम ने अपने पशु धन में से सात भेड़ की बच्चियां चुन लीं।

29. इस पर अबीमेलेक ने उससे पूछा, ‘तू ने इन सात भेड़ की बच्चियों को क्यों चुन लिया है?”

30. अब्राहम ने उसे उत्तर दिया, मैं चाहता हूं कि तू इन भेड़ की बच्चियों को ग्रहण कर। इस प्रकार मेरी यह भेंट सब के समक्ष एक प्रमाण होंगी कि यह कूआं मेरा है। क्योंकि मैंने इसे खोदा है।”

31. अतः अबीमेलेक ने उन भेड़ की बच्चियों को ग्रहण किया। तब अब्राहम ने उस स्थान का नाम बीरशेबा रखा जिसका अर्थ है, “शपथ का कूआं”, क्योंकि अब्राहम और अबीमेलेक ने उस स्थान में परस्पर शान्ति रखने की शपथ खाई थी।

32. बीरशेबा में संधि स्थापित करके अबीमेलेक और उसके सेनापति पीकोल लौट कर पलिश्तियों के देश आ गए।

33. फिर अब्राहम ने वहां झाऊ का एक सदाबहार वृक्ष लगाया और शाश्वत परमेश्वर की उपासना की।

34. अब्राहम पलिश्तियों के देश में परदेशी होकर लम्बे समय तक रहा।

अध्याय 22

1. कुछ वर्ष बीत जाने पर परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली कि वह उसकी आज्ञा मानेगा या नहीं। उसने अब्राहम को पुकारा और अब्राहम ने कहा, “मैं यहां हूं।”

2. परमेश्वर ने उससे कहा, “मैंने तुझे एकमात्र पुत्र दिया है और तू उससे बहुत प्रेम करता है। अपने पुत्र को साथ लेकर मोरिय्याह देश को जा और वहां मैं तुझे एक पर्वत दिखाऊंगा। उस पर उसे होमबलि करके चढ़ा।”

3. अतः अब्राहम अगले दिन सुबह उठा और अपने गधे पर काठी कस कर अपने पुत्र इसहाक और दो सेवकों को साथ लेकर चल पड़ा। उसने होमबलि के लिए कुछ लकड़ियां भी काट लीं। वे परमेश्वर के निर्दिष्ट स्थान के लिए रवाना हो गए।

4. तीसरे दिन अब्राहम ने आंखें उठा कर उस स्थान को दूर से देखा जहां परमेश्वर चाहता था कि वह जाए।

5. अब्राहम ने अपने सेवकों से कहा, “तुम दोनों यहां गधे के पास रूको जबकि इसहाक और मैं वहां जाते हैं कि परमेश्वर की उपासना करें। तदोपरान्त हम लौट कर आयेंगे।”

6. तब अब्राहम ने होमबलि के लिए साथ लाई लकड़ियां लीं और इसहाक के कंधे पर रख दीं कि वह उन्हें उठा कर चले। अब्राहम ने आग जलाने के लिए साधन और छुरा भी लिया। और पिता-पुत्र दोनों चल पड़े।

7. तब इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, “पिताजी”। अब्राहम ने उत्तर दिया, “हां, मेरे पुत्र। मैं यहां हूं।” इसहाक ने कहा, “हमारे पास आग जलाने का साधन और लकड़ी तो है परन्तु होमबलि के लिए बछड़ा कहां है?”

8. अब्राहम ने उससे कहा, “मेरे पुत्र, परमेश्वर ही होमबलि के लिए मेढ़े का प्रबंध करेगा।” अतः वे दोनों साथ-साथ आगे बढ़ते रहे।

9. अन्ततः, वे उस स्थान में पहुंचे जिसके निर्देश परमेश्वर ने दिया था। वहां अब्राहम ने पत्थरों से एक वेदी बनाई और उस पर लकड़ियां रख दी तथा इसहाक को बांध कर लकड़ियों पर रख दिया।

10. फिर अब्राहम ने अपने पुत्र का वध करने के लिए छुरा उठाया।

11. परन्तु यहोवा के दूत ने उसे स्वर्ग से पुकारा, “अब्राहम, हे अब्राहम!” अब्राहम ने प्रतिउत्तर में कहा, “हां, मैं यहां हूं।”

12. उस स्वर्गदूत ने कहा, “बालक को हानि नहीं पहुंचाना क्योंकि मैं जान गया हूं कि तू मेरी आज्ञा मानता है और मेरा सम्मान करता है। इसका प्रमाण यही है कि तूने अपने एकलौते पुत्र को बलि करने में भी संकोच नहीं किया।”

13. तब अब्राहम ने निकट ही की झाड़ियों में एक मेढ़ें को सींगों से उलझा हुआ देखा। अब्राहम ने जाकर उस मेढ़े को पकड़ा और उसका वध करके अपने पुत्र के स्थान में उसे होमबलि करके चढ़ाया।

14. इस कारण अब्राहम ने उस स्थान का नाम “यहोवा प्रबंध करेगा” रखा। आज तक वह पर्वत, “यहोवा का पर्वत जहां वह प्रबंध करता है”, कहलाता है।

15. यहोवा के स्वर्गदूत ने दूसरी बार अब्राहम को स्वर्ग से पुकारा।

16. उसने अब्राहम से कहा, “मैं यहोवा, यह घोषणा करता हूं कि तूने मेरी आज्ञा मानी और अपने एकमात्र पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा। इस कारण मैं आज गंभीर शपथ खाता हूं और स्वयं अपना गवाह हूं, कि “एक दिन तेरे वंशज आकाश के सितारों और समुद्र की रेत के कणों के सदृश्य असंख्य होंगे। तेरे वंशज अपने बैरियों को पराजित करके उनके नगरों पर अधिकार कर लेंगे।

17. तू ने मेरी आज्ञा मानी है। इस कारण तेरे वंशजों के द्वारा पृथ्वी की सब जातियों के लोग आशिषित होंगे।”

18. इसके बाद अब्राहम और इसहाक अपने प्रतीक्षारत सेवकों के पास लौट आए और वे सब बीरशेबा को लौट आए। अब्राहम और उसका समुदाय वहीं रहता रहा।

19. इन बातों के बाद किसी ने अब्राहम को समाचार दिया, “तेरे भाई नाहोर की पत्नी मिल्का ने भी संतानों को जन्म दिया है।

20. उसके बड़े पुत्र का नाम ऊज था और ऊज के भाई का नाम बूज और कमूएल था। कमूएल अराम का पिता हुआ।

21. कमूएल के बाद खेसेद, तब हंजो, पिल्दाश, यिदलाप और बेयूएल।

22. बेथूएल रिबका का पिता था। अब्राहम के भाई नाहोर की पत्नी मिल्का के ये ही आठ पुत्र थे।

23. नाहोर की एक रखैल भी थी जिसका नाम रूम था। उससे भी चार पुत्र उत्पन्न हुएः तेबह, गहम, तहश और माका।

अध्याय 23

1. 127 वर्ष की आयु में

2. कियर्थअर्बा में सारा का देहान्त हो गया। कियर्थअर्बा का मान अब हेब्रोन कहलाता है जो कनान देश में है और अब्राहम ने उसके लिए शोक किया।

3. फिर शव के पास से उठ कर हित्तियों से कहने लगा,

4. “मैं तुम लोगों के मध्य एक अल्पकालिक निवासी हूं। इस कारण मेरे पास अपनी पार्थिव पत्नी को दफन करने के लिए कोई स्थान नहीं है।”

5. उन्होंने अब्राहम से कहा,

6. “महोदय, तू हमारे मध्य एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। हमारी किसी भी कब्र में से एक को चुन ले और अपनी पत्नी के पार्थिव शरीर को उसमें रख। तेरी पत्नी की कब्र होने के लिए तुझे उस स्थान को देने से कोई इंकार नहीं करेगा।”

7. तब अब्राहम ने खड़े होकर हित्तियों को जो उस स्वामियों अधिकारी थे, दण्डवत किया।

8. अब्राहम ने उनसे कहा, “यदि तुम यह कहते हो कि तुम मेरी पत्नी के पार्थिव शरीर को यहां दफन करने दोगे तो सुनो, सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरा निवेदन है,

9. कि वह मुझे अपनी मकपेला वाली गुफा, जो मैदान के छोर पर है, मोल दे। वह उसका पूरा मूल्य लेकर तुम सब के समक्ष मुझे दे दे। इस प्रकार मुझे एक दफन स्थल प्राप्त हो जाएगा।”

10. एप्रोन भी वहां उनके मध्य नगर के फाटक पर उपस्थित था। उसके साथ अनेक अन्य हित्ती भी उपस्थित थे। उसने अब्राहम का निवेदन सुना।

11. एप्रोन ने कहा, “नहीं महोदय, मेरी बात सुनो। मैं तुझे वह खेत और गुफा भी निर्मोल देता हूं जिसके गवाह यह सब उपस्थित जन होंगे। कृपया अपनी पत्नी को वही दफन कर।”

12. अब्राहम ने फिर उन सब को दण्डवत् किया।

13. और सब के सामने एप्रोन से कहा, “नहीं, मेरी बात सुन। यदि तुझे स्वीकार हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दूंगा। मुझे उसकी कीमत बता और मैं तुझे वह दूंगा। यदि तू स्वीकार करे तो वह भूमि मेरी होगी और मैं अपनी पत्नी का पार्थिव शरीर वहां रखूंगा।”

14. एप्रोन ने अब्राहम से कहा,

15. “महोदय, मेरी बात सुनो। उस भूमि का मूल्य चार सौ चांदी के टुकड़े है। परन्तु उसका मूल्य तेरे लिए और मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखता। मुझे उतना दे और अपनी पत्नी के पार्थिव शरीर को वहां रख।”

16. अब्राहम ने एप्रोन की बात मान कर उसके कथनानुसार चार सौ चांदी के टुकड़े तौल कर उसे दे दिए जिसके सब गवाह थे। उसने विक्रेताओं के मानक के अनुसार चांदी तौल कर दी थी।

17. अतः मेम्रे के निकट मकपेला का वह खेत जो एप्रोम का था वह गुफा, सब वृक्ष तथा उसकी सीमा पर के सब वृक्ष अब्राहम की सम्पदा हो गए।

18. इस प्रकार अब्राहम ने उस भूमि को खरीद लिया और नगर के फाटक पर जितने भी हित्ती उपस्थित थे वे उस सौदे के गवाह हुए।

19. तदोपरान्त अब्राहम ने मकपेला की उस गुफा में अपनी पत्नी सारा के पार्थिव शरीर को रखा जो मेम्ने के निकट था और हेब्रोन कहलाया। यह कनान में है।

20. इस प्रकार वह खेत और वह गुफा हित्तियों से क्रय करके अधिकारिक रूप से अब्राहम की हो गई कि उसके लिए दफन स्थल हो।

अध्याय 24.

1. अब्राहम अब क्यों वृद्ध हो गया था और यहोवा ने उसे अनेक आशिषें दी थीं।

2. एक दिन अब्राहम ने अपनी संपूर्ण सम्पदा के अधिकारी अपने दास से जो वृद्ध भी था, कहा, “अपना हाथ मेरी जांघो के मध्य रखकर शपथ खा कि जो मैं कहता हूँ उसे तू पूरा करेगा।

3. यह जानते और मानते हुए कि आकाश और पृथ्वी का सृजनहार परमेश्वर सुन रहा है, प्रतिज्ञा कर कि तू मेरे पुत्र अब्राहम के लिए इन कनानियों में से, जिनके मध्य हम वास करते हैं, पत्नी नहीं लाएगा।

4. इसकी अपेक्षा मेरे देश और मेरे लोगों के पास जा और उनमें से मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक पत्नी ला।”

5. उस सेवक ने अब्राहम से पूछा “यदि मैं तेरे परिजनों में से किसी स्त्री को खोजूं और वह मेरे साथ इस देश में आना न चाहे तो मैं क्या करूं? क्या मैं तेरे पुत्र को उस देश में ले जाऊ जहाँ से तू आया है कि वह पत्नी खोजे और वहीं रह जाए?”

6. अब्राहम ने उसे उत्तर दिया, “नहीं! यह सुनिश्चित कर कि तू मेरे पुत्र को वहाँ नहीं ले जाएगा।

7. आकाश और पृथ्वी का सृजनहार परमेश्वर यहोवा मुझे यहाँ लाया है। वह मुझे अपने पिता के कुटुम्ब और मेरे परिजनों के देश से निकालकर लाया है। उसने मुझसे बातें कीं और मुझसे विधिवत् प्रतिज्ञा भी की है। उसने कहा है, ‘मैं यह कनान देश तेरे वंशजों को दूंगा।’ वह एक स्वर्गदूत को तेरे आगे-आगे भेजेगा और तुझे सफल बनाएगा कि तू मेरे पुत्र के लिए वहाँ एक पत्नी चुने और उसे यहाँ रहने के लिए अपने साथ ले आए।

8. परन्तु यदि वह स्त्री जिसे तू चुनेगा तेरे साथ आना न चाहे तो तू अपनी शपथ से मुक्त हो जाएगा। बस, एक ही काम जो तुझे नहीं करना है, वह है कि तू मेरे पुत्र को वहाँ नहीं ले जाएगा।”

9. अतः उस सेवक ने अब्राहम की जाँघों के बीच में हाथ रखकर इस बात की गंभीर शपथ खाई।

10. तब उस सेवक ने अपने स्वामी के दस ऊँट लिए और उन पर वह सब सामान रखा जो उसके स्वामी ने साथ ले जाने को दिया था। और उत्तरी मीसोपोतामिया के अराम नाहोर नगर के लिए कूच किया।

11. जब वह सेवक नाहोर नगर पहुंचा तब दोपहर बाद का समय हो गया था। यह वह समय था जब स्त्रियां कुएं पर पानी भरने आती थीं। उसने नगर के बाहर उस कुएं के पास अपने ऊँटों को बैठा दिया।

12. तब उसने प्रार्थना की, “हे परमेश्वर यहोवा जिसकी उपासना मेरा स्वामी करता है, आज मुझे सफलता प्रदान कर और मेरे स्वामी, अब्राहम के विश्वास का मान रख!

13. सुन, मैं, पानी के कुएं के पास खड़ा हूँ और इस नगर की पुत्रियां पानी भरने आ रही हैं।

14. मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मैं जिस कन्या से कहूं, “कृप्या अपना पात्र झुकाकर मुझे पानी पिला दे”, और वह कहे, ‘ले, पीले, मैं तेरे ऊँटों के लिए भी पानी निकाल दूंगी कि वे भी पीएं।’ तो मुझे विश्वास हो जाएगा कि वही वह स्त्री है जिसे तूने अपने सेवक, इसहाक के लिए चुन लिया है और मुझे निश्चय हो जाएगा कि तूने मेरे स्वामी के विश्वास का मान रखा है।”

15. इससे पूर्ण कि उसकी प्रार्थना समाप्त होती, एक युवती जिसका नाम रिबका था, वहाँ आई, उसके कंधे पर पानी के लिए एक पात्र था। वह अब्राहम के छोटे भाई नाहोर की पत्नी मिल्का के पुत्र बथूएल की पुत्री थी।

16. वह अति सुन्दर थी और कुंवारी थी। उसके साथ कभी कोई पुरुष नहीं सोया था। वह कुएं में उतरी और अपना पात्र पानी से भरकर ऊपर आई।

17. अब्राहम का दास दौड़ कर उसके पास गया और कहा, “कृप्या अपने पात्र में से मुझे थोड़ा पानी पिला दे।”

18. उसने कहा, “यहोवा, अवश्य पीएं और पात्र को कंधे पर से उतार कर हाथों में लिया कि उसे पानी पिलाए। उसने यह भी कहा, “मैं तेरे ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी कि वे भी पीकर तृप्त हों।”

19.

20. उसने तत्काल ही पशुओं के जल कुण्ड में अपनी पात्र का पानी खाली कर दिया और कुएं में जा जाकर सब ऊँटों के लिए पानी ले आई।

21. दास अवाक् उसे देखता रह गया। वह जानना चाहता था कि यहोवा ने उसकी यात्रा सफल की है या नहीं।

22. अन्त में जब ऊँट पानी पी चुके तब उस सेवक ने छः ग्राम की नथ और दो सोने के कंगन जिनमें प्रत्येक का भार 110 ग्राम का था निकाले और रिबका को दिए कि वह उन्हें पहन ले।

23. तदोपरान्त उसने पूछा, “मुझे बता कि तू किसकी पुत्री है और यह भी बता कि तेरे पिता के घर में मेरे और मेरे साथियों के लिए स्थान है कि हम वहाँ रात बिताएं?”

24. उसने उत्तर दिया, “मेरे पिता का नाम बथूएल है, वह नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का का पुत्र है।

25. और हमारे पास पर्याप्त स्थान है कि तू और तेरे साथ वहाँ रात को विश्राम कर पाएं। हमारे पास तेरे ऊँटों को खिलाने के लिए भी बहुत पुआल और चारा है।”

26. इस पर अब्राहम के सेवक ने यहोवा को दण्डवत् किया और उसकी उपासना की।

27. उसने कहा, “मैं यहोवा को धन्यवाद कहता हूँ जिसकी उपासना मेरा स्वामी अब्राहम करता है। उसने लगातार सिद्ध किया है कि वह मेरे स्वामी के प्रति विश्वासयोग्य और सच्चा है। यहोवा ने मुझे इस यात्रा में सीधा मेरे स्वामी के परिजनों में पहुंचा दिया है।”

28. वह युवति भागी और अपनी माता के परिवार में सबको उस घटना के बारे में सुनाया।

29. रिबका के भाई का नाम लाबान था। वह तत्काल ही उस कुएं के पास खड़े अब्राहम के सेवक से भेंट करने गया।

30. वह अपनी बहन को कंघन और नथ पहने देख तथा रिबका से उस पुुरुष की बातें सुनकर आश्चर्य करता था। उसने जाकर देखा कि वह पुरुष ऊँटों के पास उस कुएं के निकट खड़ा है।

31. उसने अब्राहम के सेवक से कहा, “हे यहोवा के धन्य जन तू यहाँ क्यों खड़ा है? आ मैंने तेरे लिए घर में स्थान तैयार किया है और तेरे ऊँटों के लिए भी व्यवस्था की है।

32. अतः वह सेवक उसके घर गया और लाबान के सेवकों ने ऊँटों पर से सामान उतारा। वे ऊँटों के लिए चारा और अब्राहम के सेवक तथा उसके साथियों के लिए पांव धोने को पानी ले आए।

33. उन्होंने उसके सामने खाने के लिए भोजन परोसा परन्तु उसने कहा जब तक कि मैं तुम लोगों के समक्ष अपना प्रयोजन स्पष्ट न कर दूं भोजन नहीं करूंगा।” अतः लाबान ने कहा, “हमें सुना।”

34. अतः उसने कहा, “मैं अब्राहम का सेवक हूँ।

35. यहोवा ने मेरे स्वामी को विपुल आशिषें दी हैं और वह बहुत धनवान हो गया है। यहोवा ने उसे बहुत भेड़-बकरियां और मवेशी दिए हैं और सोना-चांदी भी बहुत दिया है, दास-दासियां और ऊँट तथा गधे भी उसके पास बहुत हैं।

36. मेरे स्वामी की पत्नी सारा से उसे वृद्धावस्था में एक पुत्र प्राप्त हुआ है और मेरे स्वामी ने उसे अपनी संपूर्ण सम्पदा दे दी है।

37. मेरे स्वामी ने मुझसे गंभीर प्रतिज्ञा करवाई है और कहा है, “मेरे पुत्र के लिए कनानियों की पुत्रियों से पत्नी न लाना, जहाँ हम रहते हैं।

38. इसकी अपेक्षा मेरे पिता के घर मेरे ही कुल में जाना और उनसे मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी लाना।

39. तब मैंने अपने स्वामी से पूछा, “यदि वे मुझे अपनी पुत्री दे दें परन्तु वह यहाँ आना न चाहे तो मैं क्या करूं?”

40. उसने कहा, “यहोवा जिसका मैं सदैव आज्ञापालन करता आया हूँ, वह तेरे आगे अपना स्वर्गदूत भेजेगा और तेरी यात्रा को सफल करेगा। वह मेरे पुत्र के लिए मेरे कुल और मेरे पिता के घराने में से एक पत्नी लाने के योग्य करेगा।

41. परन्तु यदि मेरा कुल उसे तेरे साथ आने न दे तो तू मेरी अवज्ञा के श्राप से मुक्त हो जाएगा।

42. मैं आज जब कुएं पर आया तो मैंने प्रार्थना की, “मेरे स्वामी अब्राहम की उपासना के आधार, हे यहोवा, यदि तू इस यात्रा में मुझे सफल करना चाहता है तो कृप्या मेरे लिए ऐसा होने देः

43. मैं इस कुएं के निकट खड़ा हूँ जहाँ स्त्रियां जल भरने आती हैं। मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मैं जिस युवति से कहूं, ‘मुझे अपने पात्र से पानी पिला दे’,

44. तो वह कहे, ‘हाँ पीले, मैं तेरे ऊँटों को भी पानी पिला दूंगी', तो वह मेरे स्वामी के पुत्र के लिए तेरी चुनी हुई पत्नी होगी!

45. इससे पूर्व कि मेरी प्रार्थना समाप्त होगी, रिबका पात्र लिए हुए कुएं पर पहुंची और जाकर कुएं से पानी भरकर ऊपर आई। मैंने उससे कहा, “कृप्या मुझे पानी पिला दे!’

46. तो उसने तुरन्त ही अपना पात्र उतार कर कहा, ‘ले पीले! मैं तेरे ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी।’

47. तब मैंने उससे पूछा, ‘तू किसकी पुत्री है?’ उसने कहा, “मैं नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के पुत्र बथूएल की पुत्री हूँ।’ तब मैंने उसे नाक में पहनने को नथ और हाथों में पहनने को कंघन दिए।

48. और यहोवा की उपासना हेतु दण्डवत् किया और मेरे स्वामी अब्राहम की उपासना के आधार यहोवा को धन्यवाद कहा कि उसने अपने स्वामी के पुत्र के लिए पत्नी लाने को सही मार्ग दिखाकर मेरे स्वामी के भाई की पोती तक पहुंचाया।

49. अब यदि तुम मेरे स्वामी का विस्तृत परिवार होने के नाते उसके साथ विश्वास-योग्यता निभाना चाहते हो तो कह दो कि जो मैं कहता हूँ वह करोगे और यदि नहीं तो वह भी स्पष्ट कह दो कि मैं जान पाऊँ कि मुझे आगे क्या करना है।”

50. लाबान और बथूएल ने कहा, “स्पष्ट है कि यह यहोवा की ओर से है। अतः हम नहीं कह सकते कि यह करना या न करना उचित है।

51. रिबका तेरे सामने है। उसे ले और विदा हो कि वह तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो, ठीक वैसे ही जैसे यहोवा ने प्रकट किया है।”

52. यह सुनकर अब्राहम के सेवक ने यहोवा को दण्डवत् किया।

53. और सोने-चांदी के आभूषण तथा वस्त्र निकालकर रिबका को दिए और उसके भाई लाबान एवं उसकी माता को भेंट अर्पित की।

54. तदोपरान्त अब्राहम के सेवक और उसके साथियों ने भोजन किया और रात वहीं बिताई। अगले दिन सुबह अब्राहम के सेवक ने विदा होने की अनुमति मांगी, “मुझे अब अपने स्वामी के पास लौट जाने दो।”

55. परन्तु रिबका के भाई और उसकी माता ने कहा, “कन्या को हमारे साथ दस दिन रहने दे तदोपरान्त उसे ले जाना।”

56. परन्तु अब्राहम के सेवक ने कहा, “यहोवा ने मेरी यात्रा सफल की है, अतः विलम्ब न करो। मुझे उसे अपने स्वामी के पास जाने दो।”

57. उन्होंने कहा, “हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं कि वह क्या चाहती है।”

58. अतः उन्होंने रिबका को बुलाकर पूछा, “क्या तू इस पुरुष के साथ अभी जाना चाहती है?” उसने कहा, “हाँ, मैं जाऊँगी।”

59. अतः उन्होंने अब्राहम के सेवक के साथ रिबका को उसकी सेविकाओं समेत विदा किया क्योंकि वे आजीवन उसकी सेवा करती रही थी।

60. उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि रिबका को आशिष दे और रिबका से कहा, “हमारी बहन, हमारा आशीर्वाद है कि यहोवा तुझे असंख्य वंश की माता बनाए और तेरा वंश घृणा करने वालों पर पूर्ण विजय प्राप्त करे।”

61. तब रिबका और उसकी सेविकाएं तैयार होकर ऊँटों पर सवार अब्राहम के सेवक के साथ चलीं। उसने रिबका को लिया और प्रस्थान किया।

62. इस समय इसहाक यहूदा के दक्षिणी जंगल में रहता था। वह वीर लहैरोई नाम के कुएं से वहाँ आया था।

63. एक दिन वह संध्या-काल के समय ध्यान करने हेतु मैदान में गया और ऊँटों को उस ओर आते देख चकित हुआ।

64. रिबका ने भी आँखें उठाई तो इसहाक को देखा। वह ऊँट पर से उतर गई।

65. और अब्राहम के सेवक से पूछा, “यह पुरुष कौन है जो आ रहा है?” सेवक ने उत्तर दिया, “वह मेरा स्वामी इसहाक है।” अतः रिबका ने अपने चेहरे पर परदा डाल लिया। यह शिष्टाचार था।

66. अब्राहम के सेवक ने इसहाक को पूरा हाल सुनाया।

67. तब इसहाक रिबका को अपनी माता के तंबू में ले गया और वह उसकी पत्नी हो गई। उसने उससे प्रेम किया। इस प्रकार इसहाक ने अपनी माता की मृत्यु के विषय शान्ति पाई।

अध्याय 25.

1. सारा के मरणोपरान्त कुछ समय बाद अब्राहम ने दूसरा विवाह किया। इसकी दूसरी पत्नी का नाम कतूरा था।

2. कतूरा के छः पुत्र उत्पन्न हुए जिनके नाम थेः जिम्रान, योक्षान, मदना, मि़द्यान, यिशबाक और शूह।

3. योक्षाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए जिनके नाम थे शबा और ददान। ददान के वंशज थे अश्शूरी, लतूशी और लुम्मी लोग।

4. मिद्यान के पुत्र थे, एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दा। ये सब कतूरा की सन्तान थे।

5. अब्राहम ने घोषणा कर दी थी कि उसके मरणोपरान्त इसहाक उसकी सम्पदा का वारिस होगा।

6. परन्तु जब जीवित था तब उसने अपनी रखेलियों के पुत्रों को उनका भाग देकर पूर्वी क्षेत्र में रहने के लिए दे दिया कि वे उसके पुत्र इसहाक से दूर रहें।

7. अब्राहम 175 वर्ष तक जीवित रहा।

8. वह अत्यधिक वृद्धावस्था तक जीवित रहा फिर अपने पूर्वजों से जा मिला जो पहले इस संसार से कूच कर गए थे।

9. उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उसके पार्थिव शरीर को मकपेला की गुफा में जो मेम्ने के निकट था, वहाँ उसी गुफा में रख दिया जिसे अब्राहम ने हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन से खरीदा था।

10. इसहाक और इश्माएल ने अब्राहम को उसी गुफा में दफन किया जिसमें अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को दफन किया था।

11. अब्राहम के मरणोपरान्त परमेश्वर ने इसहाक को आशिषों से संपन्न किया। इसहाक वीर लहैरोई नामक कुएं के पास ही रहता रहा।

12. सारा की मिस्री दासी ने इश्माएल को जन्म दिया था जिसके वंशज थे,

13. जिनके नाम जन्म के क्रम में दिए गए हैं। इश्माएल का सबसे बड़ा पुत्र था; नबायोत, फिर केदार, अदूबेल, मिबसाम,

14. मिश्मा, दूमा, मस्सा,

15. हदर, तेमा, यतूर, नापीश और केदमा।

16. इश्माएल के ये बारह पुत्र अपने-अपने गोत्रों के प्रधान हुए और उन्हीं के नामों पर उनके गोत्र चले। उनके नामों पर ही उनके गांवों और छावनियों के नाम पड़े।

17. इश्माएल 137 वर्ष तक जीवित रहा तदोपरान्त उसने संसार से कूच किया और अपने मृतक पूर्वजों में जा मिला।

18. उसके वंशज हबीला और शूर के मध्य बस गए। यह स्थान मिस्र की सीमा पर अश्शूर के मार्ग पर है। परन्तु वे आपस में शान्ति से नहीं रहे।

19. अब्राहम के पुत्र इसहाक का इतिहास इस प्रकार है। अब्राहम इसहाक का पिता था।

20. चालीस वर्ष की आयु में इसहाक ने रिबका से विवाह किया, रिबका बथूएल की पुत्री थी और बथूएल पद्दन अराम के अराम का पुत्र था। रिबका का भाई लाबान था जो अरामियों में से था।

21. विवाह के कई वर्ष तक रिबका को संतान प्राप्ति नहीं हुई थी। अतः इसहाक ने अपनी पत्नी के लिए यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने उसे उत्तर दिया। उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।

22. उसके गर्भ में जुड़वा बच्चे थे, वे आपस में संघर्षरत थे। अतः रिबका ने कहा, “मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?” उसने यहोवा से पूछा।

23. यहोवा ने उससे कहा, “तेरे जुड़वा बच्चों से दो जातियां उत्पन्न होंगी और वे एक दूसरे से अलग हो जाएंगी। उनमें से एक दूसरे से अधिक शक्तिशाली होगी परन्तु बड़ा छोटे की सेवा करेगा।”

24. प्रसव पर यह बात सच निकली कि रिबका के दो बालक उत्पन्न हुए।

25. पहला पुत्र लाल वर्ण का था और उसकी देह वस्त्र के सदृश्य रोएं से भरी थी, अतः उसका नाम एसाव रखा गया।

26. उसके बाद उसका भाई उसकी एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ, इस कारण उसका नाम याकूब रखा गया। इन जुड़वा बच्चों के जन्म के समय एसाव की आयु साठ वर्ष की थी।

27. युवावस्था में एसाव एक सिद्ध शिकारी बना। वह अपना अधिकांश समय जंगलों में बिताता था। याकूब चंचल नहीं था। वह अधिकांश समय तम्बुओं में ही रहता था।

28. क्योंकि एसाव इसहाक को शिकार का मांस खिलाता था इसलिए इसहाक उससे अधिक प्रेम रखता था जबकि माता का दुलारा याकूब था।

29. एक दिन जब याकूब भोजन हेतु दाल पका रहा था तब एसाव जंगल से लौटा, वह बहुत थक गया था।

30. उसने याकूब से कहा, “लाल रंग का भोजन तूने पकाया है। उसमें से मुझे खाने को कुछ दे दे क्योंकि मैं थक कर चूर हो गया हूं।” (इसी कारण एसाव का दूसरा नाम एदोम भी पड़ा था।)

31. याकूब ने उससे कहा, “मैं तुझे दाल तो दूंगा परन्तु तू मुझे पहलौठे का अपना अधिकार मुझे दे कि पिता की अधिकांश धन-संपदा मेरी हो।”

32. एसाव ने कहा, “भूख के कारण मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। यदि मैं मर गया तो पहलौठे का अधिकार किस काम का?”

33. याकूब ने उससे कहा, “तू शपथ खा कि तू मुझे पहलौठे का अधिकार दे रहा है।” एसाव ने ऐसा ही किया और उसने याकूब को अपना पहलौठे का अधिकार बेच दिया।

34. अतः याकूब ने एसाव को रोटी और दाल खाने के लिए दे दी। एसाव ने भोजन किया और चला गया। ऐसा करके एसाव ने अपने पहलौठे के अधिकार को तुच्छ जाना।

अध्याय 26

1. कुछ समय बाद उस देश में भयंकर अकाल पड़ा। यह अकाल अब्राहम के समय के अकाल से भिन्न था। अतः एसाव दक्षिण पूर्व में गरार देश में चला गया कि पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक से संबंध बनाए।

2. वहां यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, “तू मिस्र देश में नहीं जाना! जो स्थान मैं तुझे बताऊं तू वही रहना।”

3. तू इसी देश में रह और मैं तेरे साथ रहूंगा। और तुझे आशिष दूंगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंशजों को यह संपूर्ण देश दे दूंगा और जो प्रतिज्ञा मैंने तेरे पिता से की है उसे पूरी करूंगा।

4. मैं तेरे वंशजों को आकाश के सितारों के तुल्य कर दूंगा और यह संपूर्ण देश उन्हें दूंगा और तेरे वंशजों को पृथ्वी की सब जातियों के लिए आशिष का कारण बनाऊंगा।

5. मैं यह इसलिए करूंगा कि अब्राहम ने मेरी आज्ञा मानी है। उसने मेरी सब बातों को, सब आज्ञाओं को और उन सब नियमों को जो मैंने उसे दिए हैं, माना है।

6. अतः अब्राहम अपनी पत्नी और अपने पुत्रों के साथ गरार में ही रहा।

7. जब वहां के लोगों ने पूछा कि उसके साथ जो स्त्री है वह कौन है तो इसहाक ने कहा, “वह मेरी बहन है।” क्योंकि वह डरता था कि यदि वह उसे अपनी पत्नी कहेगा तो वहां के लोग रिबका को पाने के लिए उसकी हत्या कर देंगे क्योंकि रिबका सुन्दर थी।

8. उसे वहां रहते हुए बहुत दिन हो गए तो एक दिन अबीमेलेक ने अपने महल की खिड़की से देखा कि इसहाक रिबका के साथ प्रेमालाप कर रहा है।

9. यह देख अबीमेलेक को आश्चर्य हुआ और उसने इसहाक को बुलवाया और कहा, “वह स्त्री तो निश्चय ही तेरी पत्नी है, फिर तूने झूठ क्यों कहा कि वह तेरी बहन है?” इसहाक ने उससे कहा, “मैंने ऐसा इसलिए कहा कि उसे पाने के लिए कोई मेरी हत्या न कर दे।”

10. अबीमेलेक ने उससे कहा, “तुझे हमारे साथ ऐसा नहीं करना था क्योंकि यदि कोई तेरी पत्नी के साथ कुकर्म करता तो तू हमें महापाप का दोषी बना देता।”

11. तब अबीमेलेक ने आज्ञा निकाली, “इस पुरूष को या इसकी पत्नी को कोई हानि न पहुंचाए। यदि किसी ने ऐसा किया तो वह मार डाला जाएगा।”

12. फिर इसहाक ने उस देश में खेती की और उसी वर्ष विपुल फसल काटी क्योंकि यहोवा ने उसे आशिष दी।

13. और इसहाक बढ़ता गया और उन्नति करता गया। यहां तक कि वह बहुत धनवान हो गया।

14. उसके पास बहुत भेड़ बकरियां, मवेशी और दास7दासियां हो गए। उसकी समृद्धि देख पलिश्ती उससे ईष्र्या करने लगे।

15. ईष्र्या के कारण वहां के लोगों ने अब्राहम द्वारा खुदवाए कुएं मिट्टी से भर दिए।

16. तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, “तू हमसे अधिक सामर्थी हो गया है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तू यहां से चला जाए।”

17. अतः इसहाक अपने परिवार के साथ वहाँ से चला गया और गरार की घाटी में अपने डेरे डाल कर रहने लगा।

18. स्थान में अब्राहम के समय अनेक कुएं खोदे गए थे जिन्हें अब्राहम के मरणोपरान्त पलिश्तियों ने मिट्टी से मार दिए थे। इसहाक और उसके सेवकों ने उन कुओं को फिर से खोदा और इसहाक ने उन कुओं को वही नाम दिए जो उसके पिता ने दिए थे।

19. इसहाक के सेवकों ने घाटी में खुदाई की और उन्हें वहाँ ताजा पानी मिला।

20. तब गरार के चरवाहों ने इसहाक के सेवकों से झगड़ा किया और कहा, “इस कुएं का पानी हमारा है!” अतः इसहाक ने उस कुएं का नाम “एसेक” रखा क्योंकि उस कुएं पर झगड़ा हुआ था।

21. तब इसहाक के सेवकों ने एक और कुआं खोदा परन्तु वहाँ के चरवाहों ने उस कुएं पर भी झगड़ा किया। अतः इसहाक ने उस कुएं का नाम “सित्ना” रखा जिसका अर्थ है, “विरोध।”

22. अब इसहाक के सेवकों ने वहाँ से हटकर एक और कुआं खोदा। इस बार उस कुएं पर किसी ने झगड़ा नहीं किया। अतः इसहाक ने उस कुएं का नाम “रहोबोत” रखा जिसका अर्थ है “रिक्त स्थान” क्योंकि उसने कहा, “यहोवा ने हमें रहने के लिए खुला स्थान दे दिया है, ऐसा स्थान जिसकी लालसा कोई नहीं करता है। हम यहाँ समृद्ध हो जाएंगे।”

23. वहाँ से इसहाक बीरशेबा गया।

24. वहाँ पहली ही रात यहोवा ने उसे दर्शन दिया और कहा, “मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ। तू किसी बात से मत डर। मैं तेरे साथ हूँ और तुझे आशिष दूंगा और जो प्रतिज्ञा मैंने अपने दास अब्राहम से की है, उसके कारण तेरे वंशजों की संख्या बहुत बढ़ाऊँगा।”

25. तब इसहाक ने वहाँ एक वेदी बनाई और यहोवा के लिए बलि चढ़ाई। उसने वहाँ अपने तम्बू खड़े किए और उसके सेवकों ने वहाँ एक कुआं खोदा।

26. जब वे कुआं खोद रहे थे तब अबीमेलेक अपने मंत्री अहुज्जत और सेनापति पीकोल को साथ लेकर गरार से इसहाक के पास आया।

27. इसहाक ने उससे कहा, “तुमने मुझसे अमित्रतापूर्ण व्यवहार करके अपने बीच से निकाल दिया था। अब तुम मेरे पास क्यों आए हो?

28. उन्होंने कहा, “हमने देखा है कि यहोवा तेरे साथ है। इसलिए हमनें यह विचार किया, ‘हम इसहाक के साथ शान्ति की वाचा बांधे।’ अतः हम तेरे साथ शान्ति की वाचा बांधने आए हैं।

29. जैसे हमने तेरे साथ दुव्र्यवहार नहीं किया और तेरे साथ भलाई ही की है और तुझे शान्तिपूर्वक विदा किया, वैसे ही तू भी हमारे साथ किसी प्रकार की बुराई नहीं करेगा। यहोवा तुझे समृद्धि प्रदान कर रहा है।

30. तब इसहाक ने उनके लिए भोजन का प्रबंध किया और उन्होंने खाया-पीया।

31. अगले दिन सुबह उन्होंने आपस में शपथ खाई कि वे अपनी-अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे और इसहाक ने उन्हें शान्तिपूर्वक विदा किया।

32. उसी दिन इसहाक के सेवकों ने आ कर उसे उस कुएं का समाचार दिया जिसे वे खोद रहे थे। उन्होंने कहा, “हमें कुएं में पानी मिल गया है।”

33. अतः इसहाक ने उस कुएं का नाम “शिबा” रखा। इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बीरशेबा है। जिसका अर्थ है, “शान्ति की वाचा का कुआं”।

34. एसाव जब चालीस वर्ष का हो गया तब उसने हित्ती बेरी की पुत्री यहूदीत और हित्ती एलोन की पुत्री बाशमत से विवाह किया। ये दोनों स्त्रियां इसहाक के कुल की नहीं थीं। इनके कारण इसहाक और रिबका का जीवन दुखी हो गया था।

अध्याय 27

1. वृद्धावस्था में इसहाक लगभग अंधा हो गया था। एक दिन उसने एसाव को जो उसका बड़ा बेटा था बुलाकर कहा, “मेरे पुत्र?” उसने कहा, “हां, पिताजी।”

2. इसहाक ने उससे कहा, “सुन! मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि कब मर जाऊंगा।”

3. अतः अपना धनुष ले और तीरों से भरा तरकश उठा कर जंगल में जा और शिकार कर के एक वन पशु ला।

4. उसे पका कर मेरा मनपसन्द भोजन बना कि उसे खा कर मैं तृप्त हो जाऊं और मरने से पहले तुझे आशीर्वाद दूं।

5. इसहाक एसाव से यह सब कह रहा था तब रिबका सुन रही थी। अतः जब एसाव शिकार खेलने चला गया;

6. रिबका ने अपने पुत्र याकूब को बुला कर कहा, “मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से बातें करते सुना है। उसने एसाव से कहा,

7. ‘शिकार करके वन पशु ले आ और स्वादिष्ट भोजन बना कि मैं उसे खाऊं। और मरने से पहले मैं यहोवा के सुनते तुझे आशीर्वाद दूं।’

8. अतः अब तू मेरी बात सुन,

9. भेड़ बकरियों में से दो बकरी के बच्चे मार कर मेरे पास ले आ तो मैं तेरे पिता का मन पसन्द भोजन तैयार कर दूंगी।

10. तब तू उसे ले जाकर अपने पिता को देना कि वह उसे खाए। तब वह मरने से पहले तुझे आशीर्वाद देगा।

11. परन्तु याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, “मेरे भाई एसाव के शरीर पर तो घने बाल है और मेरी देह चिकनी है।

12. यदि मेरा पिता मुझे स्पर्श करे तो क्या होगा। वह समझ जाएगा कि मैं उसे धोखा दे रहा हूं और इस प्रकार मैं आशीर्वाद की अपेक्षा श्राप कमाऊंगा।”

13. उसकी माता ने कहा, “यदि ऐसा हुआ तो मेरे पुत्र श्राप मुझ पर आए! तू बस वही कर जो मैं कहती हूं। जाकर बकरी के बच्चे ले आ।”

14. अतः याकूब बकरी के दो बच्चे मारक अपनी माता के पास ले आया। तब उसकी माता ने इसहाक का मनपसन्द स्वादिष्ट भोजन तैयार किया।

15. तब रिबका ने तम्बू में से अपने बड़े पुत्र एसाव के सर्वोत्तम वस्त्र निकाले और याकूब को पहनाए।

16. उसने बकरी के बच्चों की खाल भी याकूब की भुजाओं और गर्दन पर लपेट दी।

17. तब उसने रोटी और वह स्वादिष्ट मांस उसके हाथ में दिया।

18. याकूब भोजन लेकर अपने पिता के पास गया और कहा, “पिताजी!” इसहाक ने कहा “मैं यहाँ हू, तू मेरे पुत्रों में से कौन सा पुत्र है?”

19. याकूब ने अपने पिता से कहा, “मैं तेरा पहलौठा एसाव हूँ। मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार भोजन तैयार किया है। उठकर भोजन कर ले कि मुझे आशीर्वाद दे।”

20. परन्तु इसहाक ने कहा, “मेरे पुत्र तू अतिशीघ्र शिकार करके कैसे ले आया?” याकूब ने उत्तर दिया, “यहोवा जिसकी तू उपासना करता है, उसने शिकार मेरे सामने कर दिया था।”

21. इसहाक ने याकूब से कहा, “मेरे पुत्र मेरे पास आ कि मैं तुझे स्पर्श करके सुनिश्चित कर पाऊँ कि तू मेरा पुत्र एसाव ही है।”

22. अतः याकूब अपने पिता, इसहाक के पास गया। इसहाक ने उसे स्पर्श करके कहा, बोली तो याकूब की है परन्तु हाथ बड़े भाई एसाव ही के समान रोम वाले हैं।

23. इसहाक तो देख नहीं पाता था इसलिए वह याकूब को पहचान नहीं पाया क्योंकि उसके हाथ बड़े भाई एसाव के जैसे रोम वाले थे। अतः एसाव उसे आशीर्वाद देने के लिए तैयार हो गया।

24. परन्तु इसहाक ने पूछा, “क्या तू वास्तव में मेरा पुत्र एसाव है?” याकूब ने कहा, “हाँ मैं ही हू।”

25. इसहाक ने कहा, “मेरे पुत्र जो भोजन तूने तैयार किया है उसे ले आ कि मैं उसे खाकर तुझे आशीर्वाद दूं।” अतः याकूब ने उसे भोजन कराया। इसहाक ने भोजन किया और याकूब ने उसे मदिरा भी पिलाया।

26. तब उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, “मेरे पुत्र पास आकर मुझे चूम।”

27. अतः याकूब उसके पास गया और इसहाक ने उसके गाल को चूमा। इसहाक ने याकूब के वस्त्रों की गंध ली तो वे एसाव के वस्त्रों की गंध थी क्योंकि याकूब एसाव के वस्त्र धारण किए हुए था। अतः इसहाक ने कहा, “सच में मेरे पुत्र की गंध मैदान की सी है जिसे यहोवा ने आशिषित किया है।

28. परमेश्वर तेरे खेतों पर आकाश की ओर गिराए और तुझे भूमि की विपुल फसल दो अन्न और दाख की बहुतायत तुझे मिले कि तेरे पास दाखरस हो।

29. मैं तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि समस्त जातियां तेरी सेवा करें और तुझे दण्डवत् करें और तू अपने भाइयों पर प्रभुता करे और तेरी माता के वंशज तुझे दण्डवत् करें। जो तुझे श्राप दें उन्हें परमेश्वर श्रापित ठहराए और तुझे आशीर्वाद देने वालों को परमेश्वर आशिषित करे।”

30. जब इसहाक याकूब को आशीर्वाद दे चुका और याकूब अपने पिता के तम्बू से निकला ही था कि उसका बड़े भाई एसाव भोजन तैयार करके अपने पिता के पास आया।

31. उसने अपने पिता से कहा, “पिताजी, कृप्या उठकर भोजन ग्रहण करें जो मैंने आपके लिए तैयार किया है और मुझे आशीर्वाद दें।”

32. इसहाक ने पूछा, “तू कौन है?” उसने कहा, “पिताजी, मैं एसाव हूँ, तेरा पहलौठा।”

33. यह सुनकर इसहाक थरथराने लगा। उसने पूछा, “तो वह कौन था जिसने मुझे शिकार का माँस खिलाया था? वह अभी-अभी तो यहाँ से निकला है। मैं तो उसे आशीर्वाद दे चुका हूँ और उसे लौटा नहीं सकता।”

34. पिता के इन शब्दों को सुनकर एसाव ने अर्तनाद किया और दुःख भरे स्वर में अपने पिता से कहा, “पिताजी मुझे भी आशीर्वाद दो।”

35. परन्तु उसके पिता ने कहा, “तेरे भाई ने मुझे धोखा देकर तेरा आशीर्वाद ले लिया है।”

36. एसाव ने कहा, उसका नाम याकूब यथार्थ में ही है क्योंकि उसने दो बार मेरे साथ छल किया है। पहली बार उसने छल से मेरा पहलौठे का अधिकार ले लिया और अब वह मेरा आशीर्वाद भी ले गया। तब एसाव ने इसहाक से कहा, “क्या तेरे पास मेरे लिए आशीर्वाद नहीं बच रहा है?”

37. ठसहाक ने एसाव से कहा, “मैं तो कह चुका हूँ कि तेरा छोटा भाई तुझ पर प्रभुता करेगा और उसके परिजन उसकी सेवा करेंगे और परमेश्वर उसे अन्न की बहुतायत तथा दाखरस के लिए विपुल दाख दे। अतः हे मेरे पुत्र, अब मैं तेरे लिए क्या करूं?”

38. एसाव ने अपने पिता से कहा, “पिताजी क्या तेरे पास एक ही आशीर्वाद है? मुझे भी आशीर्वाद दे!” और एसाव बिलख बिलखकर रोया।

39. इसहाक ने उससे कहा, “जिस देश में तू वास करेगा वह उर्वरता और परमेश्वर की ओस से जो भूमि को सींचती है, वंचित रहेगा।

40. तू जीवन की आवश्यकताओं के लिए मनुष्यों को लूटेगा और उनकी हत्या करेगा। और तेरा जीवन अपने भाई के दास जैसा होगा परन्तु जब तू उससे विद्रोह का निर्णय लेगा तब तू उसके वश से बाहर निकल आएगा।

41. याकूब ने अपने पिता से पहलौठे का आशीर्वाद ले लिया जिसके कारण एसाव के मन में याकूब के प्रति वैमनस्य भर गया। एसाव ने मन में ठान लिया, “पिता के मरणोपरान्त जब शोक के दिन पूरे हो जाएंगे तब मैं याकूब की हत्या कर दूंगा।”

42. रिबका को अपने बड़े पुत्र एसाव के इस आक्रोश की भनक पड़ गई। अतः उसने अपने छोटे पुत्र याकूब को बुलाकर कहा, “मेरी बात सुन! तेरा बड़ा भाई एसाव धीरज धर कर तेरी हत्या करने के प्रतीक्षा में है कि पिता के साथ छल करने का बदला ले।

43. अतः मेरे पुत्र, मेरी बात ध्यान से सुन! यहां से अति शीघ्र निकल जा और हारान में मेरे भाई लाबान के पास जा कर रह।

44. जब तक तेरे बड़े भाई का क्रोध शान्त नहीं हो जाता तब तक वहीं रहना।

45. जब तेरा भाई तेरे इस कर्म को भूल जाए और उसका क्रोध शान्त हो जाए तब मैं किसी के हाथ सन्देश भेज कर तुझे बुलवा लूंगी। यदि एसाव तेरी हत्या कर दे तो उसकी भी हत्या कर दी जाएगी। इस प्रकार हम अपने दोनों पुत्रों से वंचित हो जायेंगे।”

46. तब रिबका ने इसहाक से कहा, “एसाव ने इन विदेशी हित्ती स्त्रियों से विवाह किया है। वे मेरा जीवन दूभर कर रही हैं। यदि याकूब ने किसी हित्ती स्त्री से विवाह कर लिया तो मेरा जीवन नरक हो जाएगा।”

अध्याय 28

1. अतः इसहाक ने याकूब को बुला कर उसे आशीर्वाद देकर कहा, “कनानियों में से किसी स्त्री से विवाह मत करना।,

2. अतः तू सीधा पदन अराम में अपने नाना बथूएल के पास जा और अपनी माता के भाई लाबान से उसकी एक पुत्री का हाथ मांग ले।

3. मेरी प्रार्थना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुझे आशिषित करे और तुझे असंख्य वंशजों का मूल ठहराएगा कि वे अनेक जातियां हों।

4. मेरी प्रार्थना यह भी है कि परमेश्वर तुझे और तेरे वंशजों को आशिषित करके इस देश का अधिकारी बना दे जिसमें आज हम परदेशी होकर रहते हैं। परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को यह देश देने की प्रतिज्ञा की है।”

5. अतः इसहाक ने याकूब को पदन अराम भेज दिया कि बथूएल के पुत्र रिबका के भाई लाबान के पास रहे। वह अरामी जनजाति का था।

6. एसाव को इस बात की जानकारी प्राप्त हो गई कि उसके पिता इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर पदन अराम भेज दिया है और यह भी कि याकूब को आशीर्वाद देते समय यह कहा था, “कनानियों की पुत्री में से किसी से विवाह मत करना।”

7. और याकूब पिता की आज्ञा मान कर पदन अराम चला गया है।

8. एसाव ने यह भी बूझ लिया था कि उसका पिता कनानियों की स्त्रियों को स्वीकार नहीं करता है।

9. इस कारण एसाव अपने संबंधी इश्माएल से भेंट करने गया और उसकी पुत्री महलत से विवाह कर लिया जो नबार्योत की बहन थी और अब्राहम की पोती थी।

10. इसी बीच याकूब ने बीरशेबा से कूच करके हारान का मार्ग लिया।

11. सूर्यास्त के समय याकूब ने मार्ग ही में, जिस स्थान पर वह था, वहां रात बिताने का विचार किया और एक पत्थर को तकिया बना कर उस पर सिर रखा और सो गया।

12. अपनी नींद में उसने स्वप्न देखा कि एक बड़ी सीढ़ी है जिसका नीचे का सिरा पृथ्वी पर और ऊपर का सिरा स्वर्ग में है और याकूब ने देखा कि उस सीढ़ी पर स्वर्ग दूत चढ़ रहे हैं और उतर रहे हैं।

13. और सीढ़ी के ऊपरी सिरे पर यहोवा खड़ा था। वह कह रहा था, “मैं परमेश्वर यहोवा हूं जिसकी उपासना तेरा दादा अब्राहम करता था और तेरा पिता इसहाक करता है। मैं तुझे और तेरे वंशजों को यह भूमि जिस पर तू लेटा है तुझे दे दूंगा।

14. तेरे वंशज पृथ्वी की धूल के कणों के तुल्य असंख्य होंगे और उनकी सीमाएं दूर-दूर तक होंगी। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों दिशाओं में फैली हुई होंगी। मैं तेरे और तेरे वंशजों के द्वारा पृथ्वी के सब कुलों और जातियों को आशिष दूंगा।

15. तू जहां जाएगा, मैं तेरे साथ रहूंगा और तेरी रक्षा करूंगा। और तुझे लौटा कर इसी देश में ले आऊंगा। मैं तुझे नहीं त्यागूंगा। मैं तेरे साथ अपनी सब प्रतिज्ञाएं पूरी करूंगा।”

16. इस स्वप्न को देख कर याकूब की नींद टूट गई और उसने कहा, “निश्चय ही यहोवा इस स्थान में है जिसका बोध मुझे नहीं था।”

17. वह डर गया और कहा, “यह स्थान बड़ा भयानक है। यह निश्चय ही परमेश्वर का निवास स्थान है। और स्वर्ग का द्वार है।”

18. अगले दिन सुबह याकूब उठा और जिस पत्थर को उसने तकिया बनाया था उसे सीधा खड़ा करके परमेश्वर के परमेश्वर के दर्शन का स्मारक बनाया और उस पर जैतून का तेल डाल कर परमेश्वर के लिए पवित्र किया।

19. याकूब ने उस स्थान का नाम “बेतेल” रखा। उस स्थान का नाम पहले लूज था।

20. याकूब ने परमेश्वर से गंभीर प्रतिज्ञा करके कहा, “यदि तू इस यात्रा में मेरी सहायता करे और रक्षा करे और मुझे पर्याप्त भोजन और वस्त्र दे

21. कि मैं लौट कर अपने पिता के घर सुरक्षित पहुंचूं तो तू यहोवा मेरी उपासना का परमेश्वर ठहरेगा।

22. यह पत्थर जिसे मैंने खड़ा किया है वह तेरे दर्शन का स्मारक होगा और मैं अपनी संपूर्ण आय का जो तू मुझे देगा, दसवां भाग तुझे दिया करूंगा।

अध्याय 29

1. याकूब अपनी यात्रा पर चल पड़ा और कनान के पूर्वी क्षेत्र में पहुंचा।

2. वहां उसे खेत के मध्य एक कुआं दिखाई दिया। वहां चरवाहे अपनी भेड़ों के लिए पानी निकालते थे। उस कुएं को ढांकने के लिए एक बड़ा पत्थर था।

3. जब सब चरवाहे अपनी भेड़ों को लेकर वहां आ जाते थे तब वे सब एकजुट उस पत्थर को हटाते थे और अपनी भेड़ों के लिए पानी निकालते थे और फिर से उस पत्थर को कुएं पर रख देते थे।

4. याकूब ने उन चरवाहों से पूछा, “तुम लोग कहां के हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “हम हारान देश के हैं।”

5. तो याकूब ने उनसे पूछा, “क्या तुम नाहोर के प्रपौत्र लाबान को जानते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “हां, हम उसे जानते हैं।”

6. याकूब ने उनसे पूछा, “क्या लाबाल कुशल से है?” उन्होंने उत्तर दिया, “हां, वह कुशल से है। देखो उसकी पुत्री राहेल भेड़ों को लेकर आ रही है।”

7. याकूब ने कहा, “अभी तो दि नही का समय है। भेड़ों को रात के विश्राम हेतु एकत्र करने का समय नहीं है। तुम भेड़ों को पानी पिलाकर चारागाहों में क्यों नहीं ले जाते?”

8. उन्होंने उत्तर दिया, “हम ऐसा नहीं कर सकते जब तक कि सब चरवाहे यहां न आ जाएं कि कुएं पर से पत्थर हटाया जाए कि हम भेड़ों को पानी पिलाएं।”

9. याकूब अभी उनसे बातें ही कर रहा था कि राहेल अपने पिता की भेड़ों को लेकर आई। वही अपने पिता की भेड़ों को संभालती थी।

10. राहेल, याकूब की माता के भाई की पुत्री, और उसकी भेड़ों को देख कर उसने अकेले ही कुएं पर से पत्थर हटा दिया और अपने मामा की भेड़ों के लिए पानी निकाला।

11. याकूब ने राहेल के गाल को चूमा और आनंद से रो पड़ा।

12. याकूब ने राहेल से कहा कि वह उसके पिता का परिजन है। उसकी बुआ रिबका का पुत्र। राहेल दौड़ कर घर गई और अपने पिता को समाचार दिया।

13. लाबान ने ज्यों ही सुना कि याकूब, उसकी बहन का पुत्र वहां है, वह उससे भेंट करने के लिए दौड़ कर आया और उसे गले लगा कर उसको चूमा और घर ले आया। याकूब ने उसे संपूर्ण वृत्तान्त सुनाया कि उसके साथ कैसे-कैसे क्या हुआ।

14. तब लाबान ने उससे कहा, “सच तो यह है कि तू मेरा ही खून है।” याकूब एक महीना लाबान के पास रहा और उसी के साथ काम करने लगा।

15. तब लाबान ने याकूब से कहा, “तू मेरा कुटुम्बी है। परन्तु तुझसे निर्मोल काम कराना उचित नहीं। मुझे अपना पारिश्रमिक बता कि तुझे दूं।”

16. लाबान की दो पुत्रियां थीं। बड़ी का नाम लिआ और छोटी का नाम राहेल था।

17. लिआः की आंखें सुन्दर थीं परन्तु राहेल रूपवती और आकर्षक थी।

18. याकूब राहेल से प्रेम करने लगा था। अतः उसने लाबान से कहा, “मैं तेरे पास सात वर्ष तक कार्य करूंगा और वह तेरी पुत्री राहेल के लिए मेरी मजदूरी होगी।”

19. लाबान ने उत्तर दिया, “यह मेरे लिए अच्छा है कि तू उससे विवाह करे अपेक्षा इसके कि वह किसी और पुरूष से विवाह करे। तू हमारे ही साथ यहां रह।”

20. अतः याकूब ने राहेल को पाने के लिए सात वर्ष लाबान के पास काम किया परन्तु वे सात वर्ष उसके लिए ऐसे बीत गए जैसे कुछ ही दिन क्योंकि वह राहेल से अत्यधिक प्रेम करता था।

21. सात वर्ष पूरे हो जाने पर याकूब ने लाबान से कहा, “अब मेरा विवाह राहेल से करा दे क्योंकि तेरे पास काम करने का समय जो हमने ठहराया था, वह पूरा हो चुका है और मैं अब राहेल से विवाह करना चाहता हूं।”

22. अतः लाबान ने वहां के सब निवासियों को बुला कर भेज दिया।

23. परन्तु उस रात राहेल को याकूब के पास पहुंचाने की अपेक्षा लाबान ने अपनी बड़ी पुत्री लिआः को याकूब के पास पहुंचा दिया। अंधकार के कारण याकूब देख नहीं पाया कि वह राहेल नहीं लिआः है और वह उसके साथ सो गया।

24. (लाबान ने अपनी पुत्री लिआः को उसकी दासी होने के लिए जिल्पा दी।)

25. अगले दिन सुबह लिआः को देख याकूब आश्चर्यचकित रह गया। अतः वह लाबान के पास गया और आग बबूला होकर कहा, “तूने यह काम जो मेरे साथ किया है, अत्यधिक घृणित है। क्या मैंने राहेल के लिए तेरे पास काम नहीं किया? तो तूने मेरे साथ ऐसा छल क्यों किया?”

26. लाबान ने उससे कहा, “हमारे देश में पहलौठी पुत्री के विवाह से पूर्व छोटी पुत्री का विवाह नहीं किया जाता है।

27. उत्सव के इस सप्ताह के पूरा हो जाने के बाद हम तेरा विवाह छोटी पुत्री से करा देंगे परन्तु तुझे राहेल के लिए मेरे साथ सात वर्ष और काम करना होगा।”

28. याकूब ने ऐसा ही किया और उत्सव के एक सप्ताह के पूरे हो जाने के बाद लाबान ने उसे राहेल भी पत्नी होने के लिए दे दी।

29. और राहेल की दासी होने के लिए अपनी दासी बिल्हा को दिया।

30. याकूब ने राहेल से भी विवाह किया और उसे लिआः से अधिक प्रेम किया। उसने लाबान के लिए सात वर्ष और काम किया।

31. यहोवा ने देखा कि याकूब लिआः से अधिक प्रेम नहीं करता है तो उसने लिआ को गर्भधारण के योग्य किया।

32. लिआः का एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उसने रूबेन रखा। उसने कहा, “यहोवा ने मेरा दुख देख कर मुझे पुत्र दिया। अब मेरा पति निश्चय ही मुझसे प्रेम करेगा क्योंकि मैंने उसे पुत्र दिया है।”

33. कुछ समय बाद वह फिर से गर्भवती हुई और एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने कहा, “यहोवा ने देखा कि मेरा पति मुझसे प्रेम नहीं करता है इसलिए उसने मुझे एक और पुत्र दिया है।” अतः उसने उसका नाम शिमोन रखा अर्थात “कोई सुनता है।”

34. कुछ समय बाद वह फिर से गर्भवती हुई और उसे एक और पुत्र प्राप्त हुआ। उसने कहा, “अब अन्त में मेरा पति मुझे अपने पास रखेगा।” अतः उसने उसका नाम लेवी रखा।

35. वह फिर से गर्भवती हुई और एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने कहा, “इस बार मैं यहोवा की स्तुति करूंगी।” इस कारण उसने अपने उस पुत्र का नाम यहूदा रखा। इसके बाद उसने और संतान को जन्म नहीं दिया।

अध्याय 30

1. जब राहेल ने देखा कि वह याकूब के लिए संतान उत्पन्न नहीं कर पा रही है तो वह अपनी बड़ी बहन से ईष्र्या करने लगी। क्योंकि लिआः से चार पुत्र उत्पन्न हो चुके थे। उसने याकूब से कहा “मुझे भी संतान दे नहीं तो मैं मर जाऊंगी।”

2. याकूब इस बात पर क्रोधित हुआ और राहेल से कहा, “मैं परमेश्वर नहीं हूँ। तेरी कोख तो परमेश्वर ही ने बन्द कर रखी है।”

3. राहेल ने याकूब से कहा, “देख, मेरी दासी बिल्हा है। उसके साथ हो कि वह मेरे लिए सन्तान उत्पन्न करे। अतः उसने

4. याकूब को बिल्हा दी और वह उसके साथ सोया।

5. वह गर्भवती हुई और याकूब को उससे पुत्र प्राप्त हुआ।

6. राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरे साथ न्याय किया है। उसने मेरी प्रार्थना सुन ली और पुत्र देकर मेरे साथ न्याय किया है।” उसने उसका नाम दान रखा जिसका उच्चारण इब्रानी शब्द के समान है जिसका अर्थ है, “उसने मेरा न्याय चुकाया है।”

7. कुछ समय बाद राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब के लिए एक और पुत्र उत्पन्न किया।

8. राहेल ने कहा, “मैंने अपनी बड़ी बहन के सदृश्य सन्तान पाने के लिए बड़ा संघर्ष किया है और वास्तव में पुत्र प्राप्त किया।” अतः उसने उसका नाम नप्ताली रखा। इस इब्रानी शब्द का अर्थ है, “संघर्ष।”

9. अब लिआः ने देखा कि अब वह सन्तान उत्पन्न नहीं कर पा रही है तो उसने अपनी दासी जिल्पा को दे दिया कि याकूब की पत्नी हो।

10. जिल्पा गर्भवती हुई और याकूब के लिए एक पुत्र को जन्म दिया।

11. लिआः ने कहा, “मैं सच में सौभाग्यवती हूँ।” इसलिए उसने उस पुत्र का नाम गाद रखा। गाद का अर्थ है “सौभाग्यशाली।”

12. जिल्पा से याकूब को एक और पुत्र उत्पन्न हुआ।

13. लिआः ने कहा, “अब मैं वास्तव में धन्य हूँ और लोग भी मुझे धन्य कहेंगे।” अतः उसने उस पुत्र का नाम आशेर रखा। आशेर का अर्थ है, “धन्य।”

14. गेहूं की फसल काटने के समय रूबेन खेत में था। वहाँ उसे दूदाफल मिले। वह उन्हें लेकर अपनी माता के पास आया। उन्हें देख राहेल ने लिआः से कहा, “तेरा पुत्र जो पौधे लाया है उनमें से कुछ मुझे दे।”

15. लिआः ने राहेल से कहा, “तूने मेरा पति छीनकर तो अच्छा नहीं किया, अब तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी पाना चाहती है?” अतः राहेल ने लिआः से कहा, “यदि तू मुझे दूदाफल दे तो याकूब आज रात तेरे साथ सोएगा।” लिआः ने रहेल की बात मान ली।

16. संध्या समय जब याकूब गेहूं के खेत से लौट कर आ रहा था तब लिआः उसके पास गई और उससे कहा, “आज रात तुझे मेरे साथ सोना है क्योंकि मैंने राहेल को दूदाफल देकर इसका दाम चुकाया है।

17. परमेश्वर ने लिआः की प्रार्थना सुनी और लिआः वह गर्भवती हुई। उसने याकूब के लिए पांचवें पुत्र को जन्म दिया।

18. लिआः ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे अपनी दासी अपने पति को देने का प्रतिफल दिया है। अतः उसने अपने पुत्र का नाम इस्साकार रखा। इस्साकार का अर्थ है, “प्रतिफल।”

19. लिआः फिर गर्भवती हुई और याकूब के लिए छठवां पुत्र उत्पन्न किया।

20. लिआः ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे एक अनमोल वरदान दिया है। अब मेरा पति मेरा सम्मान करेगा क्योंकि मैंने उसे छः पुत्र दिए हैं।” अतः उसने उस पुत्र का नाम जबूलून रखा।

21. इसके बाद लिआः ने एक पुत्री को भी जन्म दिया जिसका नाम उसने दीना रखा।

22. अब परमेश्वर ने राहेल पर भी कृपा-दृष्टि की और उसकी प्रार्थना सुनी।

23. वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया।

24. राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने निःसन्तान होने की मेरी लज्जा को दूर कर दिया है।” उसने अपने इस पुत्र का नाम यूसुफ रखा। इस इब्रानी शब्द का अर्थ है, “यहोवा ने मुझे एक और पुत्र दिया है।”

25. यूसुफ के जन्म के बाद याकूब ने लाबान से कहा, “अब मुझे तेरी सेवा से मुक्त कर कि मैं अपने देश को लौट जाऊँ।

26. तू जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की है, इसलिए मुझे मेरी पत्नियां और मेरी सन्तान दे कि मैं प्रस्थान करूं।”

27. परन्तु लाबान ने उससे कहा, “यदि तू मुझसे प्रसन्न है तो यहीं रह क्योंकि मैंने सिद्धी करके देखा है कि यहोवा ने तेरे कामों के कारण मुझे आशिषें दी हैं।

28. मुझे बता कि तेरी सेवा के बदले मैं क्या दूं कि तू मेरे साथ रहे और मैं वह तुझे दूंगा।

29. याकूब ने उससे कहा, “तू तो जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की है और मेरी देखरेख में तेरा पशुधन बहुत हो गया है।

30. जब मैं तेरे पास आया था तब तेरे पास बहुत कम पशु थे परन्तु अब वे यहोवा की दया से बहुत अधिक हैं। अब मुझे अपने परिवार की सुधि लेना है।”

31. लाबान ने उससे कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तुझे दूं?” याकूब ने उससे कहा, “मैं तुझसे कुछ नहीं चाहता। मेरे लिए बस एक ही काम कर तो मैं तेरी भेड़ बकरियों को चराऊंगा और उनकी रक्षा करूंगा।

32. मुझे तेरी भेड़ बकरियों में से जो भेड़ या बकरी चित्ती धारी और चितकबरी हो और जो भेड़ काली हो और जो बकरी चितकबरी या चित्तीधारी हो, वे सब मेरी मजदूरी ठहरेंगी।

33. इस प्रकार भविष्य में तू जान लेगा कि मैं तेरी मजदूरी के प्रति सत्यनिष्ठ रहा हूं। यदि मेरी पास चित्तीधारी और चितकबरी बकरियों और काली भेड़ों के अतिरिक्त अन्य कोई भेड़ बकरी हुई तो तू जान लेगा कि मैंने चोरी की है।”

34. लाबान ने उसका सुझाव स्वीकार करके कहा, “ठीक है, हम ऐसा ही करेंगे।”

35. परन्तु उसी दिन लाबान और उसके पुत्रों ने सब धारी वाले और चितकबरे बकरों और सब चित्तीधारी बकरियों और सब काली भेड़ों को अलग करके अपने पुत्रों को सौंप दिया।

36. तब लाबान और उसके पुत्र इन भेड़ बकरियों को लेकर याकूब से तीन दिन की दूरी पर चले गए। याकूब लाबान की शेष भेड़ बकरियों को संभालता रहा।

37. तब याकूब ने चिनार, और बादाम और अर्मोन वृक्षों की पतली टहनियां लेकर उन्हें बीच-बीच में से छील कर धारीदार बना दिया कि टहनियों की सफेदी दिखाई दे।

38. और उन्हें उनके पानी पीने के स्थान में गाड़ दिया कि जब भेड़ बकरियां पानी पी लें तो वे टहनियां उनकी आंखों के सामने हों।

39. इस प्रकार उन टहनियों को देखते हुए जब भेड़ें और बकरियां गामिन हुई तो उनके बच्चे धारी वाले और चितकबरे और काले हुए।

40. अगले कई वर्षों तक याकूब लाबान की भेड़ों और कबरियों को अन्य भेड़ बकरियों से अलग करके चित्ती वाले और सब काले बच्चों को साथ कर दिया और अपनी भेड़ बकरियों को उनसे अलग रखा।

41. इसके अतिरिक्त जब-जब बलवन्त भेड़ें गामिन होती थीं तब याकूब उन छिली हुई अहनियों को उनके पानी पीने के स्थान में गाड़ देता था।

42. परन्तु जब दुर्बल भेड़ बकरियां पानी पीने आतीं तब वह उन टहनियों को हटा देता था जिससे कि उनके बच्चे दुर्बल होते थे। इस प्रकार बलवन्त पशु याकूब के हुए और दुर्बल पशु लाबान के।

43. परिणामस्वरूप याकूब धनाड्य हो गया और उसकी भेड़ बकरियां बहुत हो गईं। उसके पास अनेक दास-दासियां, ऊंट और गदहे भी थे।

अध्याय 31

1. एक दिन किसी ने याकूब से कहा कि लाबान के पुत्र शिकायत करते हैं, “कि याकूब हमारे पिता को लूट कर धनाड्य हो गया है।”

2. याकूब को भी ऐसा प्रतीत हुआ कि लाबान अब पहले के जैसा मित्र भाव नहीं रखता था।

3. तब यहोवा ने याकूब से कहा, “तू अपने देश और अपने लोगों में चला जा, मैं वहां तेरे साथ रहूंगा।”

4. याकूब ने राहेल और लिआः को सन्देश भेजा कि वे चारागाह में आएं जहां उसकी भेड़ बकरियां चर रही थीं।

5. जब वे दोनों वहां आ गईं तब उसने उनसे कहा, “मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारा पिता पहले के जैसा मित्र भाव अब नहीं रखता है परन्तु मेरे पिता का परमेश्वर मेरी सहायता के लिए उपस्थित रहता है।

6. तुम दोनों स्वयं जानती हो कि मैंने तुम्हारे पिता के लिए कैसा अथक परिश्रम किया है।

7. उसने अनेक बार मेरा पारिश्रमिक घटा कर मेरे साथ अन्याय किया है। परन्तु परमेश्वर ने उसे मेरी शारीरिक हानि नहीं करने दी है।

8. जब लाबान ने कहा, ‘मैं तुझे चित्ती वाले पशु तेरे वेतन स्वरूप तुझे देता हूं।’ तब सब भेड़ बकरियों ने धारी वाले बच्चे उत्पन्न किए। जब उसने अपना विचार बदल कर कहा, “जिन पर काली और सफेद धारियां होंगी वे सब भेड़ बकरियां तेरी होंगी।” तब सब भेड़ बकरियों ने धारी वाले बच्चे उत्पन्न किए।

9. इस प्रकार, परमेश्वर ने तुम्हारे पिता का पशुधन मुझे दे दिया।

10. एक बार जब भेड़ बकरियों के गामिन होने का समय था तब मैंने स्वप्न देखा। और स्वप्न देख कर मैं चकित हुआ क्योंकि जो नर बकरे बकरियों पर चढ़ रहे थे उनमें कुछ पर सफेद और काली धारियां थीं। और कुछ चित्ती वाले थे और कुछ धब्बे वाले थे।

11. उसी स्वप्न में परमेश्वर के एक दूत ने आकर मुझसे कहा, ‘याकूब!’ मैंने कहा, ‘कह प्रभु!’

12. उसने कहा आंखें उठा कर देख कि सब बकरे चित्ती वाले, धारी वाले और धब्बे वाले हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है कि मैंने तेरे साथ लाबान का व्यवहार देखा है।

13. मैं वहीं परमेश्वर हूं जिसने तुझे बेतेल में दर्शन दिया था, जहां तूने पत्थर खड़ा किया है और उस पर जैतून का तेल भी अर्घ किया था। और मुझसे गंभीर प्रतिज्ञा की थी। अतः अब इस देश से कूच करने की शीघ्रता कर और अपने जन्म स्थान को लौट जा।”

14. राहेल और लिआः ने याकूब से कहा, “हमारा पिता मरते समय हमें कुछ नहीं देगा।

15. वह तो हमारे साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि हम परदेशी हैं। तूने इतने वर्ष उसके लिए जो परिश्रम किया है, वह हमारा मूल्य था जो तूने चुकाया है परन्तु हमें तूने जो धन सम्पदा उसके लिए बढ़ाई है उसमें हमारा कोई उत्तराधिकार नहीं है। उसने वह सब व्यय कर दिया है।

16. निश्चय ही परमेश्वर ने हमारे पिता से जो भी धन सम्पदा ले ली है वह हमारी और हमारी संतान की है। इसलिए परमेश्वर ने तुझसे जो कहा है वैसा ही कर।”

17. तब याकूब ने अपनी संतान को और अपनी पत्नियों को ऊंटों पर सवार किया,

18. और अपने सामने सारा पशुधन हांकते हुए चल पड़ा। उसने पदून अराम में जितनी भी धन संपदा एकत्र की थी सब साथ ले लिया। इस प्रकार वह अपने पिता इसहाक के पास कनान देश के लिए निकल पड़ा।

19. लाबान इस समय अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया हुआ था। उसकी अनुपस्थिति में राहेल ने अपने पिता के तम्बू में से लकड़ी की छोटी मूर्तियां चुरा ली थीं।

20. इसके अतिरिक्त, याकूब ने अरामी लाबान को अपने प्रस्थान की सूचना न देकर उसके साथ धोखा किया।

21. इस प्रकार याकूब और उसका परिवार, अपनी संपूर्ण धन संपदा के साथ वहां से भागे। उन्होंने फरात नदी पार की और गिलाद प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र का मार्ग लिया।

22. उनके कूच करने के तीन दिन बाद किसी ने लाबान को समाचार दिया कि याकूब और उसका परिवार वहां से चला गया है।

23. अतः वह अपने कुछ परिजनों को साथ लेकर याकूब के पीछे गया। वे सात दिन पैदल चल कर गिलाद के पर्वतीय क्षेत्र में याकूब के पास पहुंचे।

24. उस रात परमेश्वर ने लाबान के स्वप्न में प्रकट होकर कहा, “जब तू याकूब से साक्षातकार करे तो सावधान रहना कि क्या कहना है।”

25. अगले दिन जब लाबान याकूब के पास पहुंचा तब याकूब ने अपना डेरा गिलाद के पहाड़ों में खड़ा किया हुआ था। अतः लाबान और उसके परिजनों ने भी वहीं अपना डेरा खड़ा किया।

26. तब लाबान याकूब के समक्ष गया और कहा, “तूने ऐसा क्यों किया? तू मेरी पुत्रियों को ऐसे ले आया जैसे युद्ध में जीत कर लाया है, यह तो मेरे साथ धोखा है।

27. तूने भाग कर मेरे साथ विश्वासघात क्यों किया?

28. तूने अपने प्रस्थान की सूचना मुझे क्यों नहीं दी कि हम आनंद मनाते और गाते जबकि लोग झांझ और वीणा बजाते जब मैं तुम्हें “विदा” करता।

29. तूने तो मेरे नातियों को भी चूमने नहीं दिया और मेरी पुत्रियों को भी विदा नहीं करने दिया। तेरा यह काम मूर्खता का है!

30. मेरे परिजनों में और मुझमें तुझे हानि पहुंचाने की शक्ति है परन्तु तेरे पिता के परमेश्वर ने रात को स्वप्न में प्रकट होकर कहा, ‘सावधान रहना कि तू याकूब से कैसी बातें करेगा।’

31. अब मैं जान गया हूं कि तेरे प्रस्थान का कारण घर लौट जाना है। परन्तु तूने मेरी मूर्तियां क्यों चुराईं?”

32. याकूब ने लाबान से कहा, “मैंने तो अपने प्रस्थान की योजना तुम पर प्रकट नहीं की क्योंकि मुझे भय इस बात का था कि तू बलपूर्वक अपनी पुत्रियों को मुझ से अलग कर देता।

33. परन्तु यदि तेरी मूर्तियां हमारे यहां किसी के भी पास मिलीं तो हम उसे मृत्युदण्ड देंगे। हमारे परिजनों के सामने खोज करके देख ले कि तेरा कुछ भी मेरे पास नहीं है। यदि तुझे मिले तो ले जा!” याकूब अनभिज्ञ था कि राहेल ने अपने पिता की मूर्तियां चुरा ली थीं।

34. अतः लाबान याकूब के तम्बू में गया, फिर लिआः के तम्बू में। तब दोनों दासियों के तम्बू में गया और अपनी मूर्तियों की खोज की, परन्तु उसे मूर्तियां नहीं मिलीं। वहां से निकल क रवह राहेल के तम्बू में गया।

35. राहेल ने उन्हें ऊंट की काठी में छिपा दिया था जिस पर वह बैठी थी। लाबान ने सर्वत्र खोज करके भी उन मूर्तियों को नहीं पाया।

36. राहेल ने अपने पिता से कहा, “हे प्रभु, मुझ से अप्रसन्न न हो। मैं तेरे सम्मान में खड़ी नहीं हो सकती क्योंकि मैं मासिक धर्म से हूं।” अतः लाबान को अपनी मूर्तियां याकूब के डेरे में नहीं मिलीं।

37. इस पर याकूब ने क्रोधित होकर लाबान से कहा, “मैंने क्या अपराध किया है? तूने किस पाप के दोष में मेरा पीछा किया है?

38. तूने स्वयं ही मेरे डेरे में खोज की और अपनी कोई वस्तु तुझे नहीं मिली। अब तेरे और मेरे परिजनों के समक्ष वह रख जो तुझे मेरे यहां मिला कि वे ही निर्णय लें कि कौन सही है, तू या मैं।

39. मैं बीस वर्ष तेरे साथ था। उस संपूर्ण समय तेरी भेड़ बकरियों के गर्भ कभी नहीं गिरे और न ही मैंने तेरे भेड़ बकरियों में से किसी मेढ़े का वध कर के खाया।

40. यदि वन पशु तेरी भेड़ या बकरी को फाड़ देता था तो मैं उसे तेरे पास नहीं लाता था। उसकी हानि मैं ही भरता था। उनके स्थान पर मैं अपना जीवित पशु तुझे देता था। दिन हो या रात, यदि तेरा एक भी पशु चोरी होता था तो तू उसकी क्षतिपूर्ति मुझसे करवाता था।

41. मैं दिन को गरमी और रात को ठंड की पीड़ा सहता था। मैं रात में सो भी नहीं पाता था।

42. बीस वर्ष मैं तेरे घर में रहा। मैंने तेरी पुत्रियों से विवाह करने के लिए चैदह वर्ष तेरी सेवा की और तुझ से भेड़ बकरियां पाने के लिए छः वर्ष और तेरी सेवा की। उस समय तूने मेरा पारिश्रमिक दस गुणा घटा दिया था।

43. मेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर जिसके समक्ष मेरा पिता इसहाक डर कर कांपता है, यदि वह मेरे साथ मेरा सहायक नहीं होता तो तू मुझे खाली हाथ भेज देता! परन्तु परमेश्वर ने मेरे कष्टों को देखा और मेरे कठोर परिश्रम पर दृष्टि की, इस कारण उसने विगत रात तुझे चिताया कि तूने जो मेरे साथ किया वह उचित नहीं था।”

44. लाबान ने कहा, “ये दोनों स्त्रियां मेरी पुत्रियां हैं और उनकी संतान मेरी नाती है। और यह सब पशु मेरे हैं। यहां जो कुछ तू देखता है, वह सब मेरा है।

45. परन्तु मैं उन्हें रखने के लिए कुछ नहीं कर सकता हूं। अतः हम दोनों शान्ति की वाचा बांधें और वह तेरे और मेरे मध्य साक्षी ठहरे।”

46. अतः याकूब ने एक बड़ा पत्थर लेकर खड़ा किया।

47. और याकूब ने अपने परिजनों से कहा, “पत्थर एकत्र करो।” अतः उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर लेकर ढेर लगा दिया। उस ढेर के पास उन्होंने भोजन किया।

48. लाबान ने उस ढेर को अरामी भाषा में “यज्रसहाटुथा” कहा और याकूब ने “गिलियाद” कहा।

49. तब लाबान ने कहा, “पत्थरों का यह ढेर जो आज हमने लगाया है, हमें हमारी वाचा का स्मरण कराता रहेगा।” यही कारण है कि उस पथरीले ढेर का नाम गिलियाद रखा गया।

50. उन्होंने उस स्थान का नाम “मिजपा” भी रखा, इब्रानी में इसका अर्थ है, “गरगज”, क्योंकि लाबान ने कहा था, हम यहोवा से निवेदन करते हैं कि हमारे पृथक हो जाने के बाद वह तेरी और निगरानी करे कि हम एक दूसरे की हानि न कर पाएं।

51. यदि तू मेरी पुत्रियों की हानि करे या अन्य स्त्रियों से विवाह करे जिसका समाचार कोई मुझे न भी दे तो मत भूलना कि परमेश्वर तेरे और मेरे कामों को देखता है।”

52. लाबान ने याकूब से यह भी कहा, “इस बड़े पत्थर को जिसे हमने अपने मध्य खड़ा किया और पत्थरों के इस ढेर को भी।

53. पत्थरों का यह ढेर और यह बड़ा पत्थर हमें स्मरण कराए कि न तो मैं इसके पार जाऊं और न तू इसके पार आए कि एक दूसरे की हानि करें।

54. अब्राहम का परमेश्वर और नाहोर का परमेश्वर और उनके पूर्वज, तेरह का परमेश्वर हम में से जो भी हानि करना चाहे, उसे दण्ड दे।” याकूब ने भी गंभीरतापूर्वक अपने पिता के परमेश्वर की शपथ खा कर शान्ति की वाचा की प्रतिज्ञा की।

55. तब याकूब ने उस पहाड़ी प्रदेश में परमेश्वर के लिए मेलबलि चढ़ाया और अपने परिजनों को भोज में बुलाया। भोजन करके वे सब रात में सोए।

56. अगले दिन सुबह लाबान ने अपने नातियों को और अपनी पुत्रियों को चूमा और परमेश्वर के नाम में आशीर्वाद देकर अपने घर लौट आया।

अध्याय 32

1. याकूब अपने परिवार के साथ आगे बढ़ चला। मार्ग में उसे परमेश्वर के दूत मिले।

2. जब याकूब ने उन्हें देखा तो कहा, “यह तो परमेश्वर की सेना का शिविर है। अतः उसने उस स्थान का नाम महनैम रखा।

3. तब याकूब ने अपने बड़े भाई एसाव के पास अपने साथियों में से कुछ को एदोम देश में सेईर भेजा।

4. डसने उनसे कहा, “मैं चाहता हूं कि तुम एसाव से कहना , ‘मैं याकूब तेरा दास, मेरे स्वामी तुझ से यों कहता है कि मैं अपने मामा लाबान के पास अब तक रह रहा था।

5. मेरे पास अब बहुत भेड़ बकरियां, गदहे, गाय, बैल तथा दास-दासियां हैं। मेरे प्रभु के पास यह सन्देश भेजने का मेरा उद्देश्य है कि मेरे आगमन पर तेरा अनुग्रह हो।'”

6. उसके सन्देशवाहकों ने जाकर एसाव को उसका सन्देश दिया। लौट आने पर उन्होंने याकूब से कहा, “हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे। वह तुझसे भेंट करने को आ रहा है। उसके साथ चार सौ पुरूष हैं।”

7. यह सुन कर याकूब बहुत डर गया और चिन्ता में डूब गया। और उसने अपने समुदाय को दो दलों में विभाजित कर दिया। उसने अपनी भेड़ बकरियों, मवेशियों और ऊंटों को भी दो झुंडों में विभाजित किया।

8. वह सोच रहा था, “यदि एसाव और उसके साथी आ कर आक्रमण करें तो कम से कम एक दल से बच कर भाग पाएगा।”

9. तदोपरान्त याकूब ने प्रार्थना की, “मेरे दादा अब्राहम और मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तूने मुझसे कहा था, ‘अपने देश और अपने परिवार में लौट जा। मैं तेरी भलाई करूंगा।'

10. मैं इस योग्य तो नहीं कि मैं तेरा दास, विश्वास एवं निष्ठा के साथ निभाई गई तेरी वाचा के योग्य ठहरूं। जब मैंने यरदन पार की थी कि हारान को जाऊं तब मेरे पास मात्र एक छड़ी थी परन्तु अब मैं इतना धनवान हो गया हूं कि मेरे परिवार और सम्पदा के दो बड़े समूह हैं।

11. मैं तुझसे विनती करता हूं कि मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा। मुझे भय है कि वह और उसके साथी मुझ पर आक्रमण करके मुझे और बच्चों को और उनकी माताओं को मार डालेंगे।

12. स्मरण कर कि तूने ही तो मुझ से कहा था, “मैं निश्चय ही तुझे समृद्धि प्रदान करूंगा। और तेरे वंशजों को समुद्र की रेत के तुल्य असंख्य कर दूंगा कि उनकी गणना कोई नहीं कर पाएगा।’”

13. उस रात याकूब नहीं सोया। अगले दिन सुबह उसने कुछ पशु चुने कि अपने भाई एसाव को भेंट करे।

14. उसने दो सौ बकरियां और बीस बकरे, दो सौ भेड़ें और बीस मेढ़े,

15. तीस ऊंटनियां और उनके बच्चे, चालीस गदहे और दस बैल, बीस गदहियां और दस गदहे चुने।

16. उनके अलग-अलग झुंड बना कर उसने उन्हें अपने दासों को सौंप दिया और उनसे कहा, “मेरे आगे-आगे चलो, एक के पीछे एक झुंड परन्तु झुंडों के मध्य अन्तर रखना।”

17. जो दास पहले झुंड को लेकर चल रहा था, उससे उसने कहा, “जब तुम मेरे भाई एसाव के पास पहुंचोगे तो वह तुमसे पूछेगा, ‘तुम कौन हो और कहां जा रहे हो और यह पशु किस के हैं?’

18. तो उससे कहना, “यह तेरे दास याकूब के हैं। मेरे प्रभु यह भेंट तेरे लिए भेजी गई है। वह हमारे पीछे आ रहा है।’”

19. उसने ऐसा ही निर्देश दूसरे और तीसरे झुंड के रखवालों को और सब चरवाहों को भी जो उन झुंडों के पीछे थे, ऐसा ही निर्देश दिया। उसने उनसे कहा, “जब तुम्हारा साक्षातकार एसाव से हो तुम भी वही कहना जो मैंने पहले झुंड के रखवाले से कहा हें

20. और यह अवश्य कहना, ‘तेरा दास याकूब हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।’” यरकूब ने उनसे ऐसा कहने के लिए इसलिए कहा कि वह सोचता था, “संभव है कि इस भेंट के द्वारा जो मैं अपने आगे एसाव के लिए भेज रहा हूं, वह मेरे प्रति शान्ति का व्यवहार अपनाए और बाद में जब मैं उसके समक्ष पहुंचूं तब वह दया प्रकट करे।”

21. अतः भेंट लेकर उसके सेवक आगे-आगे चले परन्तु याकूब उस रात डेरे में ही रूका।

22. उसी रात याकूब अपनी दोनों पत्नियों, दोनों दासियों और ग्यारह पुत्रों को लेकर यब्बोक नदी के घाट के पार हो गया।

23. उसने उन्हें और अपना सब कुछ नदी के पार पहुंचा दिया।

24. परन्तु याकूब अकेला इस पार रह गया। वहां एक पुरूष पूरी रात उससे मल्लयुद्ध करता रहा। भोर होने तक वह याकूब से मल्ल-युद्ध करता रहा।

25. जब उसने देखा कि वह याकूब से जीत नहीं पा रहा है तो उसने याकूब के कूल्हे के जोड़ की हड्डी उतार दी।

26. और उसने याकूब से कहा, “मुझे जाने दे क्योंकि भोर का प्रकाश होने वाला है।” याकूब ने उससे कहा, “नहीं, जब तक तू मुझे आशीर्वाद नहीं देगा, मैं तुझे जाने नहीं दूंगा।”

27. उसने पूछा, “तेरा नाम क्या है?” याकूब ने कहा, “याकूब है।

28. उसने कहा, “तेरा नाम अब से याकूब नहीं, इस्राएल होगा जिसका अर्थ है, ‘वह परमेश्वर से युद्ध करता है।’ क्योंकि तू परमेश्वर और मनुष्यों से युद्ध करके प्रबल हुआ है।”

29. याकूब ने उससे कहा, “कृपया अपना नाम मुझे बता दे।” उसने कहा, “तू मुझ से मेरा नाम क्यों पूछता है?” उसने याकूब को उस स्थान में आशीर्वाद दिया।

30. अतः याकूब ने उस स्थान का नाम “पनीएल” रखा। जिसका अर्थ है, “परमेश्वर का चेहरा,” क्योंकि याकूब ने कहा, “मैंने परमेश्वर के प्रत्यक्ष को देखा और मरा नहीं।”

31. पनीएल से जब वह चला तब सूर्योदय हो रहा था। वह लंगड़ा कर चल रहा था क्योंकि उसके कुल्हें का जोड़ क्षतिग्रस्त हो गया था। इस कारण इस्राएली आज तक पशुओं के कूल्हे की हड्डी से जुड़ी मांसपेशी को नहीं खाते हैं।

अध्याय 33

1. और याकूब अपने परिवार के साथ हो लिया। कुछ समय बाद, उस दिन याकूब ने देखा कि एसाव आ रहा है और उसके साथ चार सौ पुरूष हैं। उन्हें देख कर याकूब चिंतित हो गया। उसने बच्चों को अलग-अलग कर दिया। लिआः के बच्चों को उसने लिआः के साथ और राहेल के बच्चों को राहेल के साथ कर दिया और दासियों के बच्चों को दासियों के साथ।

2. उसने दोनों दासियों को उनके बच्चों के साथ आगे रखा। और उनके बाद लिआः को उसके बच्चों के साथ और राहेल एवं यूसुफ को सब के पीछे रखा।

3. वह स्वयं सब से आगे चला। जब वह अपने बड़े भाई के निकट पहुंचा तब सात बार भूमि पर गिर कर उसे दण्डवत् किया।

4. एसाव दौड़ कर याकूब के पास गया और उसे गले लगाया और उसके गले में बांहें डाल कर उसके गाल को चूमा और दोनों रो पड़े।

5. तब एसाव ने आंखें उठाईं तो स्त्रियों और बच्चों को देखा। उसने पूछा, “तेरे साथ ये लोग कौन हैं?” याकूब ने उत्तर दिया, “ये मेरी पत्नियां और बच्चे हैं। जिन्हें परमेश्वर ने मुझे बड़ी दया करके दिया है।”

6. तब दोनों दासियों और उनके बच्चों ने आकर एसाव को दण्डवत् किया।

7. उसके बाद लिआः और उसके बच्चों ने आकर दण्डवत् किया। अन्त में राहेल और यूसुफ ने आकर उसे दण्डवत् किया।

8. एसाव ने पूछा, “ये पशु जो मैं देखता हूं उसका क्या अर्थ है?” याकूब ने उत्तर दिया, “मेरे प्रभु, यह सब तेरे लिए है कि तेरी दया दृष्टि मुझ पर हो।”

9. एसाव ने उससे कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत पशु हैं। ये पशु तू अपने पास ही रख।”

10. परन्तु याकूब ने आग्रह किया, “नहीं, यदि तू मुझ पर अनुग्रह करे तो मेरी यह भेंट स्वीकार कर ले। तूने बड़ी दया के साथ मेरा अभिवादन किया हे। तुझे प्रसन्न देख कर मुझे विश्वास हो गया है कि तूने मुझे क्षमा कर दिया है। यह ऐसा है जैसे कि मैंने परमेश्वर का दर्शन पाया है।

11. कृपया करके मेरी यह भेंट स्वीकार कर क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह मुझ पर हुआ है। और मेरे पास अब भी बहुत पशु हैं। याकूब के बहुत आग्रह करने पर एसाव ने अन्ततः उसकी भेंट स्वीकार कर ली।

12. तब एसाव ने कहा, “आओ हम चलते हैं और मैं आगे चलता हूं।”

13. याकूब ने कहा, “हे मेरे प्रभु, तू तो जानता ही है कि मेरे बच्चे छोटे हैं और वे दुर्बल हैं और भेड़ बकरियों और गायों के दूध पीने वाले बच्चे भी हैं। यदि उन्हें अधिक हांका गया तो सब मर जायेंगे।

14. अतः तू आगे चल और मैं धीरे-धीरे तेरे पीछे आता हूं। परन्तु यथासंभव शीघ्रता करके सेईर में तेरे साथ हो लूंगा।”

15. एसाव ने कहा, “तो मैं ऐसा करता हूं कि अपने साथियों में से कुछ को तेरी सुरक्षा के लिए छोड़ जाता हूं।” याकूब ने उससे कहा, “इसकी क्या आवश्यकता है? मैं तो बस यही चाहता हूं कि तेरी कृपा दृष्टि मुझ पर बनी रहे।”

16. अतः एसाव उसी दिन सेईर लौट आया।

17. परन्तु याकूब सेईर जाने की अपेक्षा सुक्कोत गया और वहां अपने और अपने परिवार के लिए घर बनाया तथा अपने पशुओं के लिए पशुशाला बनाए। इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत अर्थात झोंपड़ियां पड़ा।

18. इस प्रकार याकूब और उसके परिवार ने पदन अराम से कूच करके सुरक्षित कनान में प्रवेश किया। वहां उन्होंने शकेम नगर के पास एक मैदान में अपने डेरे खड़े किए। उस स्थान का एक प्रधान था जिसका नाम हमोर था। उसके अनेक पुत्र थे। याकूब ने उन्हें चांदी के सौ टुकड़े दिए और उस स्थान को खरीद कर वहां रहा।

19. वहां उसने पत्थरों की एक वेदी बनाई जिसका नाम उसने “एल एलोहे इस्राएल” रखा अर्थात “परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर।”

अध्याय 34

1. एक दिन याकूब की पुत्री दीना और लिआः वहां की कुछ स्त्रियों से भेंट करने गईं।

2. हिब्बी हमोर के पुत्रों में एक का नाम शकेम था। उसने दीना को देखा और उसके साथ दुष्कर्म करके उसे भ्रष्ट कर दिया।

3. वह उससे प्रेम करने लगा और उसका दीवाना हो गया। वह उससे लगाव की बातें भी करने लगा।

4. शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, “कृपया उस युवति को मेरे लिए ले आ कि उसे अपनी पत्नी बना लूं।

5. जब याकूब को यह समाचार मिला कि शकेम ने उसकी पुत्री दीना को भ्रष्ट कर दिया, उसके पुत्र मैदान में पशुओं को चरा रहे थे। अतः वह उनके आने तक चुप रहा।

6. इसी बीच शकेम का पिता हमोर याकूब के पास गया। उसी समय याकूब के पुत्र घर लौटे। दीना की घटना को सुन कर वे विमूढ़ हुए और उनका क्रोध भड़े उठा क्योंकि शकेम ने इस्राएल की मानहानि की थी।

7. उसने याकूब की पुत्री के साथ बलात्कार किया था। वह उनकी बहन थी। ऐसा महामूर्खता का काम कभी नहीं किया जाना था।

8. हमोर ने उनसे कहा, “मेरा पुत्र शकेम तुम्हारी पुत्री, तुम्हारी बहन पर मोहित है। कृपा करके उनका विवाह होने दे।

9. हम ऐसा समझौता करते हैं कि हम तुम्हारे युवकों के लिए अपनी पुत्रियां दें कि वे उनकी पत्नियां हों और तुम हमारे युवकों के लिए अपनी पुत्रियां दो कि वे उनकी पत्नियां हों।

10. तुम हमारे मध्य, जहां चाहे, वहां वास करो। क्रय-विक्रय भी करो। यदि तुम्हें कोई भूमि पसन्द आए तो उसे खरीद भी लो।

11. शकेम ने तब दीना के भाइयों के पिता से कहा, “यदि तेरी कृपा दृष्टि मुझ पर हो तो जो तू चाहे, मैं तुझे दूंगा।

12. तुम जो कुछ मुझसे कहोगे मैं वधु मोल के निमित्त दूंगा। मुझे केवल आपकी पुत्री से विवाह करना है।

13. क्योंकि शकेम ने उनकी बहन दीना के साथ अभद्र व्यवहार किया था, इसलिए याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता हमोर के साथ छल किया।

14. उन्होंने कहा, “नहीं, हम अपनी बहन को किसी खतना रहित की पत्नी होने के लिए नहीं दे सकते क्योंकि यह हमारे लिए एक लज्जाजनक बात है।

15. ऐसा तब ही हो सकता है जब तुम लोग अपने सब पुरूषों का खतना करके हमारे जैसे हो जाओ।

16. तब हम अपनी पुत्रियां तुम्हारे युवकों को पत्नियां होने के लिए दे देंगे और तुम्हारी पुत्रियों को अपने युवकों की पत्नियां होने के लिए ले लेंगे। तब हम तुम्हारे मध्य वास करेंगे और हम सब एक ही समुदाय होंगे।

17. यदि तुम खतना नहीं कराओगे तो हम अपनी बहन को लेकर यहां से चले जायेंगे।

18. उनकी बात से हमोर और उसका पुत्र शकेम प्रसन्न हुए।

19. शकेम तो याकूब की पुत्री को पत्नी बनाना चाहता था और वह अपने पिता के कुटुम्ब में माननीय भी था। वह याकूब के पुत्र के सुसमाचार को मानने के लिए तुरन्त तैयार हो गया।

20. शकेम अपने पिता हमोर के साथ नगर के फाटक पर सभा के स्थान पर गया और नगर के वृद्धों के साथ विचार विमर्श किया।

21. उन्होंने कहा, “ये लोग हमारे साथ मित्रभाव रखते हैं। अतः उचित है कि हम उन्हें अपने मध्य वास करने दें। और स्वतंत्रता से घूमने-फिरने दें। यह देश तो हमारे लिए और उनके लिए भी बहुत बड़ा है कि हम सब का निर्वाह हो सके। हमारे युवक उनकी पुत्रियों से विवाह करें और उनके युवक हमारी पुत्रियों से विवाह करें।

22. परन्तु हमारे साथ कुल मिला कर व्यवहार करने के लिए उनकी एक शर्त है, हमारे सब पुरूष उनके सदृश्य खतना करवाएं।

23. यदि हम ऐसा करते हैं तो जरा सोचो कि उनका पशु धन और संपूर्ण संपदा भी तो हमारी हो जाएगी। अतः हम उनकी बात मान लें तो वे हमारे मध्य वास करेंगे।

24. अतः नगर के फाटक पर उपस्थित सब लोग हमोर और उसके पुत्र के सुझाव से सहमत हो गए। इस प्रकार उस नगर के हर एक पुरूष का खतना किया गया।

25. तीन दिन पश्चात जब उस नगर के पुरूष खतना के कारण पीड़ित थे तब शमोन और लेवी, दीना के भाई जो याकूब के पुत्र थे, तलवार लेकर नगर में अविरूद्ध उस नगर में घुस गए और सब पुरूषों को मार डाला।

26. उन्होंने हमोर और शकेम को भी घात किया। और दीना को लेकर वहां से चले गए।

27. इसके बाद याकूब के अन्य पुत्रों ने नगर में प्रवेश करके उस नगर को लूट कर अपनी बहन की लज्जा का बदला लिया।

28. उन्होंने उस नगर और नगर के परिवेश में से भेड़ बकरियां, गाय, बैल, गदहे और धन संपदा सब कुछ लूट लिया।

29. उन्होंने सब मूल्यवान वस्तुएं और उनके बच्चों और स्त्रियों को भी उठा लिया। वे सब कुछ लूट कर ले गए।

30. याकूब ने इस पर शिमोन और लेवी से कहा, “तुमने मेरे लिए महासंकट उत्पन्न कर दिया है। अब कनानी और परिज्जी और इस देश के सब निवासी मुझसे घृणा करेंगे। मेरे पास तो इतने पुरूष भी नहीं कि यदि वे मुझ से युद्ध करने आएं तो उनका सामना कर पाऊं। वे तो हमें और हमारे संपूर्ण समुदाय को नष्ट भ्रष्ट कर देंगे।”

31. इस पर उन्होंने कहा, “क्या हम शकेम को हमारी बहन के साथ वैश्या का सा व्यवहार करने देते?”

अध्याय 35

1. कुछ समय बाद परमेश्वर ने याकूब से कहा, यहां से निकल कर बेतेल में जाकर बस जा। वहां मेरे लिए एक वेदी बना। मैं वही परमेश्वर हूं जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसाव से डर कर भागा था।

2. अतः याकूब ने अपने परिवार और सब साथ के लोगों से कहा, “अपने पास से मीसोपोतामिया के सब देवी-देवताओं की मूर्तियों को निकाल दो और अपना-अपना शोधन करो तथा स्वच्छ वस्त्र धारण करो।

3. हम सब तैयार होकर बेतेल को जायेंगे। वहां मैं परमेश्वर की उपासना करने के लिए एक वेदी बनाऊंगा क्योंकि जब मैं बड़े संकट में था और मुझ पर भय छाया हुआ था तब उसने मेरी सहायता की थी और मैं जहां भी गया वहां वह मेरे साथ रहा।

4. अतः उन सबने याकूब को अपनी मूर्तियां और कान के कुंडल याकूब को दे दिए और याकूब ने शकेम नगर के निकट एक वांज वृक्ष के नीचे गाड़ दिया।

5. इस प्रकार उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया और परमेश्वर ने वहाँ के सब निवासियों क मन में याकूब के परिवार का भय भर दिया जिससे कि उन्होंने उनका पीछा नहीं किया।

6. याकूब और उसके साथ संपूर्ण समुदाय कनान देश में लूत नगर पहुंचा जिसे अबबेतेल कहते हैं।

7. वहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और उसका नाम एलबेतेल रखा अर्थात “बेतेल का परमेश्वर” क्योंकि जब याकूब अपने भाई एसाव से डर का भाग रहा था तब परमेश्वर ने उसे वहीं दर्शन दिया था।

8. वहाँ इसहाक की पत्नी रिबका को दूध पिलाने वाली धाय, दबोरा जो अब बहुत वृद्ध थी, उसका देहान्त हो गया और उसे बेतेल के दक्षिण में एक बांज वृक्ष के नीचे दफन कर दिया गया। अतः उस स्थान का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया जिसका अर्थ है, “विलाप का बांज वृक्ष।”

9. पद्दन अराम से लौटकर याकूब और उसका परिवार जब बेतेल ही में था तब परमेश्वर ने याकूब को फिर दर्शन दिया और आशिष दी।

10. परमेश्वर ने उससे फिर कहा, “तेरा नाम अब याकूब नहीं इस्राएल होगा।” अब तब से याकूब “इस्राएल” कहलाने लगा।

11. परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। तेरी सन्तति असंख्य हो। तेरे वंशज अनेक जातियां होंगे और तेरे वंशजों में राजा भी होंगे।

12. मैंने अब्राहम और इसहाक को जो देश देने की प्रतिज्ञा की है, वह देश मैं तुझे दूंगा और तेरे वंशजों को भी दूंगा।”

13. तब परमेश्वर उस स्थान में जहाँ याकूब से बातें कर रहा था, वहाँ से अरोहित हो गया।

14. याकूब ने उस स्थान में जहाँ परमेश्वर ने उससे बातें की थीं, एक बड़ा पत्थर खड़ा किया और उस पर दाखमधु और तेल चढ़ा कर परमेश्वर के लिए उसका अभिषेक किया।

15. याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल रखा अर्थात “परमेश्वर का घर” क्योंकि परमेश्वर ने उससे वहां बातें की थीं।

16. याकूब और उसके समुदाय ने तब वहां से कूच करके दक्षिण में एप्राता का मार्ग लिया। अभी एप्राता थोड़ी ही दूर था कि राहेल को प्रसव पीड़ा उठी।

17. जब उसकी पीड़ा बहुत बढ़ गई तब धाय ने उससे कहा, “मत डर क्योंकि तूने एक और पुत्र को जन्म दिया है।”

18. परन्तु वह जीवित न रह पाई और अपनी अंतिम सांस लेते-लेते उसने उस पुत्र का नाम बनोनी रखा अर्थात “मेरे दुख का पुत्र” परन्तु उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा अर्थात “मेरी दाहिने हाथ का पुत्र।”

19. राहेल का देहान्त हो गया और उसे एप्राता के मार्ग के किनारे दफन किया गया। एप्राता का नाम उत्तर काल में बैतलहम हुआ।

20. याकूब ने उसकी कब्र पर एक बड़ा पत्थर खड़ कर दिया जो आज भी वहां है और राहेल की कब्र प्रकट करता है।

21. याकूब जिसका नाम अब इस्राएल था अपनी यात्रा में आगे बढ़ गया और एदेर नामक गरगज के दक्षिण में अपने डेरे खड़े किए।

22. उस स्थान में निवास करते समय रूबेन अपने पिता की एक रखैल बिल्हा के साथ सो गया। किसी ने याकूब को यह बात बता दी तो याकूब अत्यधिक क्रोधित हुआ। याकूब के पुत्र कुल बारह थे।

23. लिआः के पुत्र थे याकूब का सब से बड़ा पुत्र रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार और जबूलून।

24. और राहेल के दो ही पुत्र थे यूसुफ और बिन्यामीन।

25. राहेल की दासी बिल्हा के पुत्र थे दान और नप्ताली।

26. और लिआः की दासी जिल्पा के पुत्र थे गाद और आशेर। पदन अराम में याकूब से उत्पन्न उसके पुत्र ये ही थे।

27. तब याकूब अपने पिता इसहाक से भेंट करने के लिए मेम्रे को गया जिसका नाम किर्यत अर्बा जिसे अब हेब्रोन कहते हैं, गया। इसहाक का पिता अब्राहम भी वहां रह चुका था।

28. इसहाक 180 वर्ष तक जीवित रहा।

29. वह अति वृद्ध और परिपूर्ण आयु में देह त्याग कर अपने मृतक पूर्वजों में जा मिला और एसाव तथा याकूब ने उसके पार्थिव शरीर को दफन किया।

अध्याय 36

1. एसाव जिसका नाम अदोम भी था, उसकी वंशावली और उसके काम यह हैं।

2. एसाव ने तीन कनानी स्त्रियों से विवाह किया थाः हित्ती एलोन की पुत्री आदा, हिब्बी सिबोन की नातिन, अना की पुत्री ओहोलीबामा।

3. और इश्माएल की पुत्री, नबायोत की बहन बासमत।

4. एसाव की पत्नी आदा से एलीपज और बासमत से रूएल

5. और ओहोलीबामा से यूश, यालाम और कोरह उत्पन्न हुए। उसाव के कनानवास के समय ये पुत्र उत्पन्न हुए थे।

6. एसाव और याकूब की संपदा और बेटे-बेटियां बहुत थे। अतः उन्हें अपने पशुओं के लिए बहुत जगह की आवशकता थी और जिस भूमि पर वे वास करते थे वह पूरी नहीं पड़ती थी। इस कारण एसाव अपने परिवार के साथ याकूब के पास से दूर देश को चला गया।

7. उनकी संपदा की बहुतायत के कारण और पशुओं की अधिकता के कारण उनका कनान देश में जहाँ वे परदेशी थे, साथ रहना दूभर हो गया था।

8. एसाव जो सदोम भी कहलाता था, सेईर के पहाड़ी प्रदेश में जाकर रहने लगा।

9. एसाव के वंशज अर्थात एदोम जाति के पूर्वज जो सेईर में रहते थे, वे ये हैं।

10. एसाव की पत्नी आघ ने एलीपज को जन्म दिया था और उसकी दूसरी पत्नी बासमत ने रूएल को जन्म दिया।

11. एलीपज के पुत्र थे तेमान, ओमर, सपो, गाताम और कनज।

12. एसाव के पुत्र एलीपज की एक रखैल का नाम तिम्ना था जिसने एलीपज के पुत्र अमालेक को जन्म दिया। ये सब एसाव की पत्नी का वंश थे।

13. रूएल के पुत्र थे, नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा। ये सब एसाव की पत्नी बासमत के वंश थे।

14. एसाव की पत्नी ओहोलीबाझ जो सिबोन की नतिन और उनकी पुत्री थी, उसने एसाव के इन पुत्रों का जन्म दिया। यूश, पालाम और कोरह।

15. एसाव के वंशजों में प्रधान हुए वे थेः एसाव के पहलौठे के वंशजों के प्रधान पुरुष थेः तेमान, ओमर, सपो, कनज,

16. केरह, गाताम, अमालेक। और एलीपज के वंशजों में, एदोम देश के यही प्रधान थे और वे आदा के वंश के थे।

17. एसाव के पुत्र रूएल के वंश में जो प्रधान हुए वे थेः नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा। ये एदोम देश में ये प्रधान बासमत नामक एसाव की पत्नी के वंश के थे।

18. एसाव की तीसरी पत्नी ओहोलीबाम की सन्तानों में से जो अधिपति हुए वे थेः यूश, यालाम और कोरह जो अना की पुत्री ओहोलीबाम से उत्पन्न हुए थे।

19. एसाव जिसका दूसरा नाम एदोम था उसकी सन्तान ये ही थे जो अपने-अपने कुलों के मूल पुरुष थे।

20. ळोरी जाति के सेईर के पुत्र जो उस देश में मूल निवासी थे उसके पुत्र थेः लोतान शोबाल, शिबोन अना,

21. दीशोन, एसेर और दीशान। ये सब होरी जाति के प्रधान थे जो सेईर से उत्पन्न थे।

22. लोतान के दो पुत्रः होरी और हेमाम थे तथा एक पुत्री उनकी बहन तिम्ना थी।

23. शोबाल के पुत्र थेः आल्वान, महानत, एबाल, शपो और ओनाम।

24. सिबोन के पुत्र थेः अय्या और अना जिसने अपने पिता सिकेन के गदहों के जंगल में चराते समय गर्म पानी के झरने खोजे थे।

25. अना का एक पुत्र, दीशोन और एक पुत्री ओहोलीबाझ थी।

26. दीशोन के पुत्र थेः हेमदान, एश्बान, यित्रान और करान।

27. एसेर के पुत्र थेः बिल्हान, जाबान और अकान।

28. दीशान के पुत्र थेः ऊस और अरान।

29. होशियों के प्रधान पुरुष थेः लोतान, शोषाल, शिषोन, अना

30. दीशोन, एसेर, दीशान। सेईर में होरी जाति के मूल पुरुष ये ही थे।

31. इससे पहले कि इस्राएल पर कोई राजा होता एदोम में जो राजा हुए उनके नाम हैंः

32. एदोम का सर्वप्रथम राजा था, बोर पुत्र बेला। उसकी राजधानी थी, दिन्हाबा।

33. बेला के मरणोपरान्त बोस्त्रा के जेरह का पुत्र योबाब राजा हुआ।

34. योबाब के मरणोपरान्त तेमानियों के देश का हूशाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

35. हूशाम के मरणोपरान्त बदह का पुत्र हदद राजा हुआ। हूशाम की सेना ने मोआब में मिद्यानियों की सेना को पराजित किया था। उसकी राजधानी अबीत थी।

36. हदद के मरणोपरान्त मस्रेक के सम्ला ने राज-काज संभाला था।

37. सम्ला के मरणोपरान्त फरात नदी के तटीय नगर रहोबोत का निवासी शाऊल राजा बना।

38. शाऊल के मरणोपरान्त अकबोर पुत्र बालहानान राजा बना।

39. अकबोर पुत्र बाल हानान के मरणोपरान्त हदर उसके स्थान पर राजा बना। उसकी राजधानी का नाम पाऊ था और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था जो मेज़ाहब की पुत्री मत्रेद की पुत्री थी।

40-43. यह एसाव वंशियों की सूची हैः तिम्ना, अल्बा, यतेत, ओहोलीबाझ, एला, पीनोन, कनज, तेमान, मिबसार, मग्दीएल, ईराम। ये सब एदोम देश के निवासी थे। जिस स्थान पर उनका जो समुदाय रहता था वही उस देश का नाम पड़ गया।

अध्याय 37.

1. याकूब कनान देश में ही रहता था जहाँ उसका पिता परदेशी होकर रहा था।

2. याकूब के परिवार का इतिहास यह हैः

याकूब का पुत्र यूसुफ सत्रह वर्ष का था तब वह भी अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियां चराने लगा। वह अपने पिता की रखैलियों बिल्हा और जिल्पा पुत्रों के साथ जाया करता था और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता को देता था।

3. याकूब यूसुफ के अन्य सब पुत्रों से अधिक प्रेम करता था क्योंकि यूसुफ याकूब की वृद्धावस्था का पुत्र था। उसने यूसुफ के लिए एक रंग-बिरंगा अंगरखा भी बनवाया था।

4. यह देखकर कि पिता यूसुफ से अधिक प्रेम करता है, उसके भाई उससे ईष्र्या करने लगे और उसके साथ दया का व्यवहार भी नहीं करते थे।

5. एक रात यूसुफ ने स्वप्न देखा और अपने भाइयों को वह स्वप्न सुनाया जिसे सुनकर वे और भी अधिक ईष्र्या से भर गए।

6. उसने कहा, “मैंने जो स्वप्न देखा वह यह थाः

7. मैंने देखा कि हम सब खेत में गेहूं की फसल के पूले बांध रहे हैं। मेरा पूला अकस्मात ही खड़ा हो गया और तुम सबके पूले उसके चारों ओर एकत्र होकर उसे दण्डवत् करने लगे।”

8. उसके भाइयों ने उससे कहा, “तेरे कहने का अर्थ क्या यह है कि तू एक दिन हम पर प्रभुता करेगा? क्या तू हमारा राजा बनेगा? उसका स्वप्न सुनकर वे उससे और अधिक ईष्र्या करने लगे।

9. कुछ दिनों के बाद उसने एक और स्वप्न देखा। उसने वह स्वप्न भी अपने भाइयों को सुनाया। उसने कहा, “मैंने एक और स्वप्न देखा है जिसमें सूर्य, चन्द्रमा और ग्यारह सितारे मुझे दण्डवत् कर रहे थे!” उसने अपने पिता को भी वह स्वप्न सुनाया। उसके पिता ने उसे झिड़ककर कहा, “तू इस स्वप्न के द्वारा क्या कहना चाहता है?” तेरे कहने का अर्थ है कि तेरी माता और मैं तेरे बड़े भाई एक दिन भूमि पर गिरकर तुझे दण्डवत करेंगे?”

10.

11. “यूसुफ के भाई तो सुनकर उससे ईष्र्या करने लगे परन्तु उसके पिता ने उसका यह स्वप्न स्मरण रखा।

12. एक दिन जब यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराते हुए शकेम के निकट पहुंच गए थे।

13. तब याकूब ने यूसुफ ने कहा, “तेरे भाई शकेम में भेड़-बकरियां चरा रहे होंगे, इसलिए मैं तुझे उनका समाचार पूछने भेज रहा हूँ।” यूसुफ ने कहा, “जो आज्ञा।”

14. उसने कहा “जाकर अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ कि वे सब कुशल से तो हैं और मुझे समाचार दो।” अतः याकूब ने यूसुफ को तराई के हेब्रोन से उसके भाइयों के पास भेजा। और यूसुफ शकेम के निकट पहुंचा।

15. जब वह खेतों में घूमता हुआ अपने भाइयों को खोज रहा था एक पुरुष ने उससे पूछा, “तू किसे ढूंढता है?” यूसुफ ने कहा, “मैं अपने बड़े भाइयों को खोज रहा हूँ। कृप्या मुझे बता कि वे भेड़-बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?” उसने कहा, “वे तो यहाँ से चले गए हैं। मैं उन्हें यह कहते सुना था, “आओ, हम दोतान की ओर चलते हैं।” अतः यूसुफ वहाँ से उत्तर की ओर गया और अपने भाइयों को दोतान के पास देखा।

16.

17.

18. उन्होंने उसे दूर से आते देखा तो उसी हत्या करने की योजना बनाई।

19. वे आपस में कहने लगे, “देखो वह स्वप्न देखने वाला आ रहा है।”

20. हम उसे मार डालेंगे और उसके शव को किसी गदेह में डाल देंगे, और यह कहेंगे कि किसी जंगली जानवर ने उसे मारकर खा लिया है। तब देखते हैं कि उसके स्वप्न कैसे सच होते हैं।

21. रूबेन ने उनकी बात सुनी तो यूसुफ को उनके हाथ से बचाने के लिए कहा, “उसको घात करना उचित नहीं है।

22. उसकी हत्या मत करो अपितु उसे जंगल के इस गड़हे में डाल दो। उस पर हाथ मत उठाओ। “यह कहकर वह वहाँ से चला गया। उसका विचार था कि वह उसे बाद में गड़हे से निकालकर पिता के पास पहुंचा देगा।

23. अतः जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंचा तब उन्होंने उसे पकड़कर उसका रंग-बिरंगा अंगरखा उतार लिया।

24. और उसे एक गड़हे में डाल दिया। वह गड़हा सूखा था, उसमें पानी नहीं था।

25. और वे भोजन करने बैठ गए। उसी समय उन्हें गिलाद प्रदेश से आता इश्माएल वंशियों का एक दल दिखाई दिया जो ऊँटों पर सुगन्ध द्रव्य और बलसान और गन्धरस लादे हुए मिस्र देश को जा रहा था कि वहाँ उसे बेचें।

26. यहूदा ने अपने बड़े और छोटे भाइयों को सुझाया, “हम अपने भाई की हत्या कर दे ंतो हमें क्या लाभ?

27. डसे हानि पहुंचाने की अपेक्षा इन इश्माएल वंशियों के हाथ उसे बेच दो। वह अन्ततः हमारा छोटा भाई ही तो है।” सब उसकी बात से सहमत हो गए।

28. जब वे मिद्यानी व्यापारी उनके निकट आए तब यूसुफ के भाइयों ने उसे गड़हे से बाहर निकाला और उसे चांदी के बीस टुकड़ों में उन्हें बेच दिया। वे व्यापारी उसे मिस्र देश ले गए।

29. जब रूबेन उस गड़हे के पास आया तो यूसुफ उसका छोटा भाई, वहाँ नहीं था। उसने अपने वस्त्र फाड़े

30. और अपने भाइयों के पास जाकर कहने लगा, “लड़का तो वहाँ नहीं है! अब मैं किसके पास जाऊँ?”

31. तब उन्होंने अपने पिता के भय से एक कहानी गड़ी। उन्होंने उसका अंगरखा एक बकरे को मारकर उसके रक्त में रंग दिया।

32. और अपने पिता के पास जाकर कहा, “हमें यह वस्त्र मिला है इसे देखकर पहचान कि यह तेरे पुत्र का है क्या?”

33. याकूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “हां, यह तो मेरे पुत्र का है। किसी खूंखार जानवर ने उस पर झपट कर उसकी हत्या कर दी होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि उस जानवर ने यूसुफ के टुकड़े-टुकड़े कर दिए होंगे।”

34. याकूब ने दुख के कारण अपने वस्त्र फाड़े और टाट पहना और अपने पुत्र के लिए बहुत दिनों तक विलाप करता रहा।

35. उसके पुत्रों ने उसे शान्ति देने का प्रयास किया परन्तु उसे शान्ति न मिली। वह यही कहता रहा, “मैं मरने तक विलाप करता रहूंगा और फिर अपने पुत्र के पास चला जाऊँगा।” अतः वह अपने पुत्र के लिए रोता ही रहा।

36. उधर मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र ले जाकर फिरौन के एक अधिकारी के हाथ बेच दिया। वह फिरौन के अंगरक्षकों का प्रधान था।

अध्याय 38.

1. उस समय यहूदा अपने भाइयों से अलग होकर अदुल्लाम चला गया और वहाँ हीराम नगर के एक पुरुष के साथ रहने लगा।

2. वहाँ शूआ नाम का एक कनानी पुरुष था। उसी पुत्री को यहूदा ने देखा। उससे विवाह करके उसके पास गया।

3. वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। यहूदा ने उसका नाम एर रखा।

4. कुछ समय बाद वह फिर गर्भवती हुई और एक और पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम उन्होंने ओनान रखा।

5. अनेक वर्षों बाद यहूदा और उसका परिवार कजीब में रहने के लिए गए। वहाँ उसकी पत्नी ने एक और पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने शेला रखा।

6. यहूदा के पुत्र एर के वयस्क हो जाने पर यहूदा ने उसका विवाह तामार नाम की एक युवति से करवाया।

7. परन्तु एर ने यहोवा की दृष्टि में दुष्टता की इसलिए यहोवा ने उसको मार डाला।

8. एर के मरणोपरान्त यहूदा ने अपने पुत्र ओनान से कहा, “जाकर अपने भाई के साथ देवर का धर्म निभा और अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न कर।”

9. ओनान जानता था कि इस प्रकार उत्पन्न सन्तान उसकी नहीं कहलाएगी। इसलिए वह जब अपनी भाभी के साथ सोया उसने तब-तब अपना वीर्य भूमि पर गिरा दिया जिससे कि तामार गर्भवती न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले।

10. यहोवा ने उसके इस कर्म को दुष्टता मानकर उसे भी मार डाला।

11. तब यहोवा ने अपनी बहू तामार से कहा, “अपने पिता के पास चली जा परन्तु किसी से विवाह न करना। जब मेरा पुत्र शेला वयस्क हो जाएगा तब मैं तेरा विवाह उससे करा दूंगा। परन्तु सच तो यह था कि यहूदा नहीं चाहता था कि शेला तामार से विवाह करे क्योंकि वह डरता था कि शेला भी मर जाएगा जैसे उसके दो बड़े भाई मर गए थे। तामार यहूदा की बात मानकर अपने पिता के घर चली गई।

12. कुछ वर्षों बाद यहूदा की पत्नी, शूआ की पुत्री, मर गई और उसके शोक का समय पूरा हो गया तब यहूदा ने तिम्ना जाने का विचार किया क्योंकि वहाँ उसके सेवक उसकी भेड़ों का ऊन कतरवा रहे थे। उसका मित्र अदुल्लामवासी हीराम भी उसके साथ था।

13. किसी ने तामार को समाचार दिया, “तेरा ससुर तिम्ना जा रहा है उसकी भेड़ों का ऊन कतरने वालों की सहायता करे।

14. वह जानती थी कि शेला वयस्क हो गया है परन्तु यहूदा ने उसे उसकी पत्नी नहीं बनाया। अतः उसने अपने विधवा के वस्त्र उतारकर अपने मुख पर परदा डाला कि कोई उसे पहचान न पाए और तिम्ना के मार्ग पर एनैम नगर के फाटक पर बैठ गई।

15. उसे देखकर यहूदा ने समझा कि वह वैश्या है। वह उसे पहचान नहीं पाया क्योंकि उसका मुंह ढंका हुआ था।

16. वह मार्ग से उसके पास आया और कहा, “मुझे अपने साथ सोने दे।” उसने कहा, “तू बदले में मुझे क्या देगा?”

17. उसने कहा, “मैं अपनी बकरियों में से एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा।” उसने कहा, “तू जब तक वह बकरी का बच्चा भिजवाएगा तब तक मेरे पास कुछ रखा दे।” उसने कहा, “तू क्या चाहती है कि मैं तेरे पास रख दूं?” उसने कहा “अपनी मुहर वाली अंगूठी और उसे रोकने वाली कंठ माला तथा तेरी छड़ी जिसे तू हाथ में पकड़े हुए है।” अतः उसने वह सब उसके पास रख दिया और उसके साथ सोया। परिणाम-स्वरूप वह गर्भवती हो गई।

18.

19. घर लौटने के बाद उसने परदा हटा कर अपने विधवा के वस्त्र धारण कर लिए।

20. यहूदा ने अदुल्लाम के एक अपने मित्र के हाथ बकरी का बच्चा उस स्त्री के पास भिजवाया, जैसा उसने उसे वचन दिया था। परन्तु उसके मित्र को वह स्त्री कहीं नहीं मिली।

21. उसके मित्र ने वहां के निवासियों से भी पूछा, “एनैम में मार्ग के किनारे एक देवदासी बैठी थी वह कहां है?” उन्होंने उत्तर दिया, “यहां तो कभी कोई देवदासी नहीं हुई।”

22. अतः वह यहूदा के पास लौट गया और उससे कहा, “मुझे तो वह स्त्री कहीं नहीं मिली। वरन् वहां के निवासियों ने कहा, ‘यहां तो कभी कोई देवदासी नहीं हुई है।’”

23. यहूदा ने कहा, “उसे वे वस्तुएं रखने दो क्योंकि यदि हम उसकी खोज करेंगे तो लोग हमारा ठट्ठा करेंगे। मैंने तो यह बकरी का बच्चा भेज कर अपना वचन निभाया परन्तु वह तुझे नहीं मिली कि उसे देता।”

24. लगभग तीन माह पश्चात किसी ने यहूदा से कहा, “तेरी बहू वैष्या हो गई है और वह गर्भवती है।” यहूदा ने कहा, “उसे नगर से बाहर खींच कर लाओ। और जला कर मार डालो।”

25. जब वे उसे नगर से बाहर ला रहे थे तब उसने यहूदा की मुहर और छड़ी किसी के हाथ यहूदा के पास भिजवा दी और कहलवाया कि जिस पुरूष से वह गर्भवती है, उसी की यह वस्तुएं हैं।” उसने उस वाहक से कहा कि उससे कहना, “इस अंगूठी और इसकी कंठमाला तथा छड़ी को पहचान ले कि वे किसके हैं?”

26. यहूदा ने उस पुरूष द्वारा लाई गई अपनी अंगूठी और छड़ी को पहचान जिया। उसने कहा, “वह तो मुझसे अधिक न्यायेचित्त है। मैंने प्रतिज्ञा की और अपने पुत्र शेला से उसका विवाह नहीं किया।” यहूदा फिर कभी उसके साथ नहीं सोया।

27. उसके प्रसव का समय आया तो उसे ज्ञात हुआ कि उसके गर्भ में जुड़वा बच्चे हैं। प्रसव के समय

28. एक ने अपना हाथ बाहर निकाला तो धाय ने उसके हाथ पर लाल धागा बांध दिया।

29. परन्तु उसने अपना हाथ खींच लिया और दूसरा बच्चा उत्पन्न हो गया। उसने कहा, “तू क्यों बलपूर्वक निकल आया है?” इस कारण उसका नाम पेरेस रखा गया। तदोपरान्त उसका भाई जिसके हाथ में लाल धागा बंधा था, उत्पन्न हुआ। उसका नाम जेरह रखा गया। जिसका अर्थ है लाली या भोर।

अध्याय 39

1. इस बीच इश्माएलवंशी यूसुफ को लेकर मिस्र पहुंचे। वहां पोतीपर ने यूसुफ को खरीद लिया। पोतीपर एक मिस्री था जो राजा का अधिकारी था। वह राजा के महल के सुरक्षाकर्मियों का प्रधान था।

2. क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था, यूसुफ अपना उत्तरदायित्व निभाने से नहीं चूकता था। वह अपने मिस्री स्वामी के घर में सेवा करता था।

3. उसके स्वामी को यह बोध हो गया था कि यहोवा का हाथ यूसुफ पर है और वह उसे हर एक काम में सफलता प्रदान कर रहा है।

4. यूसुफ का स्वामी उससे प्रसन्न रहता था। अतः उसने उसे अपना निजि सेवक बना लिया। तदोपरान्त उसने उसे अपने कुटुम्ब का सर्वेसर्वा सेवक बना दिया कि उसकी संपूर्ण संपदा की देखभाल करे।

5. जब से पोतीपर ने यूसुफ को अपने घर का सर्वेसर्वा ठहराया तब से यहोवा ने पोतीपर के घर में सब रहने वालों को समृद्धि प्रदान करना आरंभ कर दिया जिसका कारण यूसुफ ही था। यहोवा ने पोतीपर की फसल को भी बढ़ाया।

6. पोतीपर ने यूसुफ पर अपने घर का पूरा प्रबंध छोड़ दिया। वह केवल अपने भोजन की चिन्ता करता था। उसे अपने घर में और किसी बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। यूसुफ रूपवान और आकर्षक था।

7. अतः उसके स्वामी की पत्नी ने उस पर बुरी दृष्टि डाली। एक दिन उसने यूसुफ से कहा, “मेरे साथ सो।”

8. परन्तु उसने इंकार करके कहा, “सुन! मेरा स्वामी इस घर में किसी बात की चिन्ता नहीं करता है। उसने अपनी संपूर्ण समुदाय का उत्तरदायित्व मुझे सौंप दिया है।

9. इस घर में मुझ से अधिक अधिकार किसी को प्राप्त नहीं हैं। जिस एकमात्र वस्तु को उसने मेरे अधिकार में नहीं दिया है वह तू है क्योंकि तू उसकी पत्नी है। अतः मैं ऐसी दुष्टता कैसे कर सकता हूं जिसके लिए तू मुझसे कहती है? यदि मैंने ऐसा किया तो वह परमेश्वर की दृष्टि में पाप ठहरेगा।”

10. वह दिन-प्रतिदिन यूसुफ से उसके साथ सोने के लिए कहती रही परन्तु वह इंकार करता रहा। वह उसके निकट भी नहीं जाता था।

11. एक दिन जब यूसुफ घर में अपना काम करने के लिए गया तब घर में अन्य कोई सेवक नहीं था।

12. पोतीपर की पत्नी ने उसे पकड़ लिया और कहा, “मेरे साथ सो!” यूसुफ बच कर घर से बाहर भागा परन्तु उसका वस्त्र उसी के हाथ में रह गया।

13. जब उसने देखा कि यूसुफ अपना वस्त्र छोड़ कर बाहर भाग गया,

14. उसने घर के सब सेवकों को बुला कर कहा, “देखो, यह इब्री दास जिसे मेरा पति ले आया है, हमारा अपमान कर रहा है। वह मेरे पास भीतर आया और मुझे विवश कि उसके साथ सोऊं। परन्तु मैं चिल्लाई।

15. मेरा चिल्लाना सुन क रवह अपना वस्त्र छोड़ कर बाहर भाग गया।

16. उसने यूसुफ के स्वामी के घर आने तक उसका वस्त्र अपने पास रखा।

17. तब उसे यह कहानी सुनाई, “वह इब्री दास जिसे तू यहां ले आया है, मेरे पास भीतर आया और मुझे साथ सोने के लिए विवश करने लगा।

18. परन्तु जब मैं चिल्लाई तो अपना वस्त्र छोड़ कर बाहर भाग गया।”

19. यह कहानी सुना कर उसने यूसुफ के स्वामी से कहा, “तेरे दास ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है।” अपनी पत्नी की कहानी सुन कर यूसुफ का स्वामी आग बबूला हो गया।

20. उसने यूसुफ को ले जाकर कारावास में डाल दिया जहां राजा के सब बन्दी रखे जाते थे। यूसुफ वहीं रहा।

21. परन्तु यूसुफ पर यहोवा की कृपा दृष्टि थी क्योंकि उसने यूसुफ के पूर्वजों से वाचा बांधी थी। यहोवा ने कारावास के अधीक्षक के मन में यूसुफ के लिए स्थान उत्पन्न किया।

22. अतः कारागार अधीक्षक ने यूसुफ को सब बन्दियों और कारावास के सब कामों का सर्वेक्षक ठहरा दिया।

23. कारावास अधीक्षक को किसी बात की चिन्ता नहीं करना थी क्योंकि यूसुफ काम संभाल रहा था। यहोवा उसके साथ था इस कारण उसका काम उत्तम था।

अध्याय 40

1. कुछ समय बाद राजा के दो कर्मचारियों ने राजा को रूष्ट करने वाले काम किए। उनमें एक उसके पिलाने वालों का प्रधान था और दूसरा उसका प्रधान पकाने वाला था।

2. राजा उन दोनों से क्रोधित हुआ।

3. अतः उसने उन्हें महल के सुरक्षा कर्मियों के प्रधान के कारावास में डलवा दिया। यूसुफ भी उसी कारावास में था।

4. वे दोनों बहुत समय कारावास में रहे। सुरक्षाकर्मियों के प्रधान ने उन्हें यूसुफ के हाथों में सौंप दिया और यूसुफ उनकी सुधि लेने लगा।

5. एक रात राजा के पिलाने वालों के प्रधान और प्रधान पकाने वाले, दोनों ने स्वप्न देखे। दोनों के स्वप्न के अर्थ अलग-अलग थे।

6. अगले दिन सुबह जब यूसुफ उनके पास आया तो दोनों उदास बैठे हुए थे।

7. यूसुफ ने उनसे पूछा, तुम आज इतने उदास क्यों हो?

8. उनमें से एक ने कहा, “हम दोनों ने रात में स्वप्न देखे हैं परन्तु हमारे सपनों का अर्थ बताने वाला कोई नहीं है।” यूसुफ ने उनसे कहा, “परमेश्वर स्वप्नों का अर्थ बता सकता है। मुझे अपना-अपना स्वप्न बताओ और परमेश्वर मुझे उनका अर्थ सुझाएगा।”

9. अतः राजा के पिलाने वालों के प्रधान ने यूसुफ को अपना स्वप्न सुनाया। उसने कहा, “स्वप्न में मैंने देखा कि मेरे सामने दाख की लता है।

10. उस दाख लता की तीन शाखाएं हैं। उनकी शाखाओं से कोंपलें निकलीं और उनमें फूल आए और उनमें अंगूरों के गुच्छे लगे।

11. मैं राजा का कटोरा हाथ में लिए हुए था इसलिए मैंने पकी हुई दाख लेकर निचोड़ी और उनका रस कटोरे में भर दिया। और राजा को रस पीने के लिए वह कटोरा दे दिया।”

12. परमेश्वर ने तुरन्त यूसुफ को उसका अर्थ सुझा दिया। अतः यूसुफ ने उससे कहा, “तेरे स्वप्न का अर्थ है, दाखलता की तीन शाखाओं का अर्थ है तीन दिन।

13. तीन दिन में राजा तुझे कारावास से निकाल कर तेरे काम पर पुनः नियुक्त कर देगा। तू पहले के जैसा राजा को दाखरस का कटोरा देगा जैसे तू पहले उसका पिलानेवाला था।

14. जब तू कारावास से बाहर जाए और तेरा कुशल हो तो कृपया मुझे स्मरण रखना।

15. लोगों ने मुझे बलपूर्वक मेरे देश से, जहां मेरे इब्री साथी हैं, निकाल कर यहां बेच दिया। यहां मिस्र में भी मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया कि मुझे कारावास में डाल दिया जाए। अतः मुझ पर दया करके राजा से मेरी चर्च करना कि वह मुझे कारावास से मुक्त करा दे।

16. जब प्रधान पकाने वाले ने सुना कि पिलाने वालों के प्रधान का स्वप्न शुभ है, उसने भी अपना स्वप्न यूसुफ को सुनाया। उसने कहा, “मैंने भी एक स्वप्न देखा है। मेरे सिर पर सफेद रोटियों की तीन टोकरियां हैं।

17. ऊपर की टोकरी में राजा के लिए विभिन्न पके हुए व्यंजन हैं। परन्तु पक्षी आकर उन्हें मेरे सिर पर रखी उस टोकरी में से खा रहे हैं।”

18. परमेश्वर ने उस स्वप्न का अर्थ भी यूसुफ को सुझाया। अतः यूसुफ ने उससे कहा, “तीन टोकरियों का अर्थ है तीन दिन।

19. तीन दिन में राजा आज्ञा देगा कि तेरा सिर काटा जाए। तब तेरा शव पेड़ पर लटका दिया जाएगा और पक्षी तेरा मांस नोच नोच कर खायेंगे।”

20. इस के बाद तीसरे दिन राजा का जन्मदिन था। उस दिन राजा ने अपने सब अधिकारियों को भोज पर आमंत्रित किया और पिलाने वालों के प्रधान और प्रधान पकाने वाले को भी कारावास से निकलवाया।

21. पिलाने वालों के प्रधान को तो उसने पुनः उसके पद पर नियुक्त कर दिया और वह राजा के हाथ में कटोरा देने लगा।

22. परन्तु प्रधान पकाने वाले के लिए उसने आज्ञा दी कि उसे वृक्ष पर लटका दिया जाए जैसा यूसुफ ने उनके स्वप्नों का अर्थ बताया था।

23. परन्तु पिलाने वालों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण नहीं रखा। वह यूसुफ के निवेदन को भूल गया।

अध्याय 41

1. पूरे दो वर्षों के बाद मिस्र के राजा ने एक स्वप्न देखा। अपने स्वप्न में वह नील नदी के तट पर खड़ा था।

2. अकस्मात् ही वहां सात हुष्ट पुष्ट गायें निकल कर नदी के तट पर घास चरने लगीं।

3. फिर सात गायें और नील नदी से निकलीं वे दुर्बल और सूखी हुई थीं, निकलीं और हुष्ट पुष्ट गायों के पास खड़ी हो गईं।

4. उन दुर्बल गायों ने हुष्ट पुष्ट गायों को खा लिया। तब राजा जाग गया।

5. जब राजा को नींद आ गई तब उसने एक और स्वप्न देखा। उस ने देखा कि एक डंडी में से गेहूं की सात बालें निकली जो अच्छी और पक कर भरी हुई थीं।

6. फिर उसने देखा कि उसी डंडी में से सात और बालें निकली जो सूखी और गर्म पुरवाई के कारण मुरझाई थीं।

7. तब उन सात सूखी बालों ने उन भरी हुई बालों के निगल लिया। तब राजा जाग गया और उसे बोध हुआ कि वह स्वप्न देख रहा है।

8. परन्तु अगले दिन सुबह वह अपने उन स्वप्नों के बारे में चिंतित था। अतः उसने मिस्र के सब ज्योतिषियों और जादूगरों को बुलवाया। उसने उन्हें अपने स्वप्न सुनाए परन्तु कोई भी स्वप्नों के अर्थ नहीं बता पाया।

9. तब राजा के पिलाने वालों के प्रधान ने राजा से कहा, “आज मुझे स्मरण आता है कि मैं आपको एक बात बताना भूल गया जो मेरी भारी भूल है।

10. एक बार तूने क्रोध में आकर मुझे और प्रधान पुकाने वाले को महल के सुरक्षाकर्मियों के प्रधान के घर के कारावास में डलवा दिया था।

11. वह हम दोनों ने स्वप्न देखे थे जिनके अर्थ अलग-अलग थे।

12. वहां हमारे साथ एक इब्री युवक भी था। वह महल के सुरक्षाकर्मियों के प्रधान का सेवक सा था। हमने उसे अपना-अपना स्वप्न सुनाया और उसने हमें स्वप्नों के अर्थ बताए।

13. उसके बाद जो हुआ वह ठीक वैसा ही था जैसा उसने स्वप्नों का अर्थ बताया था। तूने मुझे अपने पद पर नियुक्त कर दिया और पकाने वाले को वैसे ही पेड़ पर लटका दिया।”

14. यह सुनकर राजा ने सेवकों को भेज कर यूसुफ को बुलवाया। उन्होंने तुरन्त जाकर यूसुफ को कारावास से निकाला और बाल कटवा कर और वस्त्र बदल कर राजा के समक्ष उपस्थित किया।

15. राजा ने यूसुफ से कहा, “मैंने दो स्वप्न देखे हैं जिनका अर्थ कोई नहीं बता पा रहा है। मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू स्वप्न का अर्थ तुरन्त बता देता है।”

16. यूसुफ ने राजा को उत्तर दिया, “मैं तो कुछ नहीं जानता। परमेश्वर ही फिरौन के लिए शुभ वचन देगा।”

17. तब राजा ने यूसुफ से कहा, “मेरे पहले स्वप्न में मैं नील नदी के तट पर खड़ा हूं।

18. और वहां सात हुष्ट पुष्ट गायें नील नदी से निकलीं और नदी के तट पर घास चरने लगीं।

19. उसके बाद लीन नदी से सात दुर्बल और सूखी हुई गायें निकलीं। मैंने संपूर्ण मिस्र में ऐसी कुयप गायें कभी नहीं देखी थीं।

20. दुर्बल गायों ने उन हुष्ट पुष्ट गायों को निगल लिया।

21. परन्तु कोई नहीं कह सकता था कि उन दुर्बल गायों ने उन हुष्ट पुष्ट गायों को निगल लिया है। क्योंकि वे वैसी ही दुर्बल थीं। तब मेरी निद्रा भंग हो गई।

22. मैं फिर सो गया और एक और स्वप्न देखा। मैं गेहूं की सात भरी हुई बालें देखीं जो पकी हुई और गेहूं के दानों से भरी हुई थीं और एक ही डंडी में उग रही थीं।

23. मुझे आश्चर्य तब हुआ जब मैंने देखा कि उस डंडी में से सात और बालें निकली जो सूखी और पुरवाई से मुरझाई हुई थीं।

24. इन सात सूखी बालों ने उन भरी हुई बालों को निगल लिया। मैंने अपने जादूगरों को ये स्वप्न सुनाए परन्तु कोई भी अर्थ नहीं बता सकता है।”

25. यूसुफ ने राजा से कहा, “तेरे दोनों स्वप्नों का अर्थ एक ही है। परमेश्वर तुझे स्वप्नों के द्वारा बता रहा है कि वह क्या करने वाला है।

26. सात हुष्ट पुष्ट गायों का अर्थ है सात वर्ष और सात पकी हुई और भरी हुई बालों का अर्थ भी सात वर्ष है। दोनों स्वप्नों का एक ही अर्थ है।

27. सात दुर्बल गायों और सात सूखी हुई बालों का अर्थ है, अकाल के सात वर्ष।

28. जैसा मैंने तुझसे कहा है, वैसा ही होगा क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर वही प्रकट किया है जो वह करेगा।

29. सात वर्ष संपूर्ण मिस्र में भोजन की बहुतायत होगी।

30. इसके बाद सात वर्ष अकाल के सात वर्ष होंगे। उस समय लोग समृद्धि के उन सात वर्षों को भूल जायेंगे क्योंकि वह अकाल देश का विनाश कर देगा।

31. भयंकर अकाल के कारण लोग पूर्वकालिक बहुतायत को भूल जायेंगे।

32. परमेश्वर ने तुझे ये दो स्वप्न इयलिए दिखाए हैं कि उसने दृढ़ निर्णय लिया है कि ऐसा ही हो और अतिशीघ्र वह ऐसा करेगा।

33. मेरा सुझाव तो यह है कि तू किसी बुद्धिमान मनुष्य को चुन ले जो उचित निर्णय ले सकता है और उसे संपूर्ण देश की व्यवस्था का काम सौंप दे।

34. तू देश पर अधिकारियों को भी नियुक्त कर कि वे भोजन की बहुतायत के समय संपूर्ण फसल का पांचवा भाग सात वर्ष तक बचाएं। प्रत्येक नगर इस प्रकार एकत्र किए हुए भोजन की निगरानी करे और उसे सुरक्षित करे।

35. यह अन्न मिस्र में अकाल के सात वर्ष काम आएगा कि इस देश की प्रजा भूख के कारण मर न जाए।”

36. राजा और उसके अधिकारियों को यह योजना अच्छी लगी।

37. राजा ने उनसे कहा, “क्या हमें यूसुफ जैसा कोई पुरूष मिल सकता है, ऐसा मनुष्य जिसे परमेश्वर ने अपना आत्मा दिया है?”

38. तब राजा ने यूसुफ से कहा, “परमेश्वर ने तुझ पर यह सब प्रकाशित किया है इसलिए मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तेरे तुल्य बुद्धिमान और कोई नहीं है और ऐसा कोई नहीं जो बुद्धिमानी के निर्णय ले पाए।

39. अतः मैं तुझे अपने महल में सर्वेसर्वा नियुक्त करता है। संपूर्ण मिस्र तेरी आज्ञाओं का पालन करेगा। मैं केवल इसलिए अधिक अधिकार रखता हूं क्योंकि मैं राजा हूं।”

40. तब राजा ने यूसुफ से कहा, “आज मैं तुझे संपूर्ण मिस्र प्रदेश का अधिकारी ठहराता हूं।”

41. और राजा ने अपने उंगली से मुहर की अंगूठी उतार कर यूसुफ की उंगली में पहना दी। राजा ने उसे उत्तम वस्त्र पहना कर उसके गले में सोने की जंजीर पहना दी।

42. और यूसुफ के लिए रथ की व्यवस्था की कि उसे संपूर्ण मिस्र देश में घुमाए जिससे प्रकट हो कि राजा के बाद दूसरा महत्वपूर्ण व्यक्ति वही है। जब यूसुफ रथ में सवार जा रहा था तब सेवक लोगों को पुकार कर कहते थे, “दण्डवत् करो!” अतः यूसुफ अपना काम देखने के लिए संपूर्ण देश में भ्रमण करने लगा।

43. राजा ने यूसुफ से कहा, “मैं राजा अवश्य हूं परन्तु संपूर्ण मिस्र में तेरी अनुमति के बिना कोई कुछ नहीं कर पाएगा।”

44. और राजा ने यूसुफ को एक नया नाम दिया, सापनत्पानेह और ओर नगर के याजक पोतीपेरा की पुत्री, आसनत से उसका विवाह करा दिया। इस प्रकार यूसुफ संपूर्ण मिस्र देश में प्रतिष्ठित हो गया।

45. मिस्र के राजा की सेवा में आने पर यूसुफ तीस वर्ष का था। अपना काम निष्पन्न करने के लिए यूसुफ महल से निकल कर संपूर्ण देश का भ्रमण करने लगा।

46. पूरे सात वर्ष तक उपज की बहुतायत रही जिसके कारण भोजन सामग्री आवश्यकता से अधिक थी।

47. यूसुफ ने देश की संपूर्ण उपज का पांचवां भाग एकत्र करके नगरों के गोदामों में सुरक्षित कर दिया। उसने हर एक नगर में कर्मियों को नियुक्त किया कि वहां के ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पन्न उपज का भंडारण करें।

48. यूसुफ ने अन्न के बड़े-बड़े भंडार बना लिए और अन्न ऐसा हो गया जैसे समुद्र की तटीय रेत के कण। अन्न इतना अधिक हो गया था कि उन्होंने उसका लेखा रखना छोड़ दिया क्योंकि अन्न माप करने से कहीं अधिक था।

49. अकाल के सात वर्ष आरंभ होने से पूर्व यूसुफ की पत्नी आसनत ने दो पुत्रों को जन्म दिया।

50. यूसुफ ने बड़े पुत्र का नाम मनश्शे रखा जिसका अर्थ है, “भूलना” क्योंकि उसने कहा, “परमेश्वर ने मुझे अपने कष्ट और परिवार को भूलने में सहायता की है।”

51. और दूसरे पुत्र का नाम उसने एप्रैम रखा जिसका अर्थ है, “संतान प्राप्ति” क्योंकि उसने कहा, “परमेश्वर ने मुझे इस देश में जहां मैंने कष्ट भोगा, मुझे संतान दी।”

52. बहुतायत के सात वर्षों का अन्ततः समापन हुआ।

53. अब अकाल के सात वर्ष आरंभ हुए जैसा यूसुफ ने कहा था। अकाल मिस्र में ही नहीं आसपास के सब देशों में पड़ा।

54. परन्तु फसलों के न होने पर भी मिस्र में भोजन सामग्री बहुत थी क्योंकि उन्होंने हर एक नगर में अन्न का भंडारण करके रखा था।

55. जब प्रजा के लोगों की भोजन सामग्री समाप्त हो गई और उन्हें भूख लगी तब उन्होंने राजा से भोजन मांगा। राजा ने लोगों से कहा, “यूसुफ के पास जाओ और जैसा वह कहता है वैसा ही करो।”

56. जब अकाल के कारण देश की दुर्दशा होने लगी तब यूसुफ ने अपने सहकर्मियों से कहा कि वे गोदामों को खोल दें। उन्होंने मिस्रवासियों को अन्न बेचना आरंभ कर दिया। संपूर्ण देश भयंकर अकाल से ग्रस्त था।

57. आसपास के देशों से भी लोग यूसुफ से अन्न मोल लेने आते थे क्योंकि वहां भी भयंकर अकाल पड़ा था।

अध्याय 42

1. याकूब को जब यह समाचार मिला कि मिस्र में अन्न है और लोग जाकर खरीद रहे हैं तो उसने अपने पुत्रों से कहा, “तुम लोग यहां बैठ कर एक दूसरे को क्यों देख रहे हो? हमें भोजन चाहिए।

2. मुझे किसी ने बताया है कि मिस्र में अन्न बिक रहा है। वहां जा कर अन्न मोल ले आओ कि हम जीवित रहें।”

3. अतः यूसुफ के दसों बड़े भाई अन्न मोल लेने के लिए मिस्र गए।

4. परन्तु याकूब ने यूसुफ के छोटे भाई, बिन्यामीन को उनके साथ नहीं भेजा क्योंकि वह डरता था कि उसके साथ भी यूसुफ जैसी कोई दुर्घटना न हो जाए।

5. अतः यूसुफ के भाई अन्न मोल लेने के लिए मिस्र को गए। कनान से और भी लोग अन्न खरीदने वहां गए क्योंकि कनान में भी अकाल पड़ा था।

6. मिस्र देश का अधिकारी यूसुफ ही था और वही सब लोगों को अन्न बेचता था। यूसुफ के भाई जब उसके पास आए तब उन्होंने भूमि पर गिर कर उसे दण्डवत् किया।

7. यूसुफ तो उन्हें पहचान गया था परन्तु उसने जान बूझ कर अनजाना व्यवहार करते हुए उनसे कठोरता से पूछा, “तुम लोग कहां से आए हो?” उनमें से एक ने उत्तर दिया, “हम लोग कनान देश से यहां अन्न मोल लेने आए हैं।”

8. यूसुफ तो अपने भाइयों को पहचान गया था परन्तु वे उसे पहचान न पाए।

9. यूसुफ को वर्षों पूर्व के अपने स्वप्न स्मरण हुए। परन्तु अभी वह उन पर प्रकट नहीं करना चाहता था कि वह उनका भाई यूसुफ है। उसने उन से कहा, “तुम लोग भेदिये हो! तुम यह भेद लेने आए हो कि इस देश की दुर्बलताएं क्या हैं कि युद्ध में हमारे काम आएं।”

10. उन्होंने कहा, “हे प्रभु ऐसा नहीं है। हम तो केवल अन्न मोल लेने आए हैं।

11. हम सब एक ही पिता की संतान हैं। हम सीधे-सादे मनुष्य हैं, भेदिए नहीं हैं।”

12. यूसुफ ने उनसे कहा, “नहीं, मैं तुम पर विश्वास नहीं करता हूं। तुम केवल यह देखने आए हो कि युद्ध के समय हम कैसे इस देश पर प्रबल हो सकते हैं।”

13. उन्होंने कहा, “हम तेरे दास बारह भाई थे, जो एक ही पिता की संतान थे। हमारा सब से छोटा भाई पिता ही के पास है। और एक भाई अब जीवित नहीं है।”

14. यूसुफ ने उनसे कहा, “मैं तुम से कह चुका हूं कि तुम भेदिये हो। मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता।

15. तुम्हारा सत्य जानने का एक ही उपाय है। राजा के जीवन की शपथ तुम भेदिए हो। तुम यहां से जा नहीं सकते जब तक कि तुम्हारा सब से छोटा भाई यहां न आए।

16. अपने में से एक को भेज कर अपने छोटे भाई को यहां ले आओ। शेष सब यहां कारावास में रहो। इस प्रकार मैं जान पाऊंगा कि तुम जो कह रहे हो वह सच है या नहीं। यदि ऐसा करने में तुम चूक गए तो राजा के जीवन की शपथ तुम निश्चय ही भेदिए हो।

17. और यूसुफ ने उन सब को तीन दिन तक कारावास में रखा।

18. तीसरे दिन यूसुफ कारावास में गया और उनसे कहा, “मैं परमेश्वर का भय मानता हूं कि वह प्रतिज्ञा तोड़ने वाले को दण्ड देता है। अतः तुम मेरी बात मानों तो जीवित रहोगे।

19. यदि तुम सच्चे मनुष्य हो तो तुम में से एक यहां कारावास में रहे और शेष सब जन अन्न लेकर घर जाओ क्योंकि अकाल के कारण वे भूखे होंगे।

20. और यदि तुम यहां आओ तो अपने छोटे भाई को अवश्य लाना जिससे कि तुम अपनी बात को जो तुमने मुझसे कही है, सत्य सिद्ध कर पाओ और मैं तुम्हें मृत्यु दण्ड न दूं।” अतः उन्होंने उसकी बात मान ली।

21. उन्होंने आपस में कहा, “निश्चय ही यह यूसुफ के साथ किए गए हमारे दुष्कर्मों का दुष्प्रभाव है। वह हमसे रो-रो कर विनती करता रहा परन्तु उसके जीवन को घोर संकट में देख कर भी हमने उस पर दया नहीं की। इस कारण हम भी अब संकट में पड़ गए हैं।

22. रूबेन ने उनसे कहा, “मैं ने तुमसे कहा था कि उस लड़के को हानि मत पहुंचाओ परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अब हम हत्या का दण्ड भोग रहे हैं।

23. यूसुफ से बातें करते समय तो वे अनुवाद के माध्यम से बातें करते थे परन्तु वे आपस में अपनी मातृभाषा में बात करते थे और नहीं जानते थे कि यूसुफ उनकी बातें समझ रहा था।

24. उनकी बातें सुन कर यूसुफ समझ गया कि अपने वर्षों पुराने कुकर्म का उन्हें बोध हो गया है। अब वह अपने आप को रोक नहीं पाया इसलिए वहां से चला गया और रोने लगा। जब वह उसके पास पुनः आया तब उसने उनसे बात की और शिमोन को चुन लिया कि उसे उनके सामने ही बन्दी बना ले।

25. यूसुफ ने आज्ञा दी कि उनके बोरे भर दिए जाएं और उनका पैसा भी उन्ही के बोरों में रख दिया जाए। और उन्हें मार्ग के लिए भोजन भी दिया जाए। अतः वैसा ही किया गया।

26. उन्होंने अपना अपना बोरा गदहों पर लादा और कूच किया।

27. जब वे सराय में ठहरे तो एक ने गदहे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला और अपने बोरे में पैसा रखा देख कर चकित हो गया।

28. उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरा पैसा तो मेरे ही बारे में है। वे भय से कांपने लगे और आपस में कहा, “परमेश्वर ने हमारे साथ यह क्या किया है!”

29. वे अपने पिता के पास कनान लौटे तो उसे सारा वृतान्त सुनाया।

30. उन्होंने उसे बताया, “उस देश के स्वामी ने हमारे साथ कठोर व्यवहार किया और हमें भेएि कहा।

31. परन्तु हमने उससे कहा, “हम भेदिए नहीं सीधे-सादे मनुष्य हैं।

32. हम वास्तव में एक ही पिता के बारह पुत्र हैं। एक भाई तो मर गया है और सब से छोटा भाई पिता ही के पास कनान में है।

33. परन्तु वहां के स्वामी ने हमारा विश्वास नहीं किया और हमसे कहा, “तुम्हारा सत्य इस प्रकार प्रकट होगा कि तुम में से एक यहां रह जाए और शेष जन अन्न लेकर अपने परिवार में जाओ क्योंकि वे भूख से परेशान होंगे परन्तु लौट कर आओ और अपने छोटे भाई को लेते आना जिससे कि मैं जानूं कि तुम भेदिए नहीं सीधे लोग हो।

34. तब मैं तुम्हारे इस भाई को मुक्त कर दूंगा और तुम इस देश में जो चाहे खरीद लेना।”

35. और जब वे अपने-अपने बोरे खाली कर रहे थे तब वे बोरों में अपने-अपने पैसों का थैला देख विस्मित हो गए और डर गए।

36. उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, “तुमने मेरे दो पुत्रों को मुझसे अलग कर दिया है। यूसुफ मर चुका है और शिमोन भी घर नहीं लौटा है और अब तुम बिन्यामीन को मुझ से दूर ले जाना चाहते हो। इन सब बातों से तो मुझे ही कष्ट हो रहा है।”

37. रूबेन ने अपने पिता से कहा, “मैं बिन्यामीन को लौटा कर लाऊंगा। उसका उत्तरदायित्व मुझ पर छोड़ दे। यदि मैं उसे लौटा कर नहीं लाया तो तू मेरे दोनों पुत्रों को मरवा देना।”

38. परन्तु याकूब ने कहा, “मैं अपने पुत्र को तुम्हारे साथ वहां नहीं जाने दूंगा। उस का बड़ा भाई मर चुका है और वही मेरी पत्नी राहेल की एकमात्र निशानी है। यदि यात्रा में उसे हानि हुई तो तुम मुझे वृद्धावस्था में शोकातुर मार डालोगे।

अध्याय 43

1. कनान में अकाल और भी अधिक भयंकर था।

2. जब याकूब के परिवार में अन्न समाप्त हो गया तब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, “मिस्र जाकर अपनों के लिए और अन्न ले आओ।”

3. परन्तु यहूदा ने उससे कहा, “जिस व्यक्ति ने हमें अन्न बेचा था, उसने गंभीर चेतावनी दी है, ‘यदि तुम अपने छोटे भाई के बिना आओगे तो मेरे सम्मुख नहीं आ पाओगे।’ अतः तू हमारे छोटे भाई को हमारे साथ भेज दे तो हम मिस्र जाकर तेरे लिए अन्न ला पायेंगे। यदि तू उसे नहीं भेजेगा तो हम वहां नहीं जायेंगे क्योंकि उस पुरूष ने हमसे कहा है, ‘यदि तुम्हारा छोटा भाई साथ न हो तो मेरे सामने नहीं आना।’”

4.

5.

6. याकूब ने उनसे कहा, “तुमने मेरे लिए यह संकट क्यों उत्पन्न किया कि उसे बता दिया कि तुम्हारा एक छोटा भाई भी है?”

7. उनमें से एक ने उत्तर दिया, “उसने हमारे और हमारे परिवार के बारे में पूरी पूछताछ की थी। उसने पूछा था, ‘क्या तुम्हारा पिता जीवित है? क्या तुम्हारे और भी भाई हैं? हमें तो उसके प्रश्नों के उत्तर देना ही थे। हमें क्या मालूम था कि वह कहेगा, “अगली बार जब तुम आओगे तो तुम्हारे साथ तुम्हारा भाई भी हो।”

8. तब यहूदा ने अपने पिता से कहा, “उसने हमारे साथ भेज दे कि हम जाएं और अन्न ले आएं कि हम और तू और हमारी सन्तान भूख से मर न जाएं

9. मैं उसका जामिन होता हूँ कि वह लौटकर आएगा। तू मुझे मेरी प्रतिज्ञा का उत्तरदायी ठहराना। यदि मैं उसे सुरक्षित लौटा नहीं लाता तो तू सदा मुझे दोषी ठहराना।

10. यदि हम विलम्ब न करते तो दो बार जाकर लौट आते।”

11. उनके पिता याकूब ने कहा, “यदि इसका कोई विकल्प नहीं तो जाओ, ऐसा ही करो। अपने बोरों में इस देश की सर्वोत्तम उपज का कुछ भाग अपने बोरों में लेते जाओ कि उस पुरुष के लिए भेंट होः बालसान, मधु, सुगन्ध द्रव्य, गन्धरस, पिस्ते और बादाम आदि। और जो पैसा तुम पिछली बार ले गए थे, उसका दो गुणा ले जाना क्योंकि जो पैसा तुम्हारे बोरों में था उसे लौटाना होगा। वह संभवतः मूल से आ गया है।

12.

13. अपने भाई को संग लेकर उस पुरुष के पास जाओ।

14. मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्व-शक्तिमान परमेश्वर उस पुरुष के मन में तुम्हारे लिए दया डाल दे कि वह तुम्हारे उस भाई को और बिन्यामीन को तुम्हारे साथ लौटकर आने दे और यदि मेरे पुत्र मुझसे छीन लिए गए तो होने दे।”

15. अतः वे वह सब भेंटे लेकर जिनके लिए याकूब ने आज्ञा दी थी और अन्न के मूल्य से दो गुणा अधिक पैसा लेकर और बिन्यामीन को भी साथ लेकर वे अतिशीघ्र मिस्र गए और यूसुफ के समक्ष उपस्थित हुए।

16. जब यूसुफ ने बिन्यामीन को देखा तो अपने घर के प्रबन्धक से कहा, “इन लोगों को मेरे घर ले जाओ और एक पशु वध करके भोजन तैयार करो क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वे मेरे साथ भोजन करें।” और उसने उसे समझाया कि उन्हें भोजन के लिए कैसे बैठाए।

17. उस सेवक ने वैसा ही किया जैसा यूसुफ ने कहा था। वह उन्हें यूसुफ के घर में ले गया।

18. वे डर गए क्योंकि वह उन्हें यूसुफ के घर के भीतर ले जा रहा था। वे सोच रहे थे, “वह हमें चांदी के कारण हमें वहाँ ले जा रहा है जो पिछली बार हमारे बोरों में थी। जब हम भोजन करने बैठें तब वह हमें पकड़ कर अपना दास बना ले और हमारे गदहे भी छीन ले।”

19. यूसुफ के घर के प्रबन्धक के साथ गए। जब वे घर के द्वार पर पहुंचे तब उनमें एक ने कहा,

20. “हे हमारे प्रभु जब हम पहली बार अन्न मोल लेने आए थे,

21. तब हमने सराय में पहुंचकर अपने बोरों को खोला तो देखकर चकित हुए कि हर एक के बारे में उसका रुपया ऊपर ही रखा है। इस कारण वह पैसा अपने साथ ले आए हैं और अन्न खरीदने के लिए भी चांदी ले आए हैं। हम नहीं जानते कि वह कैसे हमारे बोरों में था।

22.

23. उस पुरुष ने उनसे कहा, “तुम्हारा कुशल हो! डरो मत! त्ुमने जो चान्दी थी वह मुझे मिल चुकी है। तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसने तुम्हारे बोरों में उसे रख दिया होगा।” तब उसने शिमोन को कारावास से निकाल कर उनके पास पहुंचा दिया।

24. वह उन्हें यूसुफ के घर में ले गया और उन्हें पांव धोने के लिए पानी दिया तथा उनके गदहों के लिए भी चारा दिया।

25. उसने उनसे कहा कि वे यूसुफ के साथ भोजन करेंगे। अतः उन्होंने यूसुफ के लिए भेंट तैयार की कि जब वह आए तो उसे दें।

26. जब यूसुफ आया तब उन्होंने उसे वह भेंट दी और उसको दण्डवत् किया।

27. यूसुफ ने उनसे उनका कुशल क्षेम पूछा और उनके पिता के बारे में भी जानकारी प्राप्त की कि वह स्वस्थ है और क्या वह अब तक जीवित है।

28. उनमें से एक ने कहा, “हाँ तेरा दास, हमारा पिता जीवित है और वह भला चंगा है। उन्होंने एक बार और उसे दण्डवत् किया।

29. तब उसने बिन्यामीन को जो उसकी माता का दूसरा पुत्र था, देखा और उनसे पूछा, “क्या यही तुम्हारा वह छोटा भाई है जिसके बारे में तुमने मुझसे कहा था?” उन्होंने कहा, “हाँ”। तब उसने बिन्यामीन से कहा, “हे यूसुफ, मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुझ पर दया करे।”

30. यूसुफ अपने भाई के प्रति भावना से भर गया और उसे बोध हुआ कि वह अपने आपको रोने से रोक नहीं पाएगा इसलिए वह वहाँ से निकलकर अपने निजि कक्ष में चला गया और वहाँ रोया।

31. जब उसने अपने आँसू पोंछ लिए और अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण पा लिया तब उसने अपने सेवक से कहा, “भोजन परोस।”

32. मिस्र वासियों के लिए इब्रानियों के साथ भोजन करना घृणा की बात थी इसलिए सेवकों ने यूसुफ के लिए अलग और साथ बैठने वाले मिस्रियों के लिए अलग तथा यूसुफ के भाइयों के लिए अलग-अलग भोजन परोसा।

33. यूसुफ के भाइयों को यह देख आश्चय हुआ कि उनके बैठने के स्थान उनकी आयु के अनुसार रखे गए थे।

34. जब उन्हें यूसुफ के सामने से भोजन पहुंचाया गया तब बिन्यामीन को अन्य भाइयों से पाँच गुणा अधिक भोजन दिया गया। इस प्रकार उन्होंने यूसुफ के साथ भोजन किया और मदिरा पी और वे आनन्द से भर गए।

अध्याय 44.

1. जब वे घर लौटने लगे तब यूसुफ ने अपने प्रबन्धक से कहा, कि उनके बोरों को क्षमता से अधिक भर दें और उनकी चांदी भी उनके बोरों में रख दें।

2. और मेरा चान्दी का कटोरा सबसे छोटे भाई के बोरे में उसकी चान्दी के साथ रख दे।” अतः उसके सेवक ने वैसा ही किया।

3. अगले दिन सुबह वे अपने गदहों के साथ भेज दिए गए।

4. जब वे नगर से दूर निकल गए तब यूसुफ ने अपने प्रबन्धक से कहा, “उनका पीछा कर और जब तू उनको पकड़ ले तो उनसे कहना, “हमने तो तुम्हारे साथ भलाई की है परन्तु तुमने भलाई का बदला बुराई से क्यों दिया?

5. तुमने मेरे स्वामी का कटोरा चुरा लिया जिससे वह शकुन भी विचारता है। तुमने जो किया वह महान दुष्टता है।”

6. उनके पास पहुंचते ही यूसुफ के सेवक ने उनसे वही कहा जैसा यूसुफ ने उससे कहा था।

7. परन्तु उनमें से एक ने प्रति उत्तर में कहा, “हे हमारे प्रभु, तू ऐसा क्यों कहता है? हम तेरे दास हैं, भला हम ऐसा क्यों करेंगे।

8. हम तो कनान से वह चांदी भी लौटा लाए थे जो हमारे बोरों में पाई गई थी। अतः हम तेरे स्वामी का सोना-चांदी क्यों चुराएंगे?

9. यदि तुझे हम में से किसी के पास वह कटोरा मिले तो उसे मृत्यु-दण्ड दे और हमस ब तेरे दास हो जाएंगे।”

10. उसने कहा, “ठीक है, मैं वैसा ही करूंगा परन्तु जिसके पास कटोरा मिलेगा वह मारा नहीं जाएगा। वह दास बना लिया जाएगा और शेष तुम सब घर लौटने पाओगे।”

11. उन्होंने अपना-अपना बोरा गदहों पर से उतारा और खोला।

12. यूसुफ के सेवक ने उनके बोरों में वह कटोरा खोजना आरंभ किया। और बड़े से लेकर छोटे तक के बोरों की खोज की तो वह कटोरा बिन्यामीन के बारे में निकला। उसने उन्हें दिखाया कि वह कहाँ है। उसके भाइयों ने विस्मय के कारण अपने कपड़े फाड़े। उन्होंने बोरों को गदहों पर लादा और नगर को लौट आए।

13.

14. जब यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर पहुंचे तब यूसुफ वहीं था। यूसुफ के सेवक ने उसे पूरा वृत्तान्त सुनाया। सब भाई यूसुफ के सामने भूमि पर मुंह के बल गिर पड़े।

15. यूसुफ ने उनसे कहा, “तुमने ऐसा क्यों किया? क्या तुम नहीं जानते कि मेरे जैसा मनुष्य अज्ञात बातों को जान लेता है?”

16. यहूदा ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, हम क्या कह सकते हैं? हम अपने को कैसे निर्दोष सिद्ध कर सकते हैं? परमेश्वर ने हमें अपने वर्षों पुराने पाप का बदला दिया है। हम और जिसके पास कटोरा निकला है तेरे दास हो गए हैं।”

17. यूसुफ ने उनसे कहा, “नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। जिसके पास मेरा कटोरा निकला है वही मेरा दास होगा। तुम लोग अपने पिता के पास कुशल से जाओ।”

18. तब यहूदा यूसुफ के पास आया और कहने लगा, “हे प्रभु, मुझे कुछ कहने की अनुमति प्रदान करें। तू राजा के तुल्य है और मेरी हत्या की आज्ञा दे सकता है परन्तु तुझसे इस प्रकार बात करने के कारण अप्रसन्न न हो।

19. तूने पूछा था, “क्या तुम्हारा पिता अब भी जीवित है और तुम्हारा और कोई भाई भी है?”

20. हमने कहा था, “हाँ, हमारा पिता जीवित है और वह बहुत वृद्ध है और हमारे पिता की वृद्धावस्था का एक पुत्र भी है और उसका बड़ा भाई मर चुका है। अतः यह सबसे छोटा पुत्र उसकी माता की एकमात्र निशानी है जिससे हमारा पिता अत्यधिक प्रेम करता है।

21. तूने तब हमसे कहा, “अगली बार जब तुम आओ तो अपने छोटे भाई को अवश्य साथ लाना कि मैं उसे देखूं।”

22. परन्तु हमने कहा था “यह संभव नहीं क्योंकि वह बालक अपने पिता से पृथक नहीं किया जा सकता है। यदि वह पिता से पृथक किया गया तो उसका पिता दुःख से भर जाएगा।”

23. इस पर तूने कहा था, “यदि वह नहीं आया तो तुम मेरे समक्ष उपस्थित नहीं हो पाओगे।”

24. हमने लौटकर अपने पिता से तेरी बात कह दी थी।

25. कुछ समय बाद हमारे पिता ने कहा, “मिस्र जाकर अन्न ले आओ क्योंकि हमारा अन्न समाप्त हो रहा है।”

26. हमने उससे स्पष्ट कर दिया, ‘हम मिस्र नहीं जा सकते। हमें तेरे छोटे पुत्र को साथ ले जाना ही होगा। उसके बिना हम वहाँ अन्नदाता का दर्शन नहीं कर पाएंगे।’

27. हमारे पिता ने कहा, ‘तुम जानते हो कि मेरी पत्नी राहेत ने दो ही पुत्रों को जन्म दिया था जिनमें से एक विलोप हो गया। उसके लिए मैंने सोचा कि किसी वन पशु ने उसे फाड़ खाया है। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।’

28.

29. अब तुम इसे भी ले जाओ और उस पर कोई विपत्ति आ पड़े तो तुम मुझ वृद्ध को दुःख की मौत दे दोगे’

30. अतः मेरी बात का विश्वास का विश्वास कर कि मेरा पिता तब तक ही जीवित रहेगा जब तक उसका यह छोटा पुत्र जीवित है।

31. यदि वह देखे कि हम इसके बिना लौट आए हैं तो वह उसी पल मर जाएगा। हम उसे वृद्धावस्था में दुःख देकर मार डालेंगे।

32. मैंने इसकी सुरक्षा का वचन दिया है। मैंने अपने पिता से कहा है, “तू मुझसे मेरी प्रतिज्ञा का अपराधी ठहरना, यदि मैं इसे लौटा कर नहीं लाया। तू सदैव यही कहना कि मैं इसका दोषी हूँ।’

33. अतः ऐसी कृपा कर कि इस बालक के स्थान पर मैं तेरा दास होकर रहूं और यह अपने भाइयों के साथ मेरे पिता के पास पहुंचे।

34. इस बालक के बिना मैं अपने पिता के पास नहीं जा सकता। मैं अपने पिता का दुःख देख नहीं पाऊंगा।

अध्याय 45.

1. तब यूसुफ अपनी भावनाओं को और रोक नहीं पाया। वह अपने सेवकों के सामने रो नहीं सकता था। अतः उसने ऊंचे स्वर में कहा, “मेरे पास से सब को बाहर कर दो।” जब सब मिस्री बाहर चले गए तब यूसुफ ने अपने भाइयों पर अपने आप को प्रकट कर दिया।

2. चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था कि बाहर भी सब लोग सुन रहे थे। यहां तक कि राजा के महल में भी लोगों ने उसका रोना सुना।

3. यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ है। क्या हमारा पिता जीवित है? परन्तु उसके भाई उसकी बात सुन कर अवाक रह गए थे। वे भयभीत हो गए थे।

4. यूसुफ ने उनसे कहा, “मेरे पास आओ।” जब वे उसके पास आए तब यूसुफ ने उनसे कह, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं। मैं वहीं हूं जिसे तुमने व्यापारियों के हाथ बेच दिया था। मुझे लेकर मिस्र आ गए थे।

5. अब तुम मत पछताओ और अपने पर क्रोध न करो कि तुमने मुझे दास होने के लिए बेच दिया था। परमेश्वर ने मुझे तुमसे पहले यहां भेज दिया था कि तुम्हें अकाल में मरने से बचा ले।

6. दो वर्ष से इस देश में अकाल है और पांच वर्ष तक और रहेगा। इस समय में कोई भी फसल नहीं उगा पाएगा और कटनी भी नहीं होगी। परमेश्वर ने

7. तुम्हें भुखमरी से बचाने के लिए और तुम्हारी संतान को जीवित रखने के लिए ही मुझे यहां भेज दिया था।

8. अतः मुझे यहां भेजने वाले तुम नहीं परमेश्वर है। उसने मुझे राजा के पिता स्वरूप बना दिया है। मैं उसके महल का सर्वेसर्वा और संपूर्ण मिस्र पर प्रभु ठहरा दिया है।

9. अब मेरे पिता के पास अविलम्ब लौट जाओ और उससे कहो, ‘तेरा पुत्र यूसुफ यों कहता है, परमेश्वर ने मुझे संपूर्ण मिस्र देश का स्वामी बना दिया है। इसलिए तुरन्त मेरे पास आ जा।’

10. तू गोशेन देश में वास करेगा। तू और तेरी संतान और तेरे प्रपोत्र, तेरी भेड़ बकरियां, गाय बैल और तेरा सब कुछ मेरे पास रहेगा।

11. अकाल के पांच वर्ष और हैं और मैं सुनिश्चित करूंगा कि तुम्हारा पालन-पोषण किया जाए। यदि तू यहां नहीं आएगा तो तू और तेरा परिवार तथा तेरे सब दास-दासियां भूख से मर जायेंगे।’”

12. यदि तुम ध्यान से देखो और बिन्यामीन भी कि मैं जो तुम से बातें कर रहा हूं, वह वास्तव में यूसुफ ही है।

13. जा कर मेरे पिता को बताओ कि यहां मिस्र में मेरी कैसी प्रतिष्ठा है और जो कुछ तुमने देखा है उसका उससे वर्णन करो। मेरे पिता को लेकर अतिशीघ्र यहां आ जाओ।”

14. तब उसने अपने छोटे भाई बिन्यामीन के गले में बाहें डालीं और रोया और बिन्यामीन भी उसके गले लग कर रोया।

15. उसने अपने बड़े भाइयों को गाल पर चूमा और रोया। तदोपरान्त उसके भाइयों ने उससे बातें करना आरंभ कर दीं।

16. किसी ने राजा को समाचार दिया कि यूसुफ के भाई आए हैं, तो राजा और उसके सब कर्मचारी बहुत प्रसन्न हुए।

17. राजा ने यूसुफ से कहा, “अपने भाइयों से कह, ‘अपने पशुओं पर अन्न लाद कर कनान जाएं,

18. और तेरे पिता और उसके परिवार को लेकर यहां आ जाएं। मैं उन्हें मिस्र की सर्वोत्तम भूमि दूंगा और सब से उत्तम भोजन जो यहां का है, उन्हें दिया जाएगा।’

19. अपने भाइयों से यह भी कह, ‘मिस्र देश से गाड़ियां ले आओ और अपनी स्त्रियों और बच्चों को और अपने पिता को लेकर शीघ्र ही मिस्र आ जाओ।

20. अपनी धन संपदा की चिन्ता मत करो क्योंकि मिस्र की सर्वोत्तम वस्तुएं तुम्हारी होंगी। अतः तुम्हें कनान से कुछ भी लाने की आवश्यकता नहीं है।

21. याकूब के पुत्रों ने वैसा ही किया जैसी राजा की आज्ञा थी। यूसुफ ने उन्हें राजा की आज्ञा के अनुसार गाड़ियां और मार्ग के लिए भोजन दिया।

22. उसने उनमें से हर एक को नए वस्त्र दिए परन्तु बिन्यामीन को उसने पांच जोड़ी वस्त्र और चांदी के तीन सौ टुकड़े दिए।

23. अपने पिता के लिए उसने जो भेजा वह थाः मिस्र की सर्वोत्तम वस्तुओं से लदे दस गधे और अन्न, रोटी और मिस्र की यात्रा हेतु पिता के लिए भोजन।

24. तब उसने अपने भाइयों को यह कहते हुए विदा किया, “मार्ग में झगड़ा मत करना।”

25. अतः उसके भाई मिस्र से प्रस्थान करके अपने पिता के पास कनान पहुंचे।

26. उनमें से एक ने उससे कहा, “यूसुफ जीवित है और वह संपूर्ण मिस्र पर प्रभुता करता है। याकूब को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वह विमूढ़ हो गया था।

27. उन्होंने उसे वह सब बातें बताईं जो यूसुफ ने उनसे कहीं थीं। उसने वे गाड़ियां भी देखीं जो यूसुफ ने उसे लाने के लिए और उसके परिवार और सम्पदा वहन के लिए भेजी थीं, तब जा क रवह संभला।

28. उसने कहा, “बस मेरे लिए इतना ही बहुत है कि मेरा पुत्र यूसुफ जीवित है। मैं मरने से पहले उससे भेंट करने जाऊंगा।”

अध्याय 46

1. अतः याकूब अपना सब कुछ लेकर सपरिवार वहां से चल पड़ा। जब वह बीरशेबा पहुंचा तब उसने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाया।

2. उस रात परमेश्वर ने दर्शन देकर याकूब को पुकारा और कहा, “याकूब! हे याकूब!” याकूब ने उत्तर दिया, “क्या आज्ञा!”

3. परमेश्वर ने कहा, “मैं तेरे पिता का परमेश्वर हूं। मिस्र जाने से मत डर। मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा और वे वहां एक बड़ी जाति बन जायेंगे।

4. मैं तेरे साथ मिस्र जाऊंगा और उत्तर काल में तेरे वंशजों को कनान लौटा लाऊंगा। यूसुफ अपने हाथों से तेरी आंखें बन्द करेगा, जब तू मरेगा।”

5. तब याकूब ने बीरशेबा से कूच किया और उसके पुत्रों ने अपने पिता को, अपनी पत्नियों और बच्चों को राजा द्वारा भेजी गई गाड़ियों में सवार किया और चल पड़े।

6. और वे मिस्र पहुंचे। वे अपने साथ अपने सब पशु और कनान में संग्रहित धन संपदा भी ले आए।

7. याकूब इस प्रकार अपने पुत्र पुत्रियों, पोते पोतियों को साथ लेकर संपूर्ण परिवार सहित मिस्र आ गया।

8. याकूब के परिवार के सदस्य जो उसके साथ मिस्र गए उनके नामों की सूची हैः याकूब का बड़ा पुत्र रूबेनः

9. रूबेन के पुत्र हनोक, पललु, हेस्रोन और कर्मी

10. शिमोन और उसके पुत्र यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और एक कनानी स्त्री का पुत्र शाऊल।

11. लेवी और उसके पुत्र गेर्शोन, कहात और भरारी।

12. यहूदा और उसके पुत्र एर, ओनान, शेला, पेरेस और जेरह परन्तु एर और ओनान कनान में ही मर गए थे। यहूदा पुत्र पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल।

13. इस्साकार और उसके पुत्र तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन।

14. जबूलून, और उसके पुत्र सेरेद, एलोन और यहलेल।

15. याकूब के ये पुत्र पदन अराम में लिआः से जन्मे थे और उसकी पुत्री दीन भी थी। कुल पुत्र पुत्रियां तैंतीस थे।

16. गाद और उसके पुत्र सिय्योन हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी और अरेली।

17. आशेर और उसके पुत्र यिम्ना, यिश्बा, यिस्बी और बरीआ तथा उसकी पुत्री सेरह तथा बरीआ के पुत्र हेबेर और मल्कीएल।

18. ये सब याकूब और लिआः के पिता द्वारा लिआः को दी गई दासी से उत्पन्न हुए थे। ये कुल सोलह जन थे।

19. याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन।

20. यूसुफ के पुत्र एप्रैम और मनश्शे मिस्र नहीं गए क्योंकि उनका जन्म तो मिस्र ही में हुआ था। उनकी माता का नाम आसनत था जो याजक पोतीपेरा की पुत्री थी।

21. बिन्यामीन, और उसके पुत्र बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुपपीम और आर्द

22. याकूब से राहेल द्वारा उत्पन्न वंश यही था। ये सब चैदह जन थे।

23. दान का पुत्र हूशीम और नप्ताली के पुत्र

24. यहसेल, गूनी, सेसेर और शिल्लेम भी थे।

25. बिल्हा जिसे लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को दिया था उसके द्वारा याकूब से उत्पन्न वंश में ये सात जन ही थे।

26. याकूब का वंश जो उसके साथ मिस्र गया वह संख्या में कुल छियासठ था। उसके पुत्रों की पत्नियों की गणना नहीं की गई है।

27. याकूब और यूसुफ और यूसुफ के दोनों पुत्र जिनका जन्म मिस्र में हुआ था उनको भी जोड़े ंतो मिस्र में उसके और उसके पुत्रों के परिवार के सत्तर पुरूष मिस्र में थे।

28. याकूब ने यहूदा को आगे-आगे भेजा कि यूसुफ से भेंट करके गोशेन देश का मार्ग पूछे कि वे गोशेन कैसे पहुंचे। यहूदा के लौट आने पर वे गोशेन के लिए चले।

29. जब वे वहां पहुंचे तब यूसुफ ने अपना रथ तैयार करवाया और अपने पिता से भेंट करने के लिए गोशेन गया। जब यूसुफ वहां पहुंचा तब अपने पिता के गले से लिपट कर बहुत देर तक रोता रहा।

30. याकूब ने यूसुफ से कहा, “मैंने तुझे देख कर विश्वास किया कि तू जीवित है। अब मैं मरने के लिए तैयार हूं।”

31. यूसुफ ने अपने भाइयों और परिवार के सब सदस्यों से कहा, “मैं जाकर राजा से कहूंगा, ‘मेरे भाई और मेरा पिता और उनका कुटुम्ब कनान से मेरे पास आ गया है।

32. वे सब चरवाहे हैं। वे पशुपालन करते हैं। वे अपने साथ अपने सब पशु और जो कुछ था, लेकर आ गए हैं। अर्थात भेड़ बकरियां, गाय बैल आदि सब कुछ।

33. राजा तुम्हें बुला कर पूछे, ‘तुम्हारा व्यवसाय क्या है?’”

34. तो उससे कहना, “हमने तो अपनी युवावस्था से ही पशुपालन किया है क्योंकि हमारे पूर्वज भी ऐसा ही करते थे।’ तुम उससे ऐसा कहोगे तो वह तुम्हें गोशेन में रहने देगा। यूसुफ ने ऐसा इसलिए कहा कि मिस्री चरवाहों से घृणा करते थे।

अध्याय 47

1. यूसुफ अपने पांच भाइयों को लेकर राजा के पास गया और समाचार दिया, “मेरा पिता, मेरे भाई और उनके पशु और सब कुछ कनान देश से आ कर गोशेन में हैं।”

2. उसने अपने पांचों भाइयों को जिन्हें लेकर वह आया था, राजा के समक्ष उपस्थित किया।

3. राजा ने उनसे पूछा, “तुम्हारा व्यवसाय क्या है?” उन्होंने राजा को उत्तर दिया, “हम तो अपने पूर्वजों के समान चरवाहे हैं।”

4. उन्होंने राजा से यह भी कहा, “हम कुछ ही समय के लिए यहां रहने आए हैं क्योंकि कनान में भयंकर अकाल पड़ा है। इस कारण हमारे पशुओं के लिए वहां चारागाह नहीं रहे। अतः अपने दासों को गोशेन में रहने की अनुमति दे।”

5. राजा ने यूसुफ से कहा, “तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं।

6. संपूर्ण देश तेरे सामे है। उन्हें इस देश के सर्वोत्तम भाग में बसा दे। उन्हें गोशेन देश में रहने दे। यदि उनमें कोई पशुपालन में विशेष योग्यता रखता है तो उसे मेरे पशुओं पर अधिकारी ठहरा दे।”

7. तब यूसुफ अपने पिता को राजा के महल में लाया और राजा से उसकी भेंट कराई। याकूब ने उसे परमेश्वर के नाम में आशीर्वाद दिया।

8. राजा ने याकूब से पूछा, “तेरी आयु कितनी है?”

9. याकूब ने कहा, “मैं 130 वर्ष से परदेशी का सा जीवन जी रहा हूं। मेरी आयु मेरे पूर्वजों के तुल्य नहीं है। मेरे जीवन में कुछ समय दुख से भरा भी था। मेरे पूर्वज जितने दिन जीवित रहे मैं उतना भी नहीं हूं।”

10. याकूब ने एक बार और राजा को आशीर्वाद दिया और वहां से चला गया।

11. इस प्रकार यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र में रहने योग्य किया। राजा की आज्ञा के अनुसार यूसुफ ने उन्हें गोशेन का सर्वोत्तम भाग उन्हें दिया जिसे अब रामसेस नगर कहते हैं।

12. यूसुफ ने अपने पिता के संपूर्ण परिवार के लिए भोजन वस्तुओं की व्यवस्था कर दी। उसने उनकी संतानों की संख्या के अनुसार भोजन सामग्री देकर उनका पालन पोषण किया।

13. अकाल के कारण उस देश में भोजन नहीं था। भोजन की कमी के कारण मिस्र और कनान के लोग दुर्बल हो गए थे।

14. यूसुफ के पास मिस्र और कनान के लोगों का सारा पैसा आ गया था क्योंकि वह उन्हें अन्न बेचता था। उसने वह सब पैसा राजा के महल में पहुंचा दिया।

15. जब लोगों का पैसा समाप्त हो गया तब वे यूसुफ के पास आ कर कहने लगे, “हमें अन्न दे क्योंकि उसके बिना हम मर जायेंगे। हमारा सारा पैसा तो अन्न खरीदने में चला गया है। अब हमारे पास कुछ नहीं बचा है।”

16. यूसुफ ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास पैसा नहीं है तो मुझे अपने पशु दे दो। मैं तुम्हारे पशुओं के बदले में तुम्हें अन्न दे दूंगा।”

17. अतः वे यूसुफ के पास अपने पशु लेकर आ गए और यूसुफ ने उन पशुओं के बदले उन्हें अन्न दिया- उनके घोड़े, भेड़ बकरियां, गाय, बैल और गदहे।

18. उस वर्ष के समाप्त हो जाने पर वे फिर यूसुफ के पास आए और कहने लगे, “अब हमारे पास न तो पैसा है और न ही पशु हैं। हमारे पास केवल अपने शरीर और भूमि है।

19. यदि तू हमें अन्न नहीं देगा तो हम भूख के कारण मर जायेंगे। यदि तू हमें बीज नहीं देगा तो हमारी भूमि किस काम की। हमें और हमारी भूमि को लेकर हमें अन्न दे। इस प्रकार हम राजा के दास हो जायेंगे और हमारी भूमि का स्वामी वही होगा। हमें बीज भी दे दे कि हम भोजन उगाएं कि मर न जाएं और हमारी भूमि न उजड़ जाए।

20. अतः यूसुफ ने मिस्र के सब खेत राजा के लिए खरीद लिए। मिस्र के निवासियों ने, हर एक ने उसे अपने खेत बेच दिए क्योंकि अकाल भयंकर था और उनके पास अन्न खरीदने का और कोई उपाय नहीं था।

21. इस प्रकार सब खेत राजा के अपने हो गए। परिणामस्वरूप संपूर्ण मिस्र एक सीमा से दूसरी सीमा तक राजा का दास हो गया।

22. उसने पुरोहितों की भूमि नहीं खरीदी क्योंकि उनके लिए राजा की ओर से भोजन सामग्री पहुंचाई जाती थी। इस कारण उन्होंने अपने खेत नहीं बेचे थे।

23. यूसुफ ने उनसे कहा, “आज मैंने तुम्हें और तुम्हारे खेतों को राजा के लिए खरीद लिया है। इसलिए खेती करने को तुम्हें बीज दिया जाता है।

24. जब तुम फसल काटोगे तुम्हें उसका पांचवां भाग राजा को देना होगा। शेष फसल तुम्हारे लिए बीज बोने तथा अपनी संतान तथा कुटुम्ब के सदस्यों के पालन पोषण के लिए होगी।”

25. उन्होंने कहा, “तू ने हमारी जान बचाई है। हम तुझे प्रसन्न करना चाहते हैं। हम राजा के दास होंगे।”

26. अतः यूसुफ ने संपूर्ण मिस्र में एक नियम बना दिया कि जो भी फसल काटी जाए उसका पांचवां भाग राजा का होगा। यह नियम आज तक है। केवल पुरोहितों की भूमि राजा की नहीं थी।

27. इस प्रकार याकूब और उसका परिवार मिस्र के गोशेन प्रदेश में रहने लगे। वहां की भूमि उन्हें मिल गई। वहां उनकी संतान उत्पन्न हुई और परिणाम-स्वरूप वे संख्या में बहुत हो गए।

28. मिस्र जाने के बाद याकूब सत्रह वर्ष और जीवित रहा और उसकी कुल आयु 142 वर्ष की थी।

29. जब याकूब का अंतिम समय आ गया तब उसने यूसुफ को बुलाया और कहा, “यदि तू मुझसे प्रसन्न है तो अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे रख कर प्रतिज्ञा कर कि तू अपने पिता, मेरे प्रति निष्ठा निभाएगा और मेरे विश्वास को नहीं तोड़ेगा। तू मेरे मरने के बाद मुझे मिस्र में दफन नहीं करेगा।

30. जब मैं मर कर अपने पूर्वजों में जो पहले मर गए हैं, चला जाऊं तब तू मेरे पार्थिव शरीर को ले जाकर कनान देश में उनकी कब्र में रख देगा।” यूसुफ ने प्रतिज्ञा की, “मैं वहीं करूंगा जो तूने कहा है।”

31. याकूब ने उससे कहा, “वचन दे कि तू ऐसा ही करेगा।” अतः यूसुफ ने ऐसा ही करने की शपथ खाई। तब याकूब अपने बिस्तर में सिरहाने की ओर झुका और परमेश्वर से प्रार्थना की।

अध्याय 48

1. कुछ समय बाद किसी ने यूसुफ से कहा, “तेरा पिता बीमार है।” यह सुन कर यूसुफ मनश्शे और एप्रैम, अपने पुत्रों को लेकर पिता से भेंट करने गया।

2. किसी ने याकूब को यूसुफ के आगमन का समाचार दिया तो याकूब जो इस्राएल भी कहलाता था, प्रयास करके बिस्तर पर बैठ गया जबकि उसके लिए बैठना बहुत ही कठिन था।

3. याकूब ने यूसुफ से कहा, “जब मैं कनान के लूज नगर में था तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे दर्शन दिया और मुझे आशीर्वाद दिया।”

4. उसने मुझ से कहा, “मैं तुझे असंख्य संतान का पिता बनाऊंगा। तेरे वंशज असंख्य होंगे और वे अनेक जातियां उत्पन्न करेंगे। और मैं यह देश सदा के लिए उन्हें दे दूंगा।”

5. अब मैं यह मानता हूं कि तेरे ये दोनों पुत्र जिनका जन्म यहां, मिस्र में हुआ है, मेरी संतान हैं। एप्रैम और मनश्शे मेरे पुत्र होंगे और वे मेरे उत्तराधिकारी होंगे। ठीक वैसे ही जैसे रूबेन और शिमोन तथा अन्य पुत्र होंगे।

6. यदि इसके बाद भी तेरे और पुत्र जन्में तो वे मेरे पुत्र नहीं पोते होंगे। उन्हें भूमि आवंटन के समय अपने भाइयों के वंश में गिना जाएगा।

7. वर्षों पूर्व जब मैं पदन अराम से लौट कर आ रहा था तब तेरी माता राहेल का दुखद देहान्त कनान में हो गया था। उस समय हम मार्ग ही में थे जो एप्राता से अधिक दूर नहीं था। मैंने उसे एप्राता के मार्ग में ही दफन कर दिया। (एप्राता को अब बैतलहम कहते हैं।)

8. यूसुफ के साथ उसके पुत्रों को देख कर याकूब ने पूछा, “ये कौन हैं?” यूसुफ ने कहा, “ये मेरे पुत्र हैं जिन्हें परमेश्वर ने यहां मिस्र में मुझे दिया है।” याकूब ने कहा, “उन्हें मेरे पास ला कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं।”

9. वृद्धावस्था के कारण याकूब को स्पष्ट दिखाई नहीं देता था। अतः यूसुफ अपने पुत्रों को पिता के पास लाया और याकूब ने उन्हें चूमा और गले लगाया।

10. तब याकूब ने यूसुफ से कहा, “मुझे तो आशा ही नहीं थी कि तुझे फिर देख पाऊंगा। परन्तु देख परमेश्वर ने मुझे तेरे पुत्रों के साथ तुझे दिखा दिया।”

11. यूसुफ ने अपने पुत्रों को पिता के घुटनों पर से उठाया और मुंह के बल गिर कर दण्डवत् किया।

12. तब यूसुफ अपने दोनों पुत्रों को पिता के पास लाया, एप्रैम को याकूब के बाईं हाथ की ओर और मनश्शे को उसके दाहिने हाथ की ओर।

13. परन्तु याकूब ने वैसा नहीं किया। उसने अपना दाहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा जबकि वह छोटा पुत्र था और अपना बायां हाथ मनश्शे के सिर पर रखा यद्यपि मनश्शे बड़ा पुत्र था।

14. तब उसने यूसुफ और उसके पुत्रों को आशीर्वाद देते हुए कहा, “मेरे दादा, अब्राहम और मेरे पिता इसहाक ने परमेश्वर के आदेशानुसार जीवन व्यतीत किया है और उसी परमेश्वर ने मेरा आज तक मार्गदर्शन किया है। और मेरी सुधि ली है जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को लेकर चलता है और उनकी सुधि लेता है।

15. वही दूत मुझे सब बुराइयों से बचाता आया है। वही दूत इन दोनों को आशीष दे और ये मेरे और मेरे दादा अब्राहम और मेरे पिता इसहाक का वंश कहलाए। मैं प्रार्थना करता हूं कि उनके वंशज असंख्य होकर पृथ्वी के वारिस बनें।

16. यह देख कर कि उसके पिता ने अपना दाहिना हाथ मनश्शे के सिर पर नहीं एप्रैम के सिर पर रखा है, वह विचलित हुआ और उसने पिता का हाथ एप्रैम के सिर पर से हटा कर मनश्शे के सिर पर रखना चाहा।

17. यूसुफ ने याकूब से कहा, “पिता जिस पर तूने बायां हाथ रखा है, वह मेरा बड़ा पुत्र है, उस पर दाहिना हाथ रख।”

18. परन्तु उसके पिता ने इंकार करके कहा, “मेरे पुत्र, मैं जानता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं। मनश्शे के वंशज भी एक बड़ी जाति होंगे और प्रतिष्ठित भी होंगे। परन्तु उसके छोटे भाई के वंशज उनसे अधिक महान होंगे। उसके वंशजों से अनेक जातियां उत्पन्न होंगी।

19. अतः उसने उन दोनों को उस दिन आशीर्वाद दिया और कहा, “इस्राएल जाति में लोग तुम्हारे नाम लेकर लोगों को आशीर्वाद दिया करेंगे। वे कहेंगे, ‘हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के तुल्य बना दे।’” इस प्रकार याकूब ने प्रकट किया कि एप्रैम मनश्शे से अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध कर दिया।

20. तब याकूब ने यूसुफ से कहा, “मैं तो अब मरने पर हूं परन्तु मुझे विश्वास है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। एक दिन वह तुम्हारे वंशजों को उनके पूर्वजों के देश में अवश्य ले जाएगा।

21. तू जो अपने भाइयों से ऊपर है, मैं तुझे शकेम के प्रदेश में उपजाऊ पर्वतीय क्षेत्र देता हूं। मैंने वह क्षेत्र अमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के द्वारा ले लिया है।”

अध्याय 49

1. याकूब ने अपने सब पुत्रों को बुला कर कहा,

2. “मेरे पास एकत्र हो जाओ कि मैं भविष्य के बारे में तुम्हें बताऊं। हे मेरे पुत्रों, अपने पिता याकूब की बात सुनो।

3. रूबेन, तू मेरा सब से बड़ा पुत्र है। तू मेरी जवानी और यौवन का पुत्र है। जब मैं जवान हुआ तब तू मुझसे उत्पन्न हुआ था। तू मेरा पहलौठा है। तू मेरे शेष पुत्रों से अधिक अभिमानी और बलवन्त है।

4. परन्तु तू समुद्र की लहरों के समान उबलने वाला है। अतः तू अन्य भाइयों से अधिक महत्व का न ठहरेगा क्योंकि तू मेरे बिस्तर पर चढ़ कर मेरी रखैल के साथ सोया था। जिसके कारण मुझे, तेरे पिता को लज्जित होना पड़ा था।

5. शिमोन और लेवी, तुम दोनों भाइयों ने अपराधियों का सा व्यवहार किया है। तुम अपनी तलवारों से हिंसा करते हो।

6. तुम जब बुरी योजना बनाते हो तब मैं तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहता। मैं तुम्हारी सभाओं में सम्मान नहीं पाता हूं क्योंकि तुमने क्रोध में आ कर हत्याएं की हैं और अपने मनोरंजन के लिए बैलों को पंगु बनाया है।

7. परमेश्वर कहता है, “उनके क्रोध के लिए मैं उन्हें श्रापित ठहराता हूं क्योंकि क्रोध में आ कर वे निर्दयी हो गए थे। मैं उनके वंशजों को संपूर्ण इस्राएल में तितर-बितर कर दूंगा।’

8. यहूदा, तेरे बड़े भाई और छोटे भाई तेरी प्रशंसा करेंगे। वे तुझे दण्डवत् करेंगे क्योंकि तू अपने शत्रु को पूर्णतः पराजित करेगा।

9. यहूदा एक जवान सिंह के समान है जो पशु का मांस खा कर संतोष से अपनी मांद में आ गया है। वह एक सिंह के सदृश्य है जो शिकार खा कर विश्राम करता है और उसके पास जाने का साहस किसी में नहीं होता है।

10. यहूदा के वंशजों में सदैव एक शासक होगा और उनमें से हर एक राजदंड पकड़ेगा कि अपने अधिकार को प्रकट करे। वह तब तक राजदंड पकड़े रहेगा जब तक सब जातियां उसके अधिीन होकर उसे कर न दें।

11. उसके वंशजों की दाखलता में विपुल फसल उगेगी। जिसके परिणामस्वरूप वे उनमें गदहों को बांधने पर आपत्ति नहीं उठायेंगे और गदहे उसकी पत्तियां खायेंगे। उनकी दाख की फसल इतनी अधिक होगी कि वे उसके रस में अपने वस्त्र धोयेंगे। वे अपने बागे दाखरस में धोयेंगे जो रक्त के समान लाल रंग का होगा।

12. अधिक मद्यपान के कारण उनकी आंखें लाल रहेंगी परन्तु गायों का बहुत दूध पीने के कारण उनके दांत सफेद होंगे।

13. जबूलून, तेरे वंशज समुद्र तट पर वास करेंगे जहां जहाजों के लिए सुरक्षित बंदरगाह होंगे। उनका देश उत्तर दिशा में सीदोन के निकट पहुंचेगा।

14. इस्साकार, तेरे वंशज बलशाली यहूदा के तुल्य होंगे जो भेड़ों के झुंडों के मध्य लेटते हैं। और ऐसे थके हुए होते हैं कि खड़े नहीं हो पाते। वे देखेंगे कि

15. उनका विश्राम स्थान अच्छा है और उनका देश उन्हें मुग्ध कर देगा। परन्तु वे भारी बोझ उठाने के लिए झुकेंगे। और लोगों के लिए परिश्रम करने के लिए विवश किए जायेंगे।

16. दान, तेरा गोत्र छोटा तो होगा परन्तु उसके अगुवे इस्राएल के अन्य गोत्रों के अगुवों के समान उस पर प्रभुता करेंगे।

17. तेरे वंशज मार्ग के किनारे के विषैले सर्पों के समान होंगे। वे आने जाने वाले घोड़ों के सिरों को डसेंगे और उनके सवारों को गिरायेंगे जैसे जब घोड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा होता है।”

18. तब याकूब ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मैं तेरी बाट जोहता हूं कि तू मुझे मेरे बैरियों से बचाए।”

19. तब याकूब अपने पुत्रों को भविष्य बताता गया। उसने कहा, “गाद, तेरे गोत्र पर लुटेरे आक्रमण करेंगे परन्तु तेरा गोत्र उनका पीछा करके उन पर वार करेगा।

20. आशेर, तेरे वंशज स्वादिष्ट भोजन खायेंगे। वे राजा के लिए स्वादिष्ट भोजन उपजायेंगे।

21. नप्ताली, तेरे वंशज स्वतंत्र दौड़ने वाले हरिण के समान होंगे, वह हरिण जिसके बच्चे सुन्दर हैं।

22. यूसुफ तेरे वंशज असंख्य होंगे। उनकी संतति पानी के सोते के निकट लगाई गई दाखलता के फलों के तुल्य अनगिनत होगी, जिनकी शाखाएं दीवारों पर चढ़ती हैं।

23. उनके शत्रु उन पर घमासान करेंगे। और उनका पीछा करके उन पर तीर छोड़ेंगे परन्तु उनकी भुजायें मेरे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामथ्र्य से दृढ़ रहेंगी क्योंकि यहोवा एक चरवाहे की नाईं, जैसे वह अपनी भेड़ों की अगुआई और रक्षा करता है, मेरी अगुआई और रक्षा करता है। इस्राएल की प्रजा यहोवा से प्रार्थना करेगी कि उनकी रक्षा करे जैसे मनुष्य एक ऊंची चट्टान पर शरण लेते हैं।

24.

25. जिस परमेश्वर की मैं उपासना करता हूं, वह तेरे वंशजों के साथ होगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर उन्हें आकाश की वर्षा भेज कर आशिषित करेगा और उन्हें भूगर्भ का जल देगा। वह उन्हें अनेक संतान देकर पोषित भी करेगा।

26. मैं परमेश्वर से तुम्हारे लिए जो आशिषें मांगता हूं, वे महान हैं। वे सनातन पहाड़ियों से आने वाली आशिषों से वरन् अनादि पर्वतों की आशिषों से भी अधिक महान है। यूसुफ मैं प्रार्थना करता हूं कि ये आशिषें तुझे मिले क्योंकि तू अपने भाइयों का अगुआ है।

27. बिन्यामीन, तेरे वंशज खूंखार भेड़ियों के समान होंगे। सुबह के समय वे अपने शत्रुओं का ऐसा संहार करेंगे जैसे भेड़िये अपना शिकार फाड़ता है और शाम को वे अपने योद्धाओं में शत्रुओं से लाई गई लूट को बाटेंगे।

28. ये बारहों पुत्र इस्राएल के बारह गोत्रों के मूल पुरूष हैं। उनके पिता ने उन्हें आशीर्वाद देते समय प्रत्येक से उसके योग्य वचन कहे।

29. तब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, “मैं शीघ्र ही मर कर अपने मृतक पूर्वजों में चला जाऊंगा। मेरे पार्थिव शरीर को हित्ती एप्रोम से खरीदी गई गुफा में रखना जहां मेरे पूर्वज रखे गए हैं।

30. मकपेला का खेत मेम्रे के पूर्व में है जो कनान देश है। अब्राहम ने उसे एप्रोन से खरीदा था कि वह दफन स्थल हो।

31. वही अब्राहम और उसकी पत्नी को दफन किया गया था। वही मेरा पिता इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को रखा गया था। वही मैंने अपनी पत्नी लिआः के पार्थिव शरीर को रखा था।

32. वह खेत और वह गुफा हित्तियों से खरीदी गई थी। वही मैं चाहता हूं कि तुम मुझे भी दफन करो।”

33. अपने पुत्रों को निर्देश देकर वह अपने बिस्तर पर लेट गया और प्राण त्याग कर अपने पूर्वजों में चला गया।

अध्याय 50

1. यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिर कर रोया और उसे चूमा।

2. यूसुफ ने अपने सेवकों को जो शव दफन करने के लिए तैयार थे, आज्ञा दी कि उसके पिता के शव में सुगंध द्रव्य भरे।

3. याकूब के शव को सुगंध द्रव्यों से भरने में चालीस दिन लगे क्योंकि उस काम में चालीस दि नही लगते थे। मिस्री उसके लिए सत्तर दिन तक विलाप करते रहे। विलाप का समय पूरा हो जाने पर यूसुफ ने राजा के घराने के लोगों से कहा, “यदि तुम्हारे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो राजा तक मेरा विनती पहुंचा दो।

4.

5. मेरा पिता जब मरने पर था तब उसने मुझे शपथ खिलाई थी कि उस की पार्थिव देह को कनान में उस कब्र में रखूं जो उसने स्वयं तैयार की थी। अतः मुझे कनान जाकर अपने पिता को दफन करने दे। तब मैं लौट आऊंगा।”

6. राजा को जब यूसुफ का सन्देश मिला तब राजा ने कहा, “जाकर अपने पिता को दफन करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर।”

7. अतः यूसुफ अपने पिता को दफन करने कनान गया। उसके साथ राजा के कर्मचारी, राजा के परामर्शदाता और मिस्र के सब पुरनिये उसके साथ गए।

8. उसके परिवार के बच्चे और उनके पशु गोशेन में ही रहे। परन्तु यूसुफ का परिवार, उसके भाई और उसके पिता का परिवार उसके साथ गया।

9. रथों और घोड़ों पर सवार लोग भी उसके साथ गए। इस प्रकार जनसमूह बहुत बड़ा हो गया था।

10. वे यरदन नदी की पूर्वी और अताद तक पहुंचे। वहां एक खलिहान था जहां लोग अन्न दांवते थे। वहां उन्होंने याकूब के लिए यूसुफ ने सात दिन तक विलाप करवाया।

11. उनको विलाप करते देख कनानियों ने कहा, “यह मिस्रियों का कोई भारी विलाप प्रतीत होता है और उस स्थान का नाम आबेल मिस्रैम रखा गया है जिसका अर्थ है, ‘मिस्रियों का विलाप’”।

12. तब याकूब के पुत्रों ने उसकी आज्ञा के अनुसार ही सब कुछ किया।

13. उन्होंने यरदन नदी पार करके याकूब के पार्थिव शरीर को कनान में मकपेला के खेत की गुफा में जो मेम्रे नगर के पूर्व में थी, रख दिया। यही खेकत अब्राहम ने हित्ती एप्रोम से खरीदा था कि उसका दफन स्थल हो।

14. अपने पिता को दफन करने के बाद यूसुफ अपने भाइयों और उसके साथ कनान जाने वाले सब लोगों के साथ लौट आया।

15. याकूब के मरणोपरान्त यूसुफ के भाई चिन्तित होकर कहने लगे, “यदि यूसुफ के मन में हमारे लिए बुराई है और वह वर्षों पूर्व की हमारी बुराई का बदला लेना चाहे तो क्या होगा?”

16. उन्होंने यूसुफ के पास सन्देश भिजवाया, “हमारे पिता ने मरने से पहले हमसे कहा था, ‘यूसुफ से कहना, कृपया अपने भाइयों को तेरे साथ की गई बुराई की क्षमा प्रदान कर दे, तेरे विरूद्ध उनके उस भयानक पाप को क्योंकि उन्होंने तेरे साथ जो किया वह अनुचित था।” उनका सन्देश पा कर यूसुफ रोया।

17. तब उसके बड़े भाइयों ने आ कर उसे साष्टांग प्रणाम करके कहा, “कृपया सुन, हम तेरे दास हो कर रहेंगे।”

18. परन्तु यूसुफ ने उन्हें उत्तर दिया, “डरो मत क्योंकि दण्ड देने वाला परमेश्वर है। क्या मैं परमेश्वर हूं?”

19. तुम तो मेरे साथ बुराई ही करना चाहते थे परन्तु परमेश्वर ने उस में से भलाई उत्पन्न की। वह असंख्य लोगों को भूख से मरने से बचाना चाहता था और ऐसा ही हुआ। आज वे जीवित हैं।

20. अतः मैं फिर कहता हूं, मत डरो! मैं सुनिश्चित करूंगा कि तुम और तुम्हारी संतान के पास पर्याप्त भोजन हो।” इस प्रकार यूसुफ ने उन्हें विश्वास दिलाया।

21. यूसुफ अपने पिता के परिवार के साथ मिस्र में 110 वर्ष की आयु तक रहा।

22. वह एप्रैम के पुत्रों और पोतों को देखने तक जीवित रहा। मनश्शे के पुत्र माकीर की संतान यूसुफ के मरने से पूर्व उत्पन्न हो गई थी और उन्हें यूसुफ के वंशज माना गया।

23. एक दिन यूसुफ ने अपने बड़े भाइयों से कहा, “मैं तो मरने पर हूं परन्तु परमेश्वर निश्चय ही तुम्हारी सुधि लेगा। एक दिन वह तुम्हारे वंशजों को अवश्य यहां से निकाल कर कनान ले जाएगा। जिसकी प्रतिज्ञा उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी कि वह उन्हें देगा।”

24. तब यूसुफ ने उनसे कहा, “जब परमेश्वर इस योग्य बनाए तब तुम मेरा पार्थिव शरीर यहां से कनान ले जाना।” उसने अपने भाइयों को इस की शपथ खिलाई।

25. अतः यूसुफ 110 वर्ष की आयु में मिस्र में मर गया। उसके पार्थिव शरीर को सुगंध द्रव्यों से भर कर मिस्र में एक सन्दूक में रख दिया गया।